ॐ

हरि हर

कर्म जो सिध्धांत

Sant Baba Jairamdas Surya Mandir

GYAN SAGAR

480, Baba Jairamdasji Marg,
Sardarnagar, Ahmedabad-382475
E-mail : sj.jagyasi@gmail.com
www.gyansagar.org

अर्पण

"**कर्म जो सिध्धांत**" यह पवित्र पुस्तक 1008 परम श्रध्देय **संत श्री बाबा जयरामदासजी** की आत्मा दिनांक **27-4-2010** को ब्रह्मलीन होने के **चौदह** वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में सत्तगुरु के चरण कमलों में **'पुष्पांजलि'** के रूप में अर्पण की जाती है।



संत और ब्रह्म में भेद न जानो

संत सदैव ब्रह्म में लीन रहते है फिर भी जीवन के वार्तालाप से या उनके अनुभव से या उनके मन की स्थिति सांसारिक नमूने में जो भी उनकी **Sensitvity** थी, संवेदना थी, चेष्ठा थी, उस अनुभव व अपनी स्थिति को उन्हाने कलम द्वारा कुछ कापियों में लिख दिया था।

जो कुछ उन्होंने लिखा है वह उस समय भी सच था, आगे भी सच ही रहेगा । ऐसा हम अनुभव करते हैं । इसलिए उन हस्तलिखित प्रतियों में और उनके संग्रह में से हमने कुछ ज्ञान रुपी मोती चुनकर आप सतसंगियों के हित एवं भक्तों की आत्मिक उन्नति के लिए "**कर्म जो सिध्धांत**" के रूप में प्रसिद्ध करवाया है ।

आप प्रीतवान सज्जनो से यह नम्र निवेदन है कि इस पुस्तक को केवल पढ़ने के लिए नहीं किन्तु मनन करने के लिए उपयोग में लें और अपने सच्चिदानंद स्वरुप का दर्शन करें।

ॐ

हरि हर

।। सूर्य शरणम् ।।

कर्म जो सिद्धांत
THEORY OF KARMA

लेखक

हीराभाई ठक्कर

अनुवादक

हूंदराज बलवाणी

देवनागरी रूपांतर

सवीता केवलरामाणी

कर्म का ही अधिकारी तू, कभी फल का नहीं,
न हो कर्मफल में दृष्टि, न हो राग अकर्म में ।

मूल्य

समचित्त रहें, आनन्दमय रहें ।

अर्पण

कर्म जो सिद्धांत

जे रूप में

14 साल   27-4-2010

चिताउ : लेखक श्री हीराभाईं ठक्कर जे लिख्यल सभिनी किताबनि जा हक ऐं वास्ता अॻां वटि यानी, इन्हनि किताबनि जे प्रकाशक कुसुम प्रकाशन वटि महिफ़ूज़ आहिनि, इहा ॻाल्हि नोट कई वञे। हिन किताब जे मैटर जो उपयोग कंहिं बि नमूने, कंहिं बि स्वरूप में, कंहिं बि उदेश्य सां करण खां अॻु असांजी लिख्यल मंज़ूरी वठणु निहायत ज़रूरी आहे। कॉपीराईट जो भंगु करण वारे ते क़ानूनी कार्यवाही कई वेंदी ।
प्रकाशक

कर्म जो सिद्धांत

लेखक : हीराभाई ठक्कर

© कुसुम प्रकाशन
61-ए, नारायणनगर सोसायटी,
जयभिख्खू मार्ग, पालडी,
अहमदाबाद-370007
फोन : 2660959, 25501832

दो शब्द

प्रभू सुगम-से-सुगम

श्री अष्टावक्र जी की धीर-गम्भीर प्रसन्न वाणी प्रतिध्वनित हो उठी....

अरे राजा ! तू नित्य, शुद्ध-बुद्ध मुकत अद्वितीय चिद ब्रह्म है, देह को अपना आत्मा मानकर झूठ-मूठ भवाटवी में भटक रहा है । यह तो अज्ञान का जंगल है । तुझसे अन्य अमंगल है, लगा दे अज्ञान के जंगल में आग । न राग, न भाग, न संग्रह न त्याग, बस तू-ही-तू है ।

आदमी जो स्वप्न देखता है वह सत्य या जाग्रत में देखता है वह सत्य ?

स्वप्न जाग्रत दोनों ही जिस अधिष्ठान में अध्यस्त है जिस स्वयं प्रकाश, प्रकाश के द्वारा प्रकाशित है एक मात्र वही सत्य है ।

मन प्रभू की तरह अनंत है, प्रभु की माया भी अनंत है । प्रभू का आदि अंत नहीं मिल सकता ।

नाचने वाली जब ठुमुक-ठुमुक कर अपने पांव से ताल देने लगती है तो देखने वाला भी ताल पर झूमने लगता है । ऐसे ही यह मन जब घूमने लगता है, मन जब लाल होता है, पीला होता है, जब कड़वा होता है, जब मीठा होता है तब-तब तुम भी लाल पीले कड़वे मीठे हो जाते हो । तुम्हारे अन्दर तो कोई स्वाद नहीं था । जैसे शुद्ध जल का क्या स्वाद होता है ? शक्कर डाल दीया तो शर्बत हो गया और लींबू डाल दीया तो खट्टा हो गया, नमक डाल दिया तो नमकीन हो गया ।

तो नारायण ! तुम्हारे स्वरुप में ये सब-के-सब धर्माधर्म - सुख दुःख नमक की तरह डाले हुए है । खटाई की तरह सब डाले हुओ है । ये तुम्हारे स्वरुप में नहिं है, क्योंकि तुम ऐक मन वाले नहीं हो । तुम तो विभू हो ।

न कर्ताऽऽसि न भोक्ताऽऽसि, न कुछ किया, न कर रहे हो, न करोगे ।

सामी के श्लोक द्वारा

९६७. अण हूंदी बाज़ी, बाज़ीगर बरहालु थी
काथे पीरु फकीरु अमीर थिओ, काथे शेख, मुलां काज़ी
काथे गुरू गोसाई ज्ञानवान, काथे हज करे हाजी,
काथे राजा प्रजा चौधरी, काथे महतो मीयांजी,
काथे सूरबीरु दातारु थियो, काथे मिनिथ मोथाजी,
काथे चोरु चुगिलु ठगु मसिकिरो, काथे पंद्र खणे पाजी
काथे गणितीअ लेखे दुख में, काथे राजा में राजी
सामी जंहिं साजी, सो साखी पट पारि थी।

९६८. कुदरत तुंहिंजी कादिरा ड्रिसी मनु ठरे
काथे सुल्तिाननि सुलितानु थिअे, काथे दरि दरि भीख करे
काथे लख लुटाअे ड्रींह में, काथे कोड्रीअ काणि मरे
काथे सूरत जो सिरदारु थिअे, काथे मोहे जअुक जरे
काथे जोरावरु जालिमु थिअे, काथे ड्रिसी रूप ड्रुरे
काथे अलिबेलो अउधूत थिअे, काथे ग़ुणितीअ मंझि ग़ुरे
काथे ज्ञानु करे गुलज़ारु थी, काथे सुड्रिकी साह भरे
मन वाणीअ खूं परे, आहे सिफति तुंहिंजी साहिबां।

९७० सो पंडितु परिवानु, जो सारु ड्रिसे संसार में
जोग़ी जोति सरुप सां, लाअे सहज धियानु
सनासी संसो कढी, सम ड्रिसे भग़वानु
अपिरसु आतम फल में, नितु करे अिसनानु
अुदासी अंदर मां, सभु कढे गैर गुमान,
अवधूती आराम में, ब्रोले ब्रह्म ज्ञानु
आशिक नितु अजीब जे, दरिसन मंझि गलितानु
पाणु कढियो जंहिं पाण मूं, सो नांगो निरबाणु
मुलां मन मसीतिं में सो, अैन करे ईमानु

मिहर जनी जे मन में, सो दाता दअियावानु
रागी गावे दीप रागु, अनहद लाअे तानु
होको फेरे हक जो, सो साहिबु सुलितानु
शाहु चलाअे सच जी, लेखणि हक हकानु
सूर लड़े सिर खां परे, जीते सभु जहानु
सती समाअे सत में, पति ड्रिसे परिधानु
थिओ सभु अंधु अज्ञानु, समुझ रे सामी चअें।

(९७२) मनु मथुरा दिलि दुवारका, काअिया मंझि काशी
चेतनु वसे चित में, अलखु अभिनासी
पेही ड्रिसे पाण में, को विरिलो वेसासी
वञी थिअे वासी, बेहद बेगम पूरि जो ।

(११८७) नाहकु जीअु रूले, थो करिमनि जे कलिपत में
बिना भगति भगिवान जे, भरमु कीन भुले
तड्री गंढि खुले, जे सामी मिले सरुप सां

अनुकूल साधन अनिवार्य

बोले-महाराज ! आपने कहा और हमने सुना ! बात एक कानसे घुसी और दूसरे से निकल गयी । असल में जो लोग ज्ञान की कीमत नहीं चुकाते हैं, वे उसके मूल्य को समझनें में कतराते हैं । अभी एक महात्माने सुनाया कि एक दिन एक सज्जन कहीं जा रहे थे । ईश्वर के मन में मौज आयी तो उसके सामने आकर खड़ा हो गया और बोला कि देखो, मैं ईश्वर हूँ, तुम्हे दर्शन देने आया हूँ। तो उस आदमीने कहा कि तुम ईश्वर हो, इसमें क्या सबूत ? हम कैसे माने कि तुम ईश्वर हो ? उसके मनके यह ख्याल ही नहीं कि हमारे सामने ईश्वर खड़ा है, मैं ईश्वर के दर्शन कर रहा हूँ । भगवान्‌ने कहा कि मैं ईश्वर हूँ, चलो तुमको अभी वैकुण्ठ का दर्शन करा देते हैं । उसने कहा कि खूब हमको बनाते हो । तुम हमको दर्शन कहा करा सकते हो । कहीं मुफ्त में कोई दर्शन हो जाता है ? बड़ी भारि भक्ति करो, भगवान् का भजन करो । तब कहीं दर्शन होगा ।

भगवान् ने सोचा कि बात क्या है कि यह हमको ईश्वर नहीं मानता और

वैकुण्ठ दिखाना चाहते हैं तो देखना नहीं चाहता । उसने पूछा कि अच्छा, तुम हमको वैकुण्ठ ऐसे ही दिखाओगे कि कुछ कीमत देनी पड़ेगी। भगवान् ने कहा कि कीमत तो लेंगे भाई । यह जो टोपी तुम्हारे सिरपर है, वह हमको दे दो और हम वैकुण्ठ दिखा देंगे । वह बोला चल हट, तुम्हारे जैसे कई ठग आते-जाते हैं । हमारी टोपी लेकर वैकुण्ठ दिखावेगा । हमने हाथ जोड़ा ऐसे वैकुण्ठ को, जिसके लिए टोपी देनी पड़ती है । अब भगवान् बेचारे बड़े दुःखी हुए कि न तो यह हमको भगवान् मानता है और न ही हमारे कहे वैकुण्ठ देखना चाहता है और वेकुण्ठ देखने के लिए अपनी यह टोपी देने को तैयार नहीं है । तो भगवान् को आया गुस्सा और उन्होंने कहा कि आज तक तो हम बिना साधन-भजन के दिख जाते थे, मिल जाते थे । लेकिन आज से यह शाप दे देते है कि जब तक कोई साधन, भजन नहीं करेगा, तब तक न मेरा दर्शन होगा और न वैकुण्ठा का दर्शन होगा । आदमीने बड़ी भारी बेवकूफी की। मुफ्त में मिलनेवाली चीज को कीमती बना दिया।

तो, असलमें जो चीज तुम्हारा अपना आपा ही है, स्वयं तुम हो और भूलके कारण ऐसा मान रहे हो कि मैं पापी, मैं पुण्यात्मा, मैं नरक-स्वर्ग में जाने आनेवाला, मैं सुखी-दुःखी, मैं संसारी, मैं परिच्छिन्न। तो उस भूलको मिटाने के लिए कीमत चुकानी पड़ती है । असल में वह कीमत तुमने चुकायी है, इसलिए यह बात समझमें नहीं आती है। नहीं तो फूलकी पंखुड़ी मसल देना कठिन है, आँखो की पलक गिराना कठिन है, परन्तु, इस संसार से मुक्त हो जाना - यह कोई कठिन नहीं है ।

तेरी गली में आकर, खोये गये है दोनों ।
दिल तुझ को ढूंढता है, मैं दिल को ढूंढता हूं ॥
माया में फंसकर खो गयें हैं ।

भगवानने कहा - बस दो बात कर लो, पांच सात बात करने की जरूरत नहि है ।

न धर्म के दस लक्षण धारण करने की जरूरत है, न योग के आठ अंग के सेवन की आवश्यकता है । बस दो बात ध्यान में रखें । न आसन, न प्राणायाम, न यज्ञ, न मंदिर, न तीर्थ यात्रा, न व्रत, दो ही बात, कितना आसान ।

अेक तो मन मेरे पास रख दो, जैसे कोई जेवर लाकर में रखकर बेफिकर हो आते है, वैसे अपना मन भगवान में रख दो, बेफिकर हो जाओ।

अपनी बुद्धि को भगवान की बुद्धि में मिला दो, बिल्कुल व्यवहारिक है ।

बुद्धि मिलाना क्या है ? अेक दिन हमको कोई दुःख का अनुभव हो रहा था तो हमको गुरबाणी याद आ गयी ।

उसते होई नही कुछ बुरा और कहो किने कछु करा ।

उसके हाथो से कुछ बुरा होता नही, दुसरा कोई करने वाला है नहीं।

भगवान हमारे मन को मछली की तरह पकाते है। बंगाल में लोग बहुत जानते है । एक बार उसको गरम तवे पर डालते है फिर मठ्ठा छिड़क कर ठंडा करते है । फिर गरम करते हैं फिर सेंकते है फिर ठंडा करते है भगवान हमारे मन को मछली की तरह गरम-ठंडा करते हैं उस समय खुश या नाराज होने की जरूरत नही है क्युंकि वे स्वादु बना रहे हैं। मनको मधुर बना रहे है मन को सहिष्णुता लाने के लीये दुःख भेजते है, उल्लास करने के लिये सुख भेजते है । मन से मन मिला दो, बुद्धि से अपनी बुद्धि मिलाओ।

मन मिलाना क्या ? हर काम में अपने प्यारे का हाथ, हर स्थति में प्यारे का दर्शन, उसके दर्शन में उसके किये हुअे काम में दुःख का स्थान कहां ?

पहले भी उसी में निवास था लेकिन मन बुद्धि ले जाकर दूर फेंक देते है ।

मन बुद्धि मुझमें लाकर रख दोगे तो देखोगे कि तुम पहले से ही मुझ में निवास कर रहे हो ।

यह कब मालूम पड़ेगा, मन के आधान के पश्चात और बुद्धि के निवेशन के पश्चात, यह अनुभव होगा कि तुम मुझ में निवास कर रहे हो ।

व्यक्ति का निर्माण कर्म से, कारण से, उसके अनुरूप निमित होता है, उसके कारण होते है। पच्चभूत उपादान है, जीव के पूर्व संस्कार है, माता-पिता निमित है ।

अद्रश्य नियामक है भगवान

हम मां की ओर न देखें, पर हैं उनकी गोद में, सूर्य की ओर न देखें, पर देखते है उसकी रोशनी में, हवा को न देखें पर सांस लेते है उसमें। इसी प्रकार प्रत्येक शरीर में जो चेतन है, चैतन्य है वह अपने मूल भूत चैतन्य रूप को जाने या न जाने, वह उससे अलग होकर कभी रह नहीं सकता । वह देवताओं का देवता है । कान का कान है, आंख की आंख है, प्राण का प्राण है, मन का मन है, वाणी की वाणी है कहां है परमात्मा ?

हमको कहां ढूढने जाता है, हम तो तेरे दिल में है ।

हम माया को देखते है । माया को जिसकी सता है, उसे नहि देखते तो माया

में तो कर्म, फल, इत्यादि लागू होंगे ही।

अभ्यास योगने ततो ।

आदत डालो, क्या नहीं कर सकते ।

कर्तव्य पालन के लिए, अन्तःकरण शुद्धि के लिए, भगवान की प्रसन्नता के लिए और ज्ञान की (अनुभव की) प्राप्ति के लिए कर्म करें। यह सब भगवान के लिए करें। अच्छा काम करें हृदय में सन्तोष हो, प्रसन्नता हो और शान्ति हो। वहां कर्म और फल दो नही रहते। कर्म में तन्मय रहिये। फल को छोड़िये आयेगा या नहि ओयगा। वह अपनी शान्ति के लिए पर्याप्त है।

विश्वास है कि जिज्ञासुओं को परमपदकी प्राप्ति कराने में यह ग्रन्थ सहयोगी होगा। यह पुस्तक जिनके आर्थिक सहयोग से बाबाजी के कर कमलों में है । उन सबकी शुभ कामना पूरी हो।

इस पुस्तक के छपाने में जिन प्रेमीओने तन और मन से सेवा की है विशेष तो कुसुम प्रकाशन ने इस पुस्तक को प्रचार हेतु छापने की अनुमति दी है उन सबका आभारी हूं । सबका मंगल हो ।

विषय-सूचि

कर्म जो सिद्धांत
THEORY OF KARMA

(1) गहना कर्मणो गति :

भगुवान श्री कृष्ण पंहिंजे मुखारविंद सां गीता में चयो आहे त कर्मनि जी गति ड॒ाढी गूढ़ी आहे। श्री कृष्ण जे सखा सुदामाजीअ कर्मनि जी गूढता गा॒ईंदे चयो आहे त -

केतरी न आहे; गूढ़ी कर्मनि जी गति,
हिक ई गुरुअ जा हुआसूं विद्यार्थी,
हू थी वेठो पृथ्वीपती,
मूं वटि त हुई खाइण जी बि अणपूरति,
रांदियूं कयूंसीं गुरुकुल मे गड॒ ,
ढोयूंसीं लकिड़ियूं गुरुअ घर गड॒,
अज॒ु हू चढ़ी वेठो राज॒ सिंघासन,
मूं वटि न तड॒ो न चटाई आहे !

कर्मनि जी गति ड॒ाढ़ी टेड़ी आहे, छाकाण जो जीवन टेड़ो आहे। हिकु माण्हू सुखी छो ऐं ब्रियो माण्हू दुःखी छो ? वरी अजब जी गा॒ल्हि त इहा आहे त हरामख़ोर, लुच्चा, लोफ़र, कारे धन खे कठो करण वारा, रुश्वतख़ोर ड॒ाढा सुखी आहिनि, उन्हनि वटि बंगला, मोटर गाडि॒युनि जहिड़ा सुख जा सभु साधन ऐं अकीचार धन-दौलत मौजूद आहे। जड॒हिं न्याअ नीतीअ ऐं धर्म सां पवित्र जीवन जीअण वारा माण्हूं ड॒ाढा दुःखी आहिनि, उन्हीअ जो कारणु छा? इहो सभु जगु॒त में साफ़ ड॒िसण में अचे थो, तड॒हिं ईश्वर में असां जो विश्वासु न थो रहे। सृष्टिअ खे हलाइण लाइ कोई क़ाइदो, क़ानून आहे या न? या सभु अंधेर खातो हले थो? अहिड़ा ख़्याल असांजे मन में उथनि था। अहिड़ो सभु ड॒िसी असांखे इएं लगे॒ थो त ख़ुदा जे घर अंधेर आहे।

पर सची हक़ीक़त इहा आहे त ख़ुदा जे घर न देर आहे ऐं न अंधेर आहे। इन गा॒ल्हि खे चङे नमूने समझण लाइ 'कर्म' जे क़ाइदे जो चङीअ तरह

अभ्यास करणु ज़रुरी आहे।

(2) कर्म जो अटूट सिद्धांत

दुनिया में हर हिक खाते खे हलाइण वास्ते ऐं उनते ज़ाप्तो रखण लाइ क़ाइदा ऐं क़ानून ठहियल आहिनि। पुलीस खाते वास्ते पुलीस मेन्यूअल, पी.डब्ल्यू.डी. खाते वारनि लाइ संदनि ख़ास रसालो थीन्दो आहे। न्याउ खाते वारनि वास्ते इन्डियन पेनल कोड, रेवन्यू खाते वारनि वास्ते लेन्ड रेवन्यू कोड जहिड़ा क़ाइदा आहिनि। रेल्वे वारनि वास्ते पिण सख़्त क़ाइदा ठहियल आहिनि। अहिड़े नमूने सजी॒ सृष्टिअ ऐं अनेक ब्रह्मांडनि जे संचालन लाइ बि, जींअ त सिजु नेम सां उभरे ऐं लहे थो, पृथ्वी, तारा ऐं नक्षत्र नेम सां गति कनि था, बरसात चौमासे में नेम सां वसे थी। जगु॒त जी उत्पति, स्थिति ऐं लइ पूरे ढंग सां, क़ाइदे अनुसार थिए थी ऐं ब्रि॒यनि कमनि खे हलाइण लाइ जीअं इहे सभु अज़खुद पंहिंजो पाण कमु कंदा रहनि उन लाइ पिण क़ाइदो आहे, उहो क़ाइदो आहे 'कर्म' जो।

गोस्वामी तुलसीदासजिनि रामायण में लिखनि था त -

कर्म प्रधान विश्व रचि राखा
जो जस करइ सो तिस कल चाखा ।

हीअ सारी सृष्टि ''*कर्म जे क़ाइदे*' जे आधार ते तमाम सुठे नमूने हली रही आहे ऐं उनमें ज़रा पिण गड़बड़ न आहे !

हिन कर्म जे क़ाइदे जी हिक ख़ास ख़ूबी आहे जो हिन में कंहिं बि हंध थोड़ी बि रिआयत या बु॒ध-छोड़ न आहे। जगु॒त जे पालनहार श्री रामचन्द्र जे पिता राजा दशरथ खे पिण कर्म जे क़ाइदे अनुसार पुट जे विछोड़े में देहि छडि॒णी पई। उन वक़्त ख़ुद भगु॒वान श्री रामचन्द्रजी पिण इएं न चई सघिया त कर्म जे क़ाइदे में थोड़ो फेरफार करे मां पंहिंजे पिता खे 14 सालनि ताईं जीअदान थो डि॒यां। निर्गुण, निराकार ऐं शुद्ध ब्रह्म बि जड॒हिं सर्गुण साकार रुप धारण करे पृथ्वीअ ते अवतार वठे थो, तड॒हिं हिन खे पिण 'कर्म जे क़ाइदे' जो सख़्तीअ सां पालन करणो पवे थो। कर्म जे क़ाइदे में किथे बि देर या अंधेर न आहे। इन में थोरो बि फेरफार या सिफ़ारिश या कंहिं बि क़िस्म जो अपवाद कोन्हे, इहा हिन क़ाइदे जी ख़ास ख़ूबी आहे।

हाणे अचो त हिन कर्म जे क़ाइदे खे थोरो खोले पढ़ी डि॒सूं।

(3) कर्म माना छा ?

सादी-सिधी ऐं सरल भाषा में या थोरे में कर्म जे लाइ चवणो हुजे त, कर्म माना 'क्रिया'। असां जेको बि कमु कयूं था, उनखे कर्म चयो वञे थो। खाइणु, पीअणु, सिनान करणु, हलणु, बिहणु, नौकरी धंधो करणु, सोचणु, बुधणु, डि॒सणु, सिंघणु, साहु खणणु, ज॒मणु-मरणु वग़ैरह तमाम शारीरिक ऐं मानसिक क्रिया खे कर्म थो कोठिजे ! इन कर्म जा मुख्य टे भाङा आहिनि : (1) क्रियमाण कर्म (2) संचित कर्म (3) प्रारब्ध कर्म ।

(4) क्रियमाण कर्म

सुबह जो उथण खां राति तांई, सूमर खां रविवार तांई, पहिरीं तारीख़ खां आख़िरी तारीख़ तांई, कारकत खां असूअ तांई, जन्म खां मरण तांईं, इन्सान जेके कर्म करे थो, उहे सभु क्रियमाण कर्म आहिन। अहिड़ा जेके बि क्रियमाण कर्म असां कयूं था, उहे अवस फलु डे॒ई पोइ शांत थियनि था। फलु डि॒यण खां सवाइ उहे शांत न था थियनि।

क्रियमाण कर्म फल भोगा॒ए पोइ शांत थिये थो। मिसाल तोर : असां खे उञ लगी॒, असां पाणी पीतोसीं, पाणी पीअण जो कर्म कयोसीं ऐं उञ लही वेई, यानी कर्म फलु डे॒ई पोइ शांत थियो। अहिड़े नमूने असांखे बुख लगी॒ त असां खाधो खाधो, बुख लही वेई। खाइण जो कर्म कयोसीं त बुख लही वेई। कर्म फलु डे॒ई शांत थियो। अहिड़े नमूने तमाम क्रियमाण कर्म फल भोगा॒ए पोइ शांत थियनि था। असां कंहिं खे गारि डि॒नी। उन मोट में असां खे चमाट हंई । इन जो मतलब त कर्म जो फलु मिली वियो। कर्म फलु डे॒ई शांत थी वियो। इन तरह तमाम क्रियमाण कर्म फल भोगा॒ए पोइ शांत थियन था।

(5) संचित कर्म

केतिराई क्रियमाण कर्म अहिड़ा आहिनि जेके तुरंत फलु न डीं॒दा आहिनि। उन्हनि जे फल मिलण में वक्तु लगे॒ थो, अहिड़नि कर्मनि जे फल खे पचण में देर लगे॒ थी। इनकरे तेसितांई उहे फल कचा रहनि था, ऐं उहे कर्म जेसितांई फल न डि॒यनि तेसितांईं असां जे खाते में जमउ थियनि था। तंहिंकरे अहिड़नि कर्मनि खे 'संचित कर्म' चयो वञे थो। मिसाल तोर : असां अजु॒ इमितिहान

जो पेपर करे आयासूं ऐं महिने खां पोइ उनजो नतीजो ज़ाहिर थियो। इमितिहान जे पेपर लिखण जो फलु असां खे महिने खां पोइ मिल्यो। अजु सुबह जो असां जुलाब वर्तो। चइनि-पंजनि कलाकनि खां पोइ असां खे उनजो असरु थियो। असां पंहिंजीअ जुवानीअ में पंहिंजे माता-पिता खे दुःखी कयो। असां जे पुट असां खे बुढ़ापे में दुखी कयो । असां हिन जनम में संगीत सिखण लाइ ख़ूब महिनत कई, ईंदड़ जनम में असां जनमु वठंदे ई मधुर संगीत ग़ाए सघन्दासूं। अहिड़े नमूने केतिराई क्रियमाण कर्म जल्दी फलु न था ड्रियनि, पर जंहिं वक्ति पचनि तंहिं वक्ति फल ड्रियनि था। तेसिताईं इहे संचित कर्मनि में जमउ रहनि था। बाझिरीअ जो फ़सुल तैयार थियण में 90 ड्रींहं लग़न्दा आहिनि, कणिक 120 ड्रींहनि मे तैयार थीन्दी आहे। जंहिं क़िस्म जो क्रियमाण कर्म जो ब्रिजु तहिड़ो उनखे तैयार थियण में घटि-वधि वक्तु लग़े थो। अहिड़ा अनेक संचित कर्म इन्सान जे खाते में जमउ थींदा रहंदा आहिनि। मिसाल तोर : असां अजु सज़े ड्रींहं में 1000 हज़ार क्रियमाण कर्म कया। उनमां 900 क्रियमाण कर्म अहिड़ा आहिनि जेके तुरंत ई फलु ड्रेई शांत थी वञनि था, पर 100 कर्म अहिड़ा आहिनि जिनखे फल ड्रियण में वक्तु लग़े थो। उहे कर्म संचित कर्मनि में जमउ थियनि था। अहिड़े नमूने अजु असां जे खाते में 100 कर्म जमउ थिया। वरी ब्रिए ड्रींहुं असां जा 125 कर्म संचित कर्मनि में जमउ थिया। उनमां 75 कर्म पका ऐं फलु ड्रेई शांत थिया। चोथें ड्रींहुं वरी ब्रिया 80 कर्म संचित थिया। इन्हिअ रीत खाते में जमहु थींदे थींदे हफ़ते में कुल 300 कर्म संचित थिया ऐं महिने जी आख़िर में 1100 कर्म संचित कर्मनि में गडु थी विया ऐं साल जे पछाड़ीअ तांईं इहे वधी 1400 कर्म संचित कर्मनि में जमउ थिया।

अहिड़े नमूने ज़िंदगीअ जे अंत में 8 लख कर्म संचित थिया। ब्रिए जनम में वरी ब्रिया 7 लख कर्म संचित थिया । अहिड़े नमूने अनादिकाल खां अनेक जन्मनि जा बेशुमार संचित कर्मनि जा ढेर, ज़णु त पहाड़ खड़ा थी वञनि था। इहे संचित कर्म हिन जनम में या इनखां पोइ अनेक जनमनि तांईं कंहिं वक्ति बि पची करे फल ड्रियण खां पोइ शांत थियनि था। इन्सान जेकड्हिं इन बाबत गंभीरता सां सोचे त उनजी दिल दहिलजी वञे, पर अविद्या सां घिरियलु इन्सान कड्हिं बि इन बाबत सोचे नथो।

राजा दशरथ जो छड़ियलु तीर नदीअ किनारे ते पाणी भरींदे श्रवणकुमार खे लगो ऐं श्रवणकुमार हिन फ़ानी दुनिया मां चालाणो कयो। जुवान पुट जे विछोड़े में उनजा माता-पिता डाढा दुःखी थिया ऐं उन्हनि राजा दशरथ खे शाप (सराप) डिनो त तुंहिंजो मौत बि असां वांगुर पुट जे विछोड़े में थीन्दो, पर राजा दशरथ जो इहो क्रियमाण कर्म उन वक्ति खेसि फलु डेई न सघियो, छाकाण त उन वक्ति राजा दशरथ खे औलाद ई कान थी हुई। तंहिंकरे इहो क्रियमाण कर्म फल डेई शांत न थी सघियो, पर उहो कर्म संचित कर्म में जमउ थियो। घणे वक्त खां पोइ राजा खे चार पुट ज़ावा। उहे वडा थिया ऐं उन्हनि जूं शादियूं पिण थियूं। जडहिं राजा दशरथ राम खे राजुगादीअ ते वेहारण जो फ़ैसलो कयो, तडहिं श्रवणकुमार जे मौत वारो संचित कर्म फल डियण लाइ तैयार थियो। अहिड़े शुभ डींहं ते राजा खे मौत रुपी फल प्राप्त कराए ई शांत थियो। उनमें हिक पल जी बि देर न थी। ख़ुद भगवान रामचन्द्रजी बि पंहिंजे पिता खे 14 सालनि जो जीअदान न डेई सघियो। काल जे अगियां राम जी सुजाणप पिण कम न आई। शुद्ध चेतन ब्रह्म पाण सगुण साकार रुप में हिन पृथ्वीअ ते अवतार वर्तो, उन रामचन्द्रजीअ जे पेरनि जी धूड़ि सां पथ्थर रुप में पियल अहिल्या वरी स्त्री रुप धारण कयो। जंहिंजे चरननि जी धूड़ि सां पथ्थर खे जीअदान मिल्यो। अहिड़ो परब्रह्म परमेश्वर पाण जेकडहिं पंहिंजे पिता खे 14 साल जीअदान डिए त उन खां केरु पुछण वारो हो त तो ही छा कयो ? ऐं छो कयो ? पर न, कर्म जे क़ाइदे जो तमाम सुठे नमूने पालन करण में कंहिंजी बि सुजाणप न थी हले। इनजी माना इहा थी त ख़ुदा जे घर देर पिण न आहे ऐं अंधेर पिण न आहे। अहिड़ो कर्म जो सख़्त (कड़क) क़ायदो आहे।

राजा धृतराष्ट्र जा 100 पुट हिक ई महिल मरी विया। तडहिं राजा श्री कृष्ण खां पूछियो त मूं पंहिंजे जीवन में अहिड़ो को भयानक पापु न कयो आहे जंहिंजो फल मूंखे अहिड़ो मिले। तडहिं भगवान श्री कृष्ण हिन जा अगुला जन्म डिसी हिन खे अहिड़ी दिव्य दृष्टि डिनी त उनमें हू पंहिंजा कयल कर्म डिसी सघे। तडहिं राजा धृतराष्ट्र लगभग 50 जनम अगुते वञी डिठो त उन जनम में हीउ हिकु शिकारी हो। कंहिं वक्त हिन वण ते वेठल पखियुन खे

पकिड़ण लाइ ॼार खे बाहि ॾेई वण ते उछिलायो। केतरा पखी उतां उॾामी विया पर बाहि जी तपत जे करे अंधा थी विया ऐं बाक़ी 100 पखी सड़ी रख थी विया। इहो क्रियमाण कर्म 50 जनमनि ताईं संचित कर्मनि में जमउ रहियो। हाणे राजा जे ॿियनि पुञनि जे करे हिन जनम में उनखे 100 पुट ॼावा त उन वक्त जो संचित कर्म हाणे फलु ॾियण लाइ तैयार थियो। इन कारण खेसि हिन जनम में अंधो थियणो पियो ऐं उन जा 100 पुट बि मरी विया। धृतराष्ट्र खे 100 पुट प्राप्त थियनि एतिरा पुञ कर्म जॾहिं गॾु थियनि तेसिताईं कर्मनि राह पिए ॾिठी ऐं संचित कर्मनि में उहो क्रियमाण कर्म में वेही रहियो, पर जॾहिं उहो वक्तु आयो त बिना हिक पल जी बि देर करे उन संचित कर्मनि फलु ॾिनो ऐं पोइ ई शांत थियो। तंहिंकरे वरी बि इएं चइजे त ख़ुदा जे घर अंधेर न आहे ऐं देर बि न आहे।

कंहिं माण्हूअ खे असां 500 रुपया लहिणंदा हुजूं ऐं हू असांखे रुपया वापस न करे त असां हुन ते दीवानी कोर्ट में दावा कंदासीं पोइ कोर्ट असां खे क़र्ज़दार खां रुपया वसूल करण लाइ हुकमनामो कढी ॾींदी, बैलिफ़ (कमदार) उन हुकमनामे जी तामील करण वास्ते क़र्ज़दार जे घर वञे पर क़र्ज़दार वटि ॾियण लाइ कुझु बि न हुजे त कमदार हुकमनामे जी तामील त करे पर वसूल कुछु बि न थो करे सघे। कुझु अरसे खां पोइ जेकॾहिं हू क़र्ज़दार ॿियो को धंधो करे ऐं हिकु हज़ार रुपया कमाए करे जमउ करे त पोइ तुरंत ई कमदार हुकमनामो खणी अची उनखां 500 रुपया वसूल करे सघे थो। अहिड़े ई नमूने 'क्रियमाण कर्म' संचित कर्मनि में जमउ पिया हुजनि था ऐं भविष्य में जॾहिं सुठो मोक़ो अचे थो त उहे कर्म पची करे फल ॾेई पोइ शांत थियनि था। इन नमूने क्रियमाण कर्म जेके फलु ॾेई शांत न थिया हुजनि तिनि खे संचित कर्म करे सॾिजे थो।

(6) प्रारब्ध कर्म

संचित कर्म पची करे फलु ॾियण वास्ते तैयार थियनि त उनखे 'प्रारब्ध कर्म' चयो वञे थो।

अनादीकाल खां, जन्म जन्मान्तरनि खां अणगुण्या संचित कर्म जीवन में जमउ थिया पिया आहिनि। जेकॾहिं उन्हनि संचित कर्मनि खे गॾु कयूं त

हिकु हिमालय परबत तैयार थी वञे। इन्हनि मां जेके संचित कर्म पची करे फलु ड्रियण वास्ते तैयार थियनि था, उन्हनि प्रारब्ध कर्मनि खे भोगुण लाइ जीव खे उन मूजिबु जनम मिले थो ऐं सजी हयातीअ में उहे प्रारब्ध कर्मनि खे भोगुण खां पोइ ई शरीर शांत थिए थो। उन प्रारब्ध कर्मनि खे भोगुण वास्ते जीव खे उन मुताबिक देह तंदुरस्ती, बीमारी, स्त्री, पुटु, धीअ ऐं सुख-दुःख वग़ैरह मिलनि था। इहे प्रारब्ध कर्म भोगुण खां सवाइ देह खे छुटकारो न थो मिले ।

बुढापे में अधरंग (लकवो) थी पवे ऐं ड्रहनि सालनि तांईं बिस्तरे में पियो इन्सान लोड़े ऐं भगुवान खे ब्रुाड्राए त, " हे भगुवान हाणे कड्रहिं मुंहिंजो छुटकारो थींदो ? मुंहिंजी अंतिम यात्रा कड्रहिं निकिरंदी ?'त वारंवार इंएं चवण सां इन्सान खे मौत न थो अचे, जेसितांई हू प्रारब्ध कर्म भोगे न थो, तेसितांई उनजो छुटकारो नथो थिए। जंहिं वक्ति प्रारब्ध कर्म पूरा थियनि था, उन वक्ति पुटु मुंहं में गंगाजल विझे त उहो बि नक रस्ते ब्राहिर निकरी वञे थो, हिकु फुड़ो पाणी पीअण लाइ या हिकु साहु वधीक खणण लाइ बि हीउ जीव तरसी न थो सघे, उनजा प्राण हिन चोले जो त्यागु करे वञनि था। तंहिं खां पोइ जमउ थियल ब्रिया संचित कर्म जेके फलु ड्रियण लाइ तैयार थिया आहिनि उन्हनि प्रारब्ध कर्मनि खे भोगुण लाइ उन मुताबिक़ जीव खे देह धारण करणी पवे थी। उन प्रारब्ध कर्मनि जे भोगुण लाइ उनखे अहिड़ा माता-पिता, पत्नी, औलाद मिलनि था, ऐं वरी पूरी हयाती जीव उन्हनि प्रारब्ध कर्मनि खे भोगे थो। तंहिंखां पोइ उनजो छुटकारो थिए थो। अहिड़े नमूने जीव खे पंहिंजनि कर्मनि अनुसार वारंवार अनेक जूणियुन में जनम वठिणो थो पवे ऐं कर्म भोगुण खां पोइ वरी मरणो थो पवे। अहिड़े नमूने जीव जनम मरण जे चकर में भिटकंदो थो रहे, पर उनखे मोक्ष न थो मिले! श्री शंकराचार्य चयो आहे त-

पुनरपि जननं, पुनरपि मरागं,
पुनरपि जननि जठरे शयनम् ।
इह संसारे खलु दुस्तारे,
कृपया पारे पाहि मुरारे ॥

अहिड़े नमूने जीव अनेक जूणियुनि में भिटिकंदो थो रहे। हू नवां क्रियमाण कर्म करे थो। उन्हनि मां अनेक कर्म संचित कर्म में जमउ थींदा था रहनि ऐं वक्त गुजरंदे वरी उहे पची करे फल डियण लाइ प्रारब्ध कर्मनि जे रुप में जीव जे साम्हूं अची बीहनि था ऐं अनंतकाल ताईं जीव जो मोक्ष थियणु न था डियनि, तंहिंकरे हिन संसार सागर खे महाजार चयो वञे थो।

(7) कयल कर्म भोगुणा ई पवनि था।

कर्मु कंदे ई उन जो फलु भोगुण खां सवाइ छुटकारो न आहे। कयल कर्म जो फलु न भोगुण लाइ इन्सानजी का बि सियाणप न थी हले । कर्म फलु भोगाइण खां सवाइ शांत न थो थिए। तन्हां जेतिरो उनखां परे भजुण जी कोशिश कंदा हू ओतिरो ई तन्हां जे पोयां पोयां फिरंदो ई रहंदो, ऐं फल भोगाइण खां पोइ ई शांत थींदो। जेकदहिं तन्हां डाढा सियाणा आहियो ऐं हिन दुनिया जी कोर्ट मां तन्हां खे को सियाणो वकील बचाए बि वठे पर ईश्वर जी कोर्ट मां तन्हां जो छुटकारो न थी सघंदो, भगवान जे कोर्ट में न त कंहिं वकील जो बहस हलंदो ऐं न कहिंजी सिफ़ारिश हलंदी।

घणा साल अगु जी गाल्हि आहे। अहमदाबाद में हिकु वडो विद्वान सेशन जजु रहंदो हो। हू नागर ब्राह्मण हो ऐं पको वेदांती (वेदनि जो ज्ञाणू) हो कर्मनि जे क़ाइदे जी गूढ़ी ज्ञाण रखंदो हो। साबरमती नदीअ जे पासे रहंदो हो।

हिक डींहु सुबह जो सवेल ऊंदहि में हू खुले मैदान में नित्यकर्म करण ला वेठो हो। तंहिं वक्ति हिकु माण्हू सहिकंदो उतां लंघियो जिते जजु वेठो हो उन माण्हूअ जे पुठियां बियो माण्हू बि तेज़ डुकंदो आयो ऐं ज़ोर सां खंज उछिलाए अगिएं माण्हूअ खे हंयो। उहो उते ई दुरकी पियो ऐं मरी वियो हीउ दृश्य जज उते वेठे डिठो। ख़ूनी ख़ून करे उतां भजी वियो। उन ख़ूनीअ जज तमाम सुठे नमूने सुञाणे वर्तो हो।

पंहिंजो कमु पूरो करे जजु घर आयो, पर उन इहा गाल्हि कंहिंसां बि कई, छाकाण जो इहो ख़ून जो केस आख़िर त उनजी कोर्ट में ई हलिणो ह पोइ पुलीस इन केस जी पुछा कई। इन पुछा करण में छः महिना गुज़

विया। आख़िर ख़ून जो केस दाख़िल थियो। सेशन जज उन ड्रीहुं जंहिं माण्हूअ खे खून कंदे पंहिंजियुनि अखियुनि सां ड्रिठो हो सो त हुओ ई कोन। उनजे बदिरां ब्रिए कंहिं भले माण्हूअ खे गुनहगार जे रुप में अटिकायो वियो हो।

पोइ त केस हल्यो। पुलीस अहिड़ा त ज़ोरदार साक्षी ऐं सबूत हाज़िर कया जो हू बेक़सूर गुनहगार साबित थियो। सेशन जज खे इहा पक हुई त ही माण्हू ख़ूनी न आहे, छाकाण जो हुन पंहिंजियुनि अखियूनि सां उन ख़ूनीअ खे ख़ून कंदे ड्रिठो हो। पर साक्षियुनि ऐं सबूतनि जे आधार ते ई जज खे जजमेन्ट ड्रियणी पई। इन में जज जो पंहिंजो अनुभव कम न करे सघियो। तंहिंकरे कूड़े तुहिमतदार (गुनहगार) खे पकनि सबूतनि जे आधार ते जज खे मजबूर थी करे उन बेक़सूर खे क़सूरवार ठहिराए उनखे फासीअ जी सज़ा ड्रियणी पवे अहिड़ा हालात पैदा थिया। पर हीउ जज वेदनि जो ज्राणू हो, हिन वीचार कयो त जेको सचो ख़ूनी आहे सो त बची थो वञे ऐं हीउ निर्दोष (बेक़सूर) माण्हू मार्यो वेंदो, तंहिंकरे कोर्ट में ख़ून जी सज़ा जो हुकुम बुधाइण खां अग्रु जज उन मुजिरिम खे पंहिंजे रूम में सड्डु करायो।

तुहिमतदार जज जे साम्हूं रोअण लग्रो ऐं चयांइ त मां बिल्कुल निर्दोष आहियां। मूं ख़ून न कयो आहे। मां अजायो मार्यो थो वञां। छाकाण त पुलीस खे सचो ख़ूनी हथि न लग्रो आहे। पुलीस मुंहिंजो अग्रिलो अहिवाल जाचे उन आधार ते मूंखे पकड़े मुंहिंजे ख़िलाफ़ सबूत ऐं शाहिदियूं हथि करे कोर्ट में उन्हनि जे आधार ते मूंखे ख़ूनी साबित कयो वियो आहे।

सेशन जज चयुसि त मां इहा सज्री हक़ीक़त चङे नमूने ज्राणा थो। सचे ख़ूनीअ खे मूं पंहिंजियुनि अखियुनि सां ख़ून कंदे ड्रिठो आहे। उनखे मां सुज्राणा थो। तूं बराबर निर्दोष आहीं, सो मां ज्राणा थो। पर मुंहिंजी जजमेन्ट (फ़ैसले) मां क़ाइदे अनुसार इहा ग्राल्हि चई नथो सघां छो जो क़ाइदो सबूतनि जो मुहिताज आहे। सबूत सभेई तुंहिंजे ख़िलाफ़ आहिनि। तंहिंकरे मां तोखे क़ाइदे अनुसार ख़ूनी क़रार करे फासीअ जी सज़ा जो हुकुम ड्रींदुसि। पर ईश्वर जेके कर्मनि जा क़ाइदा ठाहिया आहिनि उन्हनि में का भुल त न थी थिए न ? उनजी पक करण लाइ मां तोखां अकेलाइप में हिकु सुवाल पुछणु चाहियां थो। उमेद थो रखां त तूं मूंखे उनजो सही जवाब ड्रींदें। हाणे मौत

तुंहिंजे साम्हू आहे तंहिंकरे कूड़ न ग॒ाल्हिाइजांइ। मुंहिंजो सुवाल इहो आहे त तो पंहिंजी ज़िंदगीअ में कड॒हिं कंहिंजो ख़ून कयो आहे छा ?

हिन बेक़सूर तुहिमतदार रोअंदे ईश्वर खे हाज़िर ज॒ाणी चयो त मूं कुछ वक्त अगु ब॒ ख़ून कया हुआ। कोर्ट में केस बि हलिया हुआ, पर उन वक्ति मूं क़ाबिल वकीलु कयो हो ऐं पुलीस खे ख़ूब पैसा बि खाराया हुआ। इन सबब मां निर्दोष साबित थियुसि ऐं मूंखे काबि सज़ा न थी। पर हिन केस में त मां सच में निर्दोष आहियां त बि सभु सबूत मुंहिंजे ख़िलाफ़ आहिनि ऐं मां बेक़सूर मार्यो थो वञां।

सेशन जज खे विश्वास थी वियो त ईश्वर जे बणायल कर्म जे क़ाइदे में का बि ग़फ़िलत न थी आहे। पहिरियां ब॒ ख़ून करण खां पोइ बि हिन जे पुण्य (पुञ) कर्मनि जे परताप करे क्रियमाण कर्मनि फल ड॒ियण में देर कई ऐं उहे कर्म संचित कर्मनि में जमउ थी विया। हाणे जड॒हिं हिन जा संचित पुञ ख़तम थिया त उन पहिरियां जेके ब॒ खून कया उन जे फल सरूप उहो संचित कर्म पची वियो ऐं हिन केस में निर्दोष हुअण ते बि गुनहगार साबित थियो ऐं उनखे फासीअ जी सज़ा थी वेई।

कर्म जे क़ाइदे में वकील या जज जी क़ाब्लियत या सिफ़ारिश नथी हले। जेकड॒हिं पुञ जमउ हुजनि या क्रियमाण कर्मनि खे पचण में देर लग॒े त उन वक्ति दुनिया जी नज़र में हू गुनहगार हूंदे बि निर्दोष साबित थो थिए। पर जेकड॒हिं संचित कर्म पची करे प्रारब्ध रूप में साम्हूं अचनि त तंहिं वक्ति ई फलु ड॒ेई पोइ शांत थियनि था।

इन करे कर्म करण खां अगु हज़ार दफ़ा सोचणु घुरिजे। कर्म करण खां पोइ उनजे फल खां बचण लाइ अजाई कोशिश न करणु घुरिजे। पर जड॒हिं उहे कर्म पची करे प्रारब्ध रूप में साम्हूं अचनि त सीनो ताणे करे ख़ुशीअ ख़ुशीअ सां भोग॒ण घुरिजनि, न त खिलंदे खिलंदे कयल पाप रोअंदे-रोअंदे भोग॒णा ई पवनि था।

राजा परीक्षित महाज्ञानी, विद्वान ऐं संस्कारी जीवात्मा हो। उनखां हिकु वड॒ो पापु थी वियो हो। क्रोध जे वसि थी हिन हिक बेगुनाह ऋषिअ जे गले में मुअलु नांगु विझी छड॒ियो। जंहिं वक्ति संदसि क्रोध शांत थियो त हू ड॒ाढो

पछिताइण लगो त मूंखां क्रोध में ही छा थी वियो ऐं हू दर्द भरिए आवाज़ में पुकारण लगो...

अहो मया नीचमनार्यवत् कृतं,
निरागसि ब्रह्मण गूढते जसि।

अड़े! मूंखां ही वडो नीच कर्म थी वियो, हिन कयल क्रियमाण कर्म जे फल सरुप तक्षक नांग जे डंगण सां संदसि मौत जो प्रारब्ध बणजी वियो। पर उन कयल कर्म जे फल मां छुटण लाइ हिन न त कंहिंजी सिफ़ारिश लगाई ऐं न त पंहिंजी सत्ता जो उपयोग कयो। हुन भगवान खे अहिड़ी प्रार्थना न कई त हे भगवान श्री कृष्ण तव्हां ऐं मुंहिंजो डाडो अर्जन बुई पाण में मारोट-पुफाट थियव, तंहिंखां सवाइ तव्हां बुई सालो-भेणिवियो बि हुआ। इन हिसाब सां तव्हां मुंहिंजा वेझे में वेझा अज़ीज़ (रिश्तेदार) थिया। मुंहिंजो डाडो अर्जन तव्हां जो प्यारो भगत हुओ ऐं तव्हां उनजो रथु पिण हलायो हो, तंहिंखां सवाइ गर्भ अवस्था में तव्हां मुंहिंजी रक्षा कई हुई। तव्हां सर्व शक्तिमान आहियो। तंहिंकरे तव्हां मुंहिंजी सिफ़ारिश कयो त मूंखे हिन गुनाह जी सज़ा न मिले। मुंहिंजी ज़िंदगीअ में मूं ही पहिरियों अपराध कयो आहे। हाणे मां क़सम थो खावां त अगते कडहिं बि मां को अपराधु न कंदुसि ऐं एतिरो दान-पुञ कंदुसि जो तव्हीं सभु ख़ुश थी वेंदा।

सिफ़ारिश, मिटी-माइटी या रिश्वतख़ोरी, कर्म जे क़ाइदे जे अमल में अटक विझी न सघंदियूं आहिनि। परीक्षित वडो राजा हुओ, संदसि राज जी सुप्रीम कोर्ट बि खेसि सज़ा डेई न थे सघी, उन हूंदे बि परीक्षित पाण पंहिंजो डोहु क़बूल कयो ऐं सख़्त में सख़्त सज़ा जी घुर कई। राजा परिक्षित पंहिंजे मथां तुहिमत धरींदे कहिड़ीअ सज़ा जी घुर थो करे इहो महर्षी व्यास हेठींअ रीत लिख्यो आहे -

अहो मया नीचमनार्यवत कृतं
निरागसि ब्रह्मणि गूढतेजसि ।

"अड़े मूं त हिक निर्दोष ब्राह्मण सां तमाम नीच में नीच कर्म कयो आहे। मुंहिंजे कयल क्रियकाम कर्म जे नतीजे तोर मुंहिंजे कयल पाप खे मिटाइण वास्ते लाज़मी आहे त मूंखे सख़्त में सख़्त सज़ा मिलणु घुरजे। जीअं अगते

हली मूंखे या मुंहिंजो मिसाल ड॒ेई ब्रिए कंहिंखे बि अहिड़े नीच कर्म करण जी हिमथ न थिए।

ध्रुवं ततो मे कृतदेवहेलनात
दुरत्ययं व्यसनं नातिदीर्घात।
तदस्तु कामं त्वद्यनिष्कृताय मे
यथा न कुर्याम पुनरेवमद्धा ।।

मुंहिंजीअ सज़ा तोर उन ब्राह्मण ऋषिअ जे क्रोध रुपी अगनीअ में मुंहिंजो समूरो राज॒, ब॒लु (ताक़त) खज़ानो, भंडारो वग़ैरह हिकदम सड़ी ख़ाक थी वञे जीअं वरी ब॒ेहर ब्राह्मण देवताउनि, गौ माता जे खिलाफ़ अहिड़ी बुद्धि मूंखे न अचे। परीक्षित पंहिंजे क्रियमाण कर्म जे फल सरुप प्रारब्ध खे ख़ुशीअ सां भोगि॒यो ऐं मोक्ष प्राप्त कयो। हिन कयल कर्म खां बचण वास्ते कंहिं बि क़िस्म जी सिफ़ारिश जो उपयोग न कयो। जेकड॒हिं करे बि हां त बि कयल कर्म जो फलु साणस का बि रिआयत न करे हा।

(8) धर्मीअ जे घर धाड़, अधर्मीअ जे घर शादमाना।

कर्म जो अटल सिद्धांत आहे ''जेकी पोखियो सो लुणो'', ''जहिड़ो कयो तहिड़ो पायो'', ''जहिड़ी करणी तहिड़ी भरणी'' पर असां सभनी जो इहो अनुभव आहे ऐं डि॒सी रह्या आहियूं त जेको माण्हू न्याउ नीती ऐं धर्म सां हले थो सो हिन संसार में दुःखी डि॒सण में थो अचे ऐं जेको अधर्मी, अनीतीअ वारो, काला बाजारी ऐं रिश्वतख़ोर आहे, तहिं वटि सुख जा सभु साधन आहिनि। इहो डि॒सी ईश्वर मां असांजी श्रद्धा, विश्वास घटिजण लगे॒ थो। असां महसूस कयूं था त कर्म जे क़ाइदे में ज़रुर किथे का गड़ब॒ड़ आहे। सुख हासिल करण जी इच्छा रखी असीं बि अनीतीअ ऐं अधर्म सां पैसा गडु॒ करण लगि॒ था वञूं। हीअ हिक वडी॒ भुल ऐं बेसमझी आहे। पुञ जो फलु सदाईं सुखु ऐं पाप जो फल हमेशह दुःखु ई आहे। तंहिं हूंदे बि कोई इन्सान पाप कंदे बि सुख माणिदों हुजे त उहो सुखु उनजे अगि॒ले पुञ कर्मनि जो आहे। हिन वक्ति जेकी हू पाप कर्म करे रहियो आहे तंहिंजो फलु न आहे, पर संदसि अगि॒ला कयल पुञ कर्म जेकी संचित कर्मनि में जमउ पिया हुअसि से पची प्रारब्ध बणजी खेसि सुख ड॒ेई रहिया आहिनि ऐं चालू पाप कर्मनि खे फल डि॒यण में

देर थिए थी। जंहिं वक्त उनजा पुञ कर्म ख़तम थींदा त यकदम संदसि कयल पाप कर्म जो फलु प्रारब्ध बणजी उनखे दुःख भोगाईंदा। जेसिताईं अगुलनि जनमनि जा पुञ कर्म फल डिंदा आहिनि, तेसिताईं हिन वक्त कयल पाप कर्म पंहिंजो फलु कीन भोगाए सघन्दा आहिनि, पर उहो संचित कर्मनि में जमउ थीन्दा आहिनि ऐं वक्त सिर पची प्रारब्ध बणिजी अची पंहिंजे फल जो मज़ो वठाइनि।

पुण्य पूर्वके जमा अभी, सुझते हैं तुफान,
किंतु वह खर्ची खूटते ही आगे खड़ा है कठिन मैदान।
जीव मान मान रे मान,
अभी भी क्यों नहीं आयी सान ।
कबीरा तेरा पुण्य का जब तक है भंडार,
तब तक अवगुण माफ़ है करो गुनाह हजार.

हिन वक्ति न्याअ, नीतीअ सां हलंदड़ माण्हू असां खे दुःखी डिसण में थो अचे, उन जो सबब संदसि अगुले जनमनि जा कयल पाप कर्म जेके संचित कर्मनि में जमउ थिया हुआ से पची प्रारब्ध बणजी उनखे दुःख डेई रहिया आहिनि इन करे ई हू दुःखी डिसण में अचे थो। हाणे न्याअ ऐं नीतीअ वारा कयल कर्म अगियां हली जंहिं वक्ति पचन्दा उन वक्ति उहे प्रारब्ध बणजी सुख जे रुप ज़रुर अची खेसि सुखी कंदा। इनकरे कर्म जे क़ाइदे मां श्रद्धा घटाए न्याअ ऐं नीतीअ जो रस्तो छडे, अन्याअ ऐं अनीतीअ जी हलति बिल्कुल न हलणु घुरिजे ।

गुोठनि में अनाज भरे रखण जूं वडियूं वडियूं गुंदियूं थींदियूं आहिनि। जिन में अनाजु विझी रखिबो आहे। गुंदिअ जे तरे मे हेठ हिकु वडो सोराख़ थींदो आहे जंहिंमां घुरिज आहर वक्ति बि वक्ति अनाजु कढिबो आहे। गुंदिअ में पहिरियां कणिक ऐं उनजे मथां जूअर विधल आहे! हाणे जडहिं हेठां सोराख़ मां अनु कढंदासीं त कणिक निकिरंदी पर जुअर न निकिरंदी । अहिड़े नमूने मां पंहिंजी गुंदिअ में पहिरियांई जूअर ऐं मथां कणिक विझां त पोइ अनु कढण वक्ति हेठां जूअर निकिरंदी, कणिक न निकिरंदी, जेसितांई तव्हां जी गुंदिअ मां कणिक ऐं मुंहिंजीअ गुंदिअ मां जूअर ख़लास न थींदी। इनमें

कार्वाड़ि करणजी ज़रूरत न आहे। तन्हांजी गुंदिअ मां जंहिं वक्त कणिक ख़लास थी वेंदी त पोइ तन्हां खे जूअर ई खाइणी पवंदी इन ग़ाल्हि में कोबि शकु न आहे। मुंहिंजी गुंदिअ मां जूअर ख़लास थियण खां पोइ मां कणिक ई खाईन्दुसि पर तेसितांई मूंखे थोरो धीरजु, ईश्वर ते भरोसो, कर्म जे क़ाइदे में विश्वासु रखणु घुरिजे।

(9) कर्म, फलु डेई ई शांत थींदो आहे।

समझो त हिक माण्हूअ को पाप कर्म कयो। उनजे फल सरुप उनखे हिकु डींहुं बुखियो रहणु प्रारब्ध मुक़रर थियो। हीउ मुक़रर थियलु प्रारब्ध खेसि कंहिं बि हालत में कीन छडींदो, प्रारब्ध भोग़ाइण खां सवाइ संचित कर्म कडहिं बि शांत न थींदो। हाणे जेकडहिं हू सतोगुणी जीव हूंदो त एकादशीअ जो उपवास रखी सजो डिहाड़ो नारायण जो सिमिरण करे उपवास कंदो ऐं इन नमूने पंहिंजो प्रारब्ध भोगे वठंदो।

जेकडहिं रजोगुणी जीव हूंदो त संदसि घरवारी ऐं ॿार बीमार पवनि त हू उन्हनि खे डॉक्टर वटि वठी वञे जेसितांई डॉक्टर उन्हनि खे डिसे ऐं दवा डे तेसितांई हुन खे उते वेही रहिणो पियुसि। इंए कंदे 12 थी विया पोइ हू बुखियो ई आफ़ीस में वञी नोकरीअ ते चढ़ियो। रात जो जडहिं घर आयो त घरवारी ऐं ॿारनि जी तबीयत वधीक ख़राब डिसी उन्हनि जी सेवा कयाईं ऐं बुखियो ई सुम्ही पियो। इन नमूने हिकु डींहुं बुखिए रहण जो प्रारब्ध हू भोगे वेठो।

जेकडहिं तमोगुणी जीव हूंदो त मंझंदि जो रसोई खाइण वक्ति वेहंदे ई चवंदो त अजु रसोईअ में स्वाद न आहे ऐं थाल्ही फिटी करे घरवारीअ सां झग़ड़ो करे, मारकुट करे आफ़ीस वेंदो हल्यो। उते बि सभिनी सां पियो विढ़ंदो। रात जो घर अची वरी ज़ाल ऐं ॿारनि सां झेड़ो करे बुख्यो ई सुम्हंदो। इनरीत हीउ पंहिंजो प्रारब्ध भोग़ीन्दो।

सतोगुणी जीव उपवास रखी हिकु डींहुं बुखिए रहण जो प्रारब्ध भोगे, गडो गडु थोरो पुञु पिण कमाए थो वठे, जंहिं मां संदसि क्रियमाण कर्म ठहे थो।

रजोगुणी जीव घरवारी ऐं ॿारनि जी सेवा करे हिकु डींहु बुख्यो रही पंहिंजो प्रारब्ध भोगे थो। हीउ न त को पुञु थो कमाए ऐं न त को पापु ई करे थो।

तमोगुणी जीव क्रोध में भरजी घर में किटि किटि करे सजो ड्रींहुं बुख्यो रही पंहिंजो प्रारब्ध भोगे थो ऐं नओं पाप कर्म करे थो ऐं उनमां संदसि नओं क्रियमाण कर्म ठहे थो। जेको अग्रियां हली पची प्रारब्ध बणजी संदसि साम्हूं अची बीहंदो।

क्रियमाण कर्म पची फल सरुप प्रारब्ध बणजी साम्हूं अचे त इहो भोग्रिणो ई पवे थो। इन रीत सतोगुणी रजोगुणी ऐं तमोगुणी जीवन जो प्रारब्ध भोग्रुण जी रीत अलग्र अलग्र थिए थी।

समझो त मूं हिकु पवित्र क्रियमाण कर्म कयो। जंहिंजे फल सरुप मूंखे 500 रुपयनि मिलण जो प्रारब्ध बणजे। मां जेसिताई इहो प्रारब्ध न भोग्रियां, तेसिताईं इहे 500 रुपया मुंहिंजे पोयां फिरंदा ई रहंदा। मूंखे 500 रुपया मिलनि पोइ ई प्रारब्ध इहो फलु भोग्राए शांत थींदो।

हिक ड्रींहुं रात जो 12 बजे को माण्हू मुंहिंजे घर अची ब्राहिरां दरवाज़ो खड़काए मूंखे निंड मां उथारे चवे त हीउ 500 रुपया वठो, मुंहिंजे पीउ जी ज़मीन मां मुंहिंजो भाउ जो अधु हिसो कढी सज्री ज़मीन मुंहिंजे नाले दाख़िल करे ड्रियो। हाणे जेकड्रहिं मां तमोगुणी जीव हूंदसि त 500 रुपया रिश्वत वठी संदसि ग़ैरक़ायदे कयल घुर मूजिब खेसि फ़ाइदो करे ड्रींदुसि ऐं उन नमूने मां पंहिंजो प्रारब्ध 500 रुपयनि मिलण जो भोगे वठंदुसि ऐं मुंहिंजो पहिरियों कयलु क्रियमाण कर्म प्रारब्ध बणजी मूंखे 500 रुपया ड्रियारे ख़तम थी वेंदो, पर उनसां गड्डु हिकु नओं खोटो क्रियमाण कर्म पैदा थी वेंदो जेको अग्रुते हली पची प्रारब्ध बणजी हिक ड्रींहु अवस मुंहिंजे साम्हूं अची बीहन्दो ऐं मूंखे उनजो फलु ज़रुर भोग्रिणो पवंदो।

जेकड्रहिं मां तमोगुणी जीव न हुंदुसि त 500 रुपया रिश्वत वठण खां साफ़ु इन्कार करे छड्रींदुसि। उन हूंदे बि हीउ 500 रुपया कंहिं बि रस्ते मूंखे मिलण खां सवाइ मुंहिंजो कयल क्रियमाण कर्म प्रारब्ध जे रुप में फलु ड्रियण खां सवाइ शांत न थींदो। हिक ड्रींहुं को घुरजाउ माण्हू मूं वटि अची मूंखां हिक जग्रहि जेका मूं टिनि हज़ारनि रुपयनि में विकणण जी पक कई हुई, सा 3500 रुपयनि में वठण जो सौदो करे त इन रीत मूंखे 500 रुपया मिलण जो प्रारब्ध फलु भोग्राए पोइ शांत थियो।

पर जेकड़हिं मां रजोगुणी जीव हूंदुसि त मां वचन मुजिब 3000 खां वधीक पैसा वठण खां इन्कार कंदुसि त मुंहिंजो प्रारब्ध फलु ड़ेई न सघंदो। हाणे 500 रुपया जेके मुंहिंजो प्रारब्ध आहिनि से मुंहिंजे पुठियां घुमंदा ऐं कंहिं बि नमूने मूंखे 500 रुपया ड़ियारे ई शांत थींदो।

मां हिकु बस जो कंडक्टर आहियां। हिक ड़ींहुं हिकु मुसाफ़िर पंहिंजी हिक लख रुपयनि जी थेल्ही बस में विसारे वियो। मां उहा थेल्ही खणी संदसि घर वापस करण वास्ते वियुसि। थेल्ही वठी हिन ड़ाढे प्रेम ऐं हुजत सां मुंखे 500 रुपया इनाम तोर ड़िना। मूं उन नेक माण्हूअ खां उहे पैसा वर्ता ऐं गड़ो गड़ु थोरो पुञ बि कमायुमि।

जेकड़हिं मां तमोगुणी जीव आहियां त रिश्वत वठी पंहिंजो प्रारब्ध भोग़ींदुसि ऐं जे मां सतोगुणी आहियां त कंहिंखे संतोष ड़ेई प्रारब्ध भोग़ियां। इन नमूने सतोगुणी, तमोगुणी ऐं रजोगुणी जीव जी प्रारब्ध भोग़ुण जी रीति अलग़ु अलग़ु थिए थी। पर टिन्हीं क़िस्मनि जे जीवनि खे प्रारब्ध त भोग़िणो ई पवे थो ऐं पोइ ई संदसि कयल कर्म शांत थिए थो।

(10) क्रियमाण कर्म करण जी रीत

सतोगुणी, रजोगुणी ऐं तमोगुणी टिन्ही किस्मनि जे माण्हूनि जो क्रियमाण कर्म करण जो तरीक़ो अलग़ु अलग़ु आहे। कर्म जो फलु त सभिनी खे अवस मिलंदो ई पर....

सतोगुणी जीव चवे थो त मां कर्म कंदुसि, फलु चाहे मिले या न मिले। रजोगुणी जीव चवे थो त मां कर्म कंदुसि पर उनजो फलु कीन छड़ींदुसि। तमोगुणी जीव चवे थो त फलु न मिलंदो त मां कर्म बि न कंदुसि।

हिक माण्हूअ जो पुटु ओचितो रात जो 12 बजे बीमार थी पियो, उहो माण्हू रात जो डॉक्टर खे सडु करण वियो। डॉक्टर सतोगुणी हो। हुन निंड मां उथी करे जल्द ई पंहिंजी दवाउनि जी बैग खई ऐं उनजे पुटखे ड़िसण लाइ उनसां गडु वियो। उन माण्हूअ डॉक्टर खां संदसि फ़ीअ जे बारे मे पुछियो, तड़हिं डॉक्टर चयुसि त फ़ी मां पोइ वठंदुसि। पहिरीं तुंहिंजे पुट खे चाकु थियण ड़े। डॉक्टर सतोगुणी जीव हो हुन खे फ़ीअ जी चिंता न हुई पर मरीज़ खे ठीक करण जी चिंता हुई। फ़ीअ जे पैसनि जी खेसि चिंता न हुई।

जेकड॒हिं डॉक्टर रजोगुणी जीव हुजे हां त चवे हां त मां तुंहिंजे पुट जो दुःख दूर त कंदुसि पर विज़िट फ़ीअ जा 10 रुपया वठंदुसि। जे डॉक्टर तमोगुणी जीव हुजे हां त चवे हा पहिरियांई विज़िट फ़ीअ जा 10 रुपया ड॒यो त पोइ मां तव्हां जे घर हलंदुसि। टिन्हीं खे विज़िट फ़ी त मिले ई थी, पर टिन्हीं जो क्रियमाण कर्म करण जी रीत में फ़रकु थिए थो। पहिरियों माण्हू सतोगुणी डॉक्टर खे ख़ुशीअ सां फ़ीअ जा 10 रुपया ड॒ीन्दो, रजोगुणी डॉक्टर सां सौदेबाज़ी करे हिन खे विज़िट फ़ीअ जा पैसा ड॒ींदो ऐं तमोगुणी डॉक्टर खे रंज थी विज़िट फ़ीअ जा 10 रुपया ड॒ींदो।

सतोगुणी, रजोगुणी या तमोगुणीअ खां मालु वठण वास्ते वञूं त उन में हेठींअ रीत वरताउ थिए थो। असां सचो गीहु वठण वञूं त सतोगुणी वापारी चवंदो त ''भाई बराबर चखे ड॒सु, सिंघी ड॒सु, पसंद अचई त वठु। गीहु वठी वञी वापरे ड॒सु। पोइ बि जे पसंद न अचेव त बाक़ी बचियलु गीहु वापस ड॒ई पैसा वठी वञिजो।

रजोगुणी वापरीअ वटि शयूं वठण वञूं। जहिड़ोकि शरीर जे सुख जे साधन जो सामान, त वापारी बिल में ई लिखी ड॒ीन्दो त हिक वक्ति माल वठी घर विया त पोइ माल जी ख़राबीअ या भग॒टुट लाइ असीं ब॒धल न आहियूं, माल वापस कीन वठंदासूं ऐं पैसा बि कीन ड॒ींदासूं।

तमोगुणी वापारीअ वटि शयूं वठण वञूं त उहो अवल पैसा वठण खां सवाइ माल बि कीन ड॒ेखारींदो। मिसाल तोर - सिनेमा वारो त चवंदो पहिरियांई ब॒ाहिर दरीअ तां पैसा ड॒ेई टिकेट वठी अचो, पोइ हाल अंदर उंदहि में वञी पिक्चर ड॒सो पसंद अचेव त बिलाशक ड॒संदा रहो, न त हलंदा थियो। पैसा त पहिरियांई ई वठी छड॒िया अथउं।

वैद, वकील ऐं वैशिया खे पहिरियांई पैसा न मिलनि त ग॒ाल्हाईंदा ई कीन। पहिरियाईं पैसा ड॒ेखारियोनि त पोइ ई तव्हां खे साम्हूं ड॒संदा।

(11) प्रारब्ध में हुजे, ओतिरोई मिले।

जेतिरा क्रियमाण कर्म, जहिड़े नमूने कर्यूं, ओतिराई ऐं तहिड़ी रीत ई उन्हनि मां प्रारब्ध ठहे थो ऐं ओतरोई प्रारब्ध जो फलु मिले थो। उनखां रतीमात्र घट या वध फलु कीन मिलंदो।

जनम वठण वक्ति जेतिरा संचित कर्म पची फल ड्रियण वास्ते प्रारब्ध में तबदील थिया हूंदा, उन नमूने देह मिले थी। माता, पिता, स्त्री, पुट, धीअ, सग्गा संबंधी वग़ैरह बि सभु प्रारब्ध भोग्गुण वास्ते तहिड़ाई मिलनि था, असां जे प्रारब्ध मूजिब ई माता-पिता जे मेलाप सां असां जो जनम थिए थो ऐं असां जे प्रारब्ध अनुसार ई उन्हीअ माता-पिता जे घर असांखे सहूलियतूं मिलनि थियूं। कहिड़े माता-पिता जे घर असांखे सहूलियतूं मिलनि थियूं। कहिड़े माता-पिता जे घर असीं जनम वठूं, उनजी पसंदगी असीं पाण न था करे सघूं, जेकड्हिं इहो असां जे हथ में या वस में हुजे हा त सभु को बिरला सेठ जे घर जनम वठण चाहियूं हा, जिते बंगलनि ऐं कारुनि में ऐश करण मिलनि, पर इहो सभु असां जे हथ में न आहे। हीउ सभु कर्मनि जे हिसाब सां असां जे प्रारब्ध मूजिब ई असांखे मिले थो।

ऋण के संबंध से आ मिले,
सुत, वित, दारा और देह ।

कंहिं जनम जो क़र्जु पूरो करण लाइ ई असां खे स्त्री, धन-दौलत, औलाद ऐं देह मिले थी। जिएं ई क़र्जु पूरो थो थिए तिएं ई असां हिक ब्रिए खां विछड़ी था वञूं। असां जा कयल क्रियमाण कर्म पची प्रारब्ध बणजी असां जे साम्हूं अचनि था ऐं जीवन में असीं उन प्रारब्ध खे पूरी तरह भोग्गे पूरो कयूं त पोइ ई असांजी देह छुटे थी।

यसमात च येन च यथा च यथा च यत च
यावत च यत्र च शुभाशुभमात्मकर्म ।
तस्मात च तेन च तथा च तदा च तच्च
तावत च तत्र च विद्यातृवशात उपैति ॥

जिनमां, जिनसां, जहिड़ीअ रीत जंहिं वक़्त जेतिरे वक्त तांई, शुभ-अशुभ क्रियमाण कर्म कजनि था, तिनिमां तिनिसां, तहिड़ीअ रीत, तंहिं वक्ति, ओतिरे वक्त ताइं प्रारब्ध बणजी असां सां अची था मिलनि। वड्डो वज़ीर पंहिंजे पटेवाले ते केतिरो बि राज़ी छो न थिए त बि हिन खे कलेक्टरजी कुर्सीअ ते वेहारे न सघंदो।

तृष्टोऽपि राजा यदि सेवकभ्यों,
भाग्यात परम नैव ददाति किंचित् ।
अहर्निशं वर्षति वारिवाहः
तथापि पत्रत्रित्रय पलासः ।।

राजा पंहिंजे नौकर ते ड॒ाढो खुश थिए त बि संदसि नसीब खां ज़री बि वधीक खेसि डे॒ई न सघंदो ऐं जे महिनत करे हिन खे डीं॒दो बि त वठंदड़ जे हथनि मां किरी पवंदो। चोवीह कलाक ऐं 365 डीं॒हं सांदहि बरसात छो न वसंदी रहे त बि पलाश जे वण खे सिर्फ़ टे ई पन ईंदा चोथों पनु कड॒हिं बि कीन ईंदो।

बहार जी मुंद अचे उन वक्ति संसार जे सभिनी वणनि ते नवां पन अचनि था। पर करड़ि जे वण ते नवां पन न था अचनि, उनमें बहार जी मुंद जो भला कहिड़ो डो॒हु ? सूर्यनाराइण उभरे थो, उन वक्ति सजी॒ सृष्टिअ में सभ कंहिं खे डि॒सणु अचे थो, पर चिबि॒रे खे डि॒सणु न थो अचे, उन में सूर्यनाराइण जो कहिड़ो डो॒हु?

चौमासे में बरसात गरीब ऐं शाहूकार सभिनी जे घरनि मथां हिक जहिड़ी पवे थी पर चातक पखी वातु फाड़े वेठो रहे थो त बि संदसि मुख में हिक बि बूंद पाणीअ जी नथी पवे, उनमें भला बरसात जो कहिड़ो गुनाहु ?

पत्रं नैव यदा करीर विटपे दोषो वसंतस्य किं
नौलूकोप्यवलोकते यदि दिवा सूर्यस्य किं दूषणम।
धारा नैव पतन्ति चातक मुखे मेघस्य किं दूषणं
यत पूर्व विधिना ललाट लिखितं तत मार्जितुः कः क्षमः ।।

प्रारब्ध मूजिब जेको लेख में लिखियलु हुजे उनखे केर बि मिटाए न थो सघे। अहिड़ी मान्यता आहे त जड॒हिं ब॒ारु ज॒मे थो त विधाता छहें डीं॒हुं उनजो लेख लिखंदी आहे । इहा ग॒ाल्हि शायद सची बि हुजे तड॒हिं बि ब॒ार जेकी बि क्रियमाण कर्म कया हूंदा ऐं उहे पची जहिड़ी ऐं जेतरी मात्रा में प्रारब्ध उन्हनि मां ठहियो हूंदो, उनखां थोरो बि घटि या वधि, सुठो चाहे ख़राब, विधाता संदसि लेख में लिखी कीन सघंदी।

असां जे नसीब में जेतिरो धनु लिखियल हूंदो उनखां हिक पाई बि वधि या

घटि कीन मिलंदी। वधीक धनु हासिल करण लाइ असां ग़लत नमूना अख़्त्यार करे केतिरा बि जतन कर्यूं, त बि नसीब खां वधि असां कुछु बि हासिल न था करे सघूं। असां जूं सभई कोशिशूं नाकाम थियनि थियूं ऐं इएं करण सां असां जा नवां खोटा क्रियमाण कर्म ठहनि था "हथि त एतिरो ई इंदो जेतिरो हथ में लकीर हूंदी"। हिक संस्कृत कविअ लिखियो आहे त -

मा धाव मा धाव विनैव द्रव्यं
न धावनं कारणमस्ति लक्ष्म्याः ।
चेत धावनं कारणामस्ति लक्ष्म्याः
श्वानः यों धावमानो न खलु धनाढ्यः ॥

पैसो हासिल करण लाइ अजाई नूस नूस न कर्यो। इएं नूस नूस करण सां पैसा कीन मिलंदा। जेकड़हिं इएं करण सां पैसा मिलंदा हुजनि हां त पोइ कुता सभिनी खां वधीक अमीर हुजन हां, छो जो हू सजो ड्रींहु नूस नूस कंदा रहंदा आहिन। चवण जो मतलब इहो आहे त असां खे कयल क्रियमाण कर्मनि अनुसार असां जो प्रारब्ध जुमण सां ई ठही चुको आहे। असां केतिरा बि उपाव कर्यूं पर नसीब खां वधीक असां खे कुझु बि कीन मिलंदो।

(12) त छा असां खे पुरुषार्थ न करणु खपे ?

कर्म जे क़ाइदे में पुरुषार्थ जो अर्थु बराबर समझण खां सवाइ केतिरा ज़िदी नसीब खे मञींदड़ इएं मञनि था त असां खे कुझु बि पुरुषार्थ करण जी ज़रूरत न आहे, नसीब में जेको लिखियो हूंदो सो त अवसि मिलंदो। इमितिहान में पास थियणु जे नसीब में लिखियल हूंदो त ज़रूर पास थींदुसि न त केतिरी बि महिनत कंदुसि त पास न थीदुंसि। नसीब में नापास थियणु लिखियो हूंदो त ज़रूर नापास थींदुसि। इनकरे अजाई महिनत छो कयां? अहिड़ा केतिराई बेसमझ शागिर्द पंहिंजो पाण खे भगुवान भरोसे छड्रे ड्रींदा आहिनि। हिकु पको प्रारब्धवादी संस्कृत जो अभ्यास करे थो पर संस्कृत बराबर गाल्हाइण नथो अचेसि। इनकरे टूटी फूटी संस्कृत भाषा गाल्हाए थो।

भणतव्यं तो भी मरतव्यं
और नहीं भणतव्यं तो भी मरतव्यं
तो फिर कायकु माथाकुट करतव्यम्

अर्थात : पढ़ंदासीं त बि मरंदासीं ऐं न पढ़ंदासीं त बि मरंदासीं, पोइ छाजे लाइ तकलीफ़ कयूं। अहिड़ी सोच वारा पाग़ुल प्रारब्धवादी पुरुषार्थ जो अर्थु (माना) ई कान समिझिया आहिनि।

"प्रारब्ध में जेकी लिखियल आहे सोई मिले थो" इहा ग़ाल्हि बिल्कुल सचु आहे पर प्रारब्ध किथे लग़ाइजे ऐं पुरुषार्थ किथे कजे,उन ग़ाल्हि जो विवेक (समझ) असां खे बराबर समिझणु घुरिजे। नौकरी मिलणु प्रारब्ध जे वसि आहे पर नौकरीअ खे नेकीअ सां निभाए रखण लाई पुरुषार्थ ज़रूरी आहे। पैसा मिलणु प्रारब्ध आहे, पर उन जो कहिड़े नमूने सदुपयोग कजे इहो पुरुषार्थ जो कमु आहे। पुटु मिलणु प्रारब्ध जे वसि आहे, पर उनखे सुठा संस्कार ड॒ेई लाइक़ु बणाइणु पुरषार्थ आहे। प्रारब्ध में हुजे अहिड़ी ई नौकरी, एतिराई पैसा, अहिड़ी ई स्त्री ऐं औलाद वग़ैरह मिलनि था। प्रारब्ध सां जेकी कुझु बि मिले थो, उनजो कारगर ढंग सां, ऐं विवेक बुद्धिअ सां सदुपयोग करण में ई पुरषार्थ समायलु आहे। इमितिहान में पास थियणु बराबर प्रारब्ध वसि आहे पर पेपर लिखण जो पुरषार्थ त करिणो ई पवंदो । न त ख़ाली पने ते आशीर्वाद केर ड॒ींदो ?

पंहिंजी आत्मा खे संतोष अचे अहिड़ो पुरषार्थ असांखे करिणो ई पवे थो, पैसा घटि मिलनि या वधि मिलनि इहो प्रारब्ध वसि आहे, पर उन्हनि खे नेकीअ सां कमाइणु ऐं कमु आणणु में पुरषार्थ समायलु आहे।

इन्सान जी इहा सोच आहे त घणो पैसो हूंदो त ड॒ाढा सुखी थींदासूं पर इएं न आहे, अधर्म सां कमायलु धन, अनर्थ बणजी वञे थो। पाप सां कमायल पैसनि सां शाहूकार थियल सेठियूं घणे क़दुर दुःखी आहिनि । संदनि औलाद कुसंग में वञी असंस्कारी बणजे थी ऐं संदनि स्त्रीयूं पिण नास्तिक थी पवनि थियूं। पैसा हुजण जी हालत में असांखे उन जो लाभ वठी मोक्ष मार्ग तरफ़ विख वधाइण घुरिजे। पैसा न हुजनि तड॒हिं बि उन मौक़े जो लाभु वठी मोक्ष मार्ग तरफ़ अग़ुते वधणु घुरजे। पत्नी हुजे त उनजे हुअण जो लाभ वठी मोक्ष मार्ग ड॒ांहुं पंधु करणु घुरजे ऐं जेकड॒हिं विधुर हुजे त उन परिस्थितिअ जो फ़ायदो वठी मोक्ष तरफ़ अग़ुते वधणु घुरिजे । प्रारब्ध वसि जेका बि देह, स्त्री, पुटु, धीअ ऐं धन प्राप्त थिए, जेकड॒हिं न बि थिए त उन्हनि हालतुनि जो लाभु

वठी मोक्ष मार्ग तरफ़ विख वधाइण जो पुरषार्थ त करणु ई घुरिजे।

अकृत्वा पर संतापम
अगत्वा नम्रताम ।
अक्लेशयित्वानिर्जात्मानम
यत स्वल्पमपि तद्‌बहुः ॥

कहिं जी बि आत्मा खे कष्टु ड्रियण बिना नीच इन्सान जी खुशामत करण खां सवाइ ऐं पंहिंजीअ आत्मा खे दुःखु पहुचाइण खां सवाइ जे को थोरो बि प्रारब्ध जे वस मिले त उनमें संतोष मञणु घुरिजे ऐं पुरषार्थ कंदो इ रहिजे।

(13) पुरषार्थ किथे कजे ऐं प्रारब्ध किथे आज़िमाइजे ?

इन्सान खे पंहिंजे जीवन में अनेक वस्तु प्राप्त करण जी इच्छा थिए थी, जहिड़ोकि धनु, स्त्री, पुट्टु, बंगलो, कार, जसु, दानु, पुञ्‌, ध्यानु, मोक्ष, धर्मु वग़ैरह। इन्हनि सभिनि इच्छाउनि खे शास्त्रनि में मुख्य चइनि भाङनि में विरहायो वियो आहे : (1) धर्म (2) अर्थ (3) काम (4) मोक्ष

उहे चार पदार्थ इन्सान खे प्राप्त करणा आहिनि। "धर्म सां अर्थ धन प्राप्त करण घुरिजे" छाकाण जो अधर्म सां हासिल कयल धनु अनर्थ बणजी पवे थो। धर्म ऐं अर्थ सां हासिल कयल काम मां तृप्त थी असां खे मोक्ष प्राप्त करण जी कोशिश करणु घुरिजे। हिननि चइनि पदार्थनि मां पहिरियों ऐं चोथों यानी धर्म ऐं मोक्ष वास्ते असांखे पुरषार्थु कंदो रहणु घुरजे। उन्हनि खे कड़हिं बि प्रारब्ध ते छड्डे न थो सघिजे। जड़हिं ब्रियों ऐं टियों यानी अर्थ ऐं काम खे प्रारब्ध ते छड्डण घुरिजे। उन्हनि खे हासिल करण वास्ते पुरषार्थ जी ज़रुरत कान्हे। पर असीं उनजे सफ़ा उबतड़ हली रहिया आहियूं। अर्थ ऐं काम खे प्रारब्ध ते छड्डे ड्रियण बजाय उन्हनि खे प्राप्त करण वास्ते असीं रात ड्रींहुं वेठा था पुरषार्थ कर्यूं। आख़िर में प्रारब्ध अग्रियां झुकी था पऊं। जड़हिं धर्म ऐं मोक्ष, जंहिंजे वास्ते सदाई असांखे जाग्रत रही पुरषार्थ करणु घुरिजे, उन्हनि खे प्रारब्ध ते छड्डे था ड्रियूं। इनकरे असीं ब्रिन्हीं पासनि खां ग़ोता था खाऊं। महाभारत में महर्षी वेद व्यास लिखियो आहे :

उर्ध्वबाहुविरोम्येष न च कश्चितछृणोति मे ।
धर्मादर्शश्च कामश्च स किमर्थं न सेव्यते ॥

ब्र हथ मथे करे आऊं सारे जगुत खे चिताए रहियो आहियां, पर केर बि मूंखे बुधे न थो। अर्थ ऐं काम जो मां को दुश्मन न आहियां। अर्थ ऐं काम जी उपासना बिलाशक कयों, पर धर्म जे हद अंदर रही ऐं मोक्ष जी प्राप्तिअ वास्ते"। अहिड़ो साफ़ सनातन सचु असांखे समझाइण वास्ते इतिहास खे सजो दृष्टांतनि ज़रिए कम आणींदे वेद व्यासजीअ सारो महाभारत रचियो आहे। नसीबदार हुजो त पढ़ी ड्रिसो।

(14) प्रारब्ध ऐं पुरषार्थ हिक ब्रिए जा विरोधी न पर पूरक आहिन।

अजु असां जेकी बि क्रियमाण कर्म कयूँ था, से संचित कर्मनि में जमउ रही, अगिते हली पची प्रारब्ध बणजनि था ऐं उन प्रारब्ध भोगुण वास्ते शरीरु मिले थो। इनकरे सही माना में पुरषार्थु ई अगिते हली प्रारब्ध बणजे थो। इनकरे प्रारब्ध ऐं पुरषार्थ ब्रुई हिकु ई आहिनि। ब्रिन्हीं जो कार्यक्षेत्र (कर्म करण जी वाट) अलगु अलगु हुजण करे ब्रुई हिक ब्रिए जी वाट बि कीन था ओरांघिनि। प्रारब्ध चालू शरीर खे फलु भोगाए थो ऐं पुरषार्थ ईंदड़ सृष्टिअ खे तैयार करे थो। जंहिंकरे अगुते हली इहो ई पुरषार्थ प्रारब्ध बणजी मुस्तक़बिल में शरीर खे फलु भोगाए थो। अंग्रेज़ीअ में चवणी आहे -

Man is the architect of his own fortune

असीं पंहिंजो प्रारब्ध पाण ई पंहिंजनि हथनि सां चालू पुरषार्थ सां ठाहे सघूं था। प्रारब्ध बिना पुरषार्थु पिंगिलो आहे त पुरषार्थ खां सवाइ प्रारब्ध अंधो आहे। "हिकु अंधो ऐं ब्रियो पिंगिलो" अहिड़ी दोस्तीअ जी कहाणीअ वांगुर आहे । अंधे खे रस्तो ड्रिसण में न पियो अचे ऐं पिंगिलो हली कीन पियो सघे। इनकरे ब्रिन्ही दोस्तनि पंहिंजे विवेक बुद्धिअ खां कमु वर्तो। पिंगिलो अंधे जे कुल्हनि ते चढ़ी वेठो। अंधो हलण लगो ऐं पिंगिलो खेसि रस्तो ड्रेखारण लगो। इन नमूने ब्रुई सवलाइअ सां लंघे पार पहुता। जीवनयात्रा खे सफलतापूर्वक पूरो करण वास्ते पुरषार्थ ऐं प्रारब्ध हिक ब्रिए खे पूरीअ रीत सहायता कनि था। असीं पंहिंजे प्रारब्ध सां पंहिंजो सुखु ऐं दुःखु भोगियूं था, ब्रियो केर बि असां खे सुखी या दुःखी करे न थो सघे। इहो त सिर्फ़ निमित मात्र ई आहे।

सुखस्य दुःखस्य न कोऽपि दाता परो ददातीति कुबुद्धिरेषा।
अहं करोमीति वृथाभिमानः स्वकर्मसुत्रात् ग्रथितो हि लोकः ॥

(15) कर्म करण में आज़ाद ऐं फल भोगुण में ब॒धल आहियूं।

गीता जो हिकु महाकाव्य आहे त -

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।

अर्थात कर्म करण ते तुंहिंजो अधिकार आहे, पर फल ते तुंहिंजो अधिकार न आहे। तूं कर्म कंदो रहु पर फल जी इच्छा सफ़ा न रखु। हिन महा वाक्य जे अर्थ करण में थोरी ग़लतफ़हिमी थियण जी गुंजाइश आहे। भग॒वान इएं कीअं चवंदो त तूं कर्म कंदो रहु पर फल जी इच्छा न रखु। तूं सज॒ो महिनो नौकरी करि पर पहिरीं तारीख़ पघार न घुरु ऐं न वठु। स्टेशन तां कूलीअ खां सामान खणाइ पर कोई खेसि मज़ूरीअ जा पैसा ड॒ियण जे बदरां खेसि गीता जो उपदेश चई बुधाएसि त "भाई तूं गीता पढ़ी ड॒िसु, उनमें श्रीकृष्ण उपदेश ड॒िनो आहे त कर्म करण ते तुंहिंजो अधिकार आहे पर फल ते न।" इहो बुधी कूली पक ई पक तव्हां खे चवंदो "मूंखे गीता जो ज्ञान कीन घुरिजे, पर मज़ूरीअ जा पैसा घुरजनि"।

कर्मु कबो त फल पक ई पक मिलंदो, फल ड॒ियण खां सवाइ कर्म शांत कीन थींदो, त पोइ मथे चयल क़ौल जो अर्थु इहो आहे त कर्म करण ते असां जो अधिकार आहे पर फल ते न। मतलब त कर्मु करणु या न करणु कहिड़ो करणु, कहिड़ो न करणु, शुद्ध बुद्धिअ जो उपयोग करे उनमें रुभी वञण में असीं स्वतंत्र आहियूं, पर उनजे फल भोगुण में परतंत्र आहियूं। मतलब त असांजी फल भोग॒ण जी मरज़ी न बि हुजे त बि नतीजे तोर पैदा थियलु फलु भोग॒िणो ई पवंदो उन में का बि चालाकी करे कीन सघंदासीं।

असां वटि केरु महेमान रसोई खाइण अचे त असां उनजे लाइ खीरणी, पूर्यूं, पकोड़ा, भाजि॒यूं, दाल, चांवर, मिठाई, रायतो, सलाद ऐं बि॒यूं घणे ई शयूं ठाहे संदसि अगि॒यां खाइण लाइ रखियूं। उन्हनि मां हू छा खाए ऐं छा न खाए, छा वधीक खाए उन्हीअ ग॒ाल्हि में हू बिल्कुल आज़ाद आहे। हू जे काकड़ी वधीक चाह सां खाईंदो त असीं सिक सां खेसि काकड़ी वधीक खाइण लाइ डीं॒दासूं। हाणे हिन जी तबीयत खे काकड़ी भांइ पवंदी या न, इनजो

ख़्यालु त खेसि ई रखिणो आहे न की असांखे। हीउ जे सिर्फ दाल खाए ऐं पेटु ख़राब थी पवेसि त उनजो ख़्यालु बि हिन खे ई रखिणो आहे,असां खे न। असां त ख़ुश थींदे खेसि दाल खाइण लाइ डींदा वेंदासूं, इहा दाल खाइण में हू स्वतंत्र आहे। पेट जे ख़राब थियण करे तकलीफ़ भोगे त उनमें हू परतंत्र आहे। उनते संदसि कोबि वसु हली कीन सघंदो ऐं उन ते कंहिं बि सुठे डॉक्टर जी सिफ़ारिश बि हली कीन सघंदी। दाल वधीक खाइण जो कर्मु जेको हिन कयो उन जो फलु भोगुण खां पोइ ई हिन खे राहत थींदी।

(16) फल भोगुण वास्ते उन मुताबिक देह धारणी पवे थी।

शुभ कर्मनि जो फलु सुख भोगुण वास्ते ऐं पाप कर्मनि जो फलु दुःख भोगुण वास्ते पिण देह धारण करणी पवे थी। फल भोगुण जो साधन सिर्फ़ देह ई आहे। देह धारण करण खां पोइ ई फलु भोगे थो सघिजे। इनकरे शुभ चाहे अशुभ कर्मनि जो फलु भोगुण वास्ते देह जो धारण करणु ज़रुरी आहे। इनकरे ई जनम मरण जे चकर में अचिणो पवे थो। जेसिताईं जनम मरण जो चकर चालू रहे थो, तेसिताईं मोक्षु मिलणु तमाम मुश्किल आहे, नामुमकिन आहे। देह धारणी ई न पवे उन परिस्थितिअ जो नालो आहे मोक्षु।

जेसिताई शुभ या अशुभ कर्मनि जा ढेर संचित कर्मनि में जमउ आहिनि तेसिताई हिन संसार में अचण वञण जो चकर चालू ई रहे थो, देह धारण करणी ई पवे थी। शुभ कर्मनि जे फल सरुप सुख भोगुण लाइ देह धारण करणी पवे त उहा थी सोन जी ज़ंजीर ऐं अशुभ कर्मनि जे फल सरुप दुःख भोगिण वास्ते देह धारण करणी पवे त उहा थी लोह जी ज़ंजीर। पर ब्रिन्ही हालतुनि में शुभ चाहे अशुभ कर्मनि जे फल भोगुण वास्ते जीव खे लाज़िमी तोर देह धारण करणी पवे थी। इन जो मतलब इहो आहे त कंहिं बि क़िस्म जो कर्म जीव वास्ते बंधन यानी जनम मरण जे चकर जी ज़ंजीर पाए था छडिनि पोइ भले उहा ज़ंजीर सोन जी हुजे या लोह जी, पर आहे त बंधन ई न।

सुपातरी दान कयूं त उनजे फल सरुप सुख भोगिण लाइ देह धारण करणी पवे थी।

सुपात्रदानात् च भवेत् धनाढयो
धनप्रभावेन करोति पुण्यम् ।

पुण्यप्रभावत् सुरलोकवासी
पुनर्धनाढयो पुनरेव भोगी ॥

ऐं कुपातरी दान कर्यूं त उनजे फल सरुप दुःख भोगुण वास्ते बि देह धारण करणी पवे थी।

कुपात्रदानात् च भवेत् दरिद्रो
दारिद्रियदोषेण करोति पापम्।
पापप्रभावत् नरकं प्रयाति
पुनर्द्रीरिद्रो पुनरेव पापी॥

ब्रिन्ही जी औखी चाहे सौखी चकी संसार चकर जी फिरंदी रहे थी ऐं उन में जीव मात्र पीसजंदो ई रहे थो, उन खे मोक्षु मिले ई नथो। छाकाण जो हीउ नवां नवां क्रियमाण कर्म कंदो रहे थो। उन्हनि मां जेके कर्म ततकाल फलु न था ड्रियनि से संचित कर्मनि में जमउ थींदा आहिनि। जिनि जा आहिस्ते आहिस्ते ढेर थी था वञनि, उन्हनि मां जेतिरा संचित कर्म पचंदा था वञनि ऐं प्रारब्ध में तबदील थींदा था वञनि, ओतिरा प्रारब्ध जा फल भोगुण लाइ जीव शरीर धारण कंदो ई थो रहे। इन रीत हिन संसार जो विष चकर अनादिकाल खां हलंदो थो अचे ऐं इहो अंतकाल तांई हलंदो रहंदो। महर्षी पंतजली चयो आहे त -

सति मूले तद्विपाकः जातिः आयुः भोगाः ।

"जेसिताई कर्म रुप जड़ आहे, तेसिताई शरीर रुपी वणु उभरंदो ई रहं ऐं उन वण में ज़ात, उमिरि ऐं भोगु जा फल लगुंदा ई रहंदा।

(16-अ) कर्मनि में कट-सट कीन थिए।

घणा माण्हू इएं समझनि था त जे टे मण पाप कर्म कंदासूं, तहिंखां पंज मण पुञ कर्म कंदासूं त पंजनि मणनि पुञनि मां टे मण पाप कटिजी वे बाक़ी बचंदा बु मण पुञ। तंहिंजो फलु भोगींदासूं। टे मण पाप कर्मनि फल भोगिण खां बची वेंदासूं। इहा गुणप ग़लत आहे। कर्मनि जे क़ाइदे कट नथी थिए। उनमें त सिर्फ़ जोड़ करणो पवंदो आहे।

असां टे मण पाप कर्म कर्यूं ऐं पंज मण पुञ कर्म कर्यूं त अठ मण कर्मनि फलु भोगुणो पवे थो। पुञ कर्मनि जे फल सरुप सुख भोगुण लाई देह ध

करणी पवे थी ऐं कयल पाप कर्मनि जो फलु भोगुण लाइ पिण देह धारण करणी पवे थी, इएं करण सां अठ मण पाप पुञ जे फल सरुप अठ मण सुख-दुःख भोगुण वास्ते देह धारण करणी पवे थी।

17) त पोइ मोक्षु कडहिं ?

सिर्फ़ इन्सान ई मोक्ष जो अधिकारी आहे ऐं मानव शरीर मोक्ष प्राप्त करण वास्ते ई मिल्यो आहे। जीव इन्सानी चोलो धारण करण खां पोइ बि जे मोक्षु प्राप्त न करे सघे त पोइ चोर्यासी लख जूणियुनि में भिटिकण जी मुसीबत थांउस कड़के थी। सिर्फ़ इन्सान ई पको निश्चो करे त देह जे बुंधन मां छुटी प्रारब्ध परमेश्वर में लीन थियण लाइ समर्थ ऐं स्वतंत्र (आज़ाद) आहे। छाकाण त हीउ ब्रह्म जो ई अंश आहे ऐं उन में ई लीन थी मोक्षु प्राप्त करण लाइ ई हू बणायो वियो आहे।

पर जेसिताईं हीउ हिन जनम जो पूरो प्रारब्ध भोगे न वठे ऐं अगुलो अनादीकाल जा अनेक जनम जन्मान्तरनि जा जमउ थियल बेशुमार संचति कर्मनि जा ढेर पंहिंजी ज़िंदगीअ में पूरा न करे तेसितांई उनखे वारंवार हरघड़ीअ अनंतकाल ताईं अनेक जनम, अनेक देहियूं धारण करणियूं ई पवन थियूं, तेसितांई हिन खे मोक्षु न मिले। हिन खे जेकडहिं मोक्ष हासिल करण जी तमाम इच्छा थिए ऐं सचु-पचु जे मोक्ष हासिल करणो हुजे त पोइ खेसि तमाम संचति कर्मनि जो नासु करणो पवे। सभिनी संचित कर्मनि खे ज्ञान रुपी अगनीअ में साड़े भसम करणो पवे ऐं हलंदड़ जीवन में प्रारब्ध खे पूरीअ तरह सां भोगिणो पवन्दो।

हिन ज़िंदगीअ में ई हाणे खां ई माण्हू नवां क्रियमाण कर्म अहिड़ीअ रीत करे, जिएं इहे तुर्तु फलु डेई शांत थी वञनि। उन्हनि मां हिकु बि क्रियमाण कर्म संचित कर्मनि में जमउ न थिए। जंहिंकरे भविष्य में संचित कर्म पची करे प्रारब्ध रुप में साम्हूं अची न बिहे ऐं उहो भोगुण लाइ हिन खां पोइ का देह बी न धारणी पवे। पर तकलीफ़ त इहा आहे जो जीव चालू जीवनकाल में भोगुण जेतिरा कर्म प्रारब्ध रुप भोगींदे भोगींदे बिया अनेक क्रियमाण कर्म करे थो ऐं पोइ उहे भोगुण वास्ते अनेक जनम धारण करे थो। तंहिंकरे हिन जीवन दौरान हाणे जेकी बि क्रियमाण कर्म कर्यूं से अहिड़ा कर्यूं जेके कहिड़ीअ

बि रीत संचित कर्मनि में जमउ न थियनि जो अग्रिते हली नईं देह धारण करण जे बुंधन में न पऊं।

अहिड़े सोचे समझी कयल कर्म खे योग चइबो आहे। गीता में भगुवान योग जी व्यवस्था कई आहे त "योगः कर्म सु कौशलम्" क्रियमाण कर्म खे सोचे समझी कुशलता सां कजे त उन जो नालो आहे योग।

(18) पर को बि कर्म न कजे त ?

को माण्हू जे इएं चवे त "मां हिन जीवनकाल में को बि कर्म न कर्यां त पोइ कर्म जो संचित कर्म में जमउ थियण जो सुवाल ई पैदा न थो थिए ऐं पची करे प्रारब्ध रुप में भोगुण जो सुवाल बि न रहंदो, ऐं फल भोगुण वास्ते देह बि धारण न करणी पवंदी ऐं पंहिंजो पाण ई मोक्षु मिली वेंदो। पोइ देह धारण करण खां हमेशह लाइ मुक्त थी वञिबो। हीउ वीचार बराबर न आहे छाकाण त जीवु कर्म करण खां सवाइ रही न सघंदो।

भगुवान गीता में चयो आहे त-

नहि कश्चित क्षणमपि जातु तिष्ठति अकर्मकृत,
शरीर यात्राऽपि च ते न प्रसिध्ये त अकर्मणः।

को बि माण्हू हिकु पलु बि कर्म करण खां सवाइ रही न थो सघे, जेकड़हिं हीउ कर्म न करे त संदसि जीवनयात्रा ई अटकी पवे." स्नान करणु, खाइणु, पीअणु, उथणु-वेहणु, गुाल्हाइण, समिझणु, डि़सण, साहु खणण, नौकरी धंधो करणु, पंहिंजी तंदुरस्तीअ वास्ते कसरत करणु, जहिड़ा अनेक कर्म करणा ई पवनि था। इन्सान खे जनम खां मरण तांईं कर्म करणा ई पवनि था। पर क्रियमाण कर्म करण वक्ति असांखे अहिड़ी कुशलता सां या सोचे करे करणु घुरिजनि जेके उन्हीअ वक्ति फल डे़ई शांत थी वञनि ऐं संचित कर्मनि में जमउ न थियनि। इएं करण सां उहे अग्रिते हली भविष्य में प्रारब्ध रुप में भोगुण लाइ ब्रियो शरीर धारण न करिणो पवे। तंहिंकरे इन्सान खे अहिड़ा क्रियमाण कर्म करणु घुरिजनि जेके संचित कर्मनि में जमउ न थियनि।

(19) कहिड़ा क्रियमाण कर्म संचित कर्मनि में जमउ न था थियनि ?

हेठि ज्ञाणायल क्रियमाण कर्म संचित कर्मनि में जमउ न था थियनि (1) ब्रालपिण में कयल कर्म (2) बेहोशी अवस्था में कयल कर्म, बेसमझी

में कयल कर्म (3) मनुष्य देह खां सवाइ ब॒ीअ कंहिं जूणि में कयल कर्म (4) कर्तापिणे जे अभिमान खां सवाइ कयल कर्म (5) सृष्टिअ जे कल्याण ख़ातिर कयल कर्म (6) निष्काम कर्म

(20) मासूम ऐं बेहोशीअ जी हालत में कयल कर्म

ब॒ाल अवस्था में कयल कर्म, बेसमझीअ में, पाग॒लपिणे में, नशे में, बेहोशीअ जी हालत में कयल कर्म, राग॒-द्वेष खां आजा हूंदा आहिनि। इनकरे राग॒द्वेष रहित कर्म संचित कर्मनि में जमउ न थींदा आहिनि। को नंढो ब॒ालक बाहि में हथु विझे त उन जो हथु सड़ी वेंदो यानी कर्मु उन्हीअ वक्ति फलु ड॒ींदो, पोइ उन जो कर्म संचित कर्म में जमउ थी वरी फलु न ड॒ींदो। हिकु टिन सालनि जो ब॒ारु रांदि कंदे कंदे खट ते टिपा ड॒ियण लग॒ो। उन वक्त उन खट ते टिन महिननि जो नंढो ब॒ार सुमिहियो पियो हो। रांदि कंदे कंदे ब॒ारं जो पेर सुमिहियल ब॒ार जे गले ते पियो ऐं नंढो ब॒ारु उन वक्ति ई मरी वञे त उन टिन सालनि जे ब॒ार ते इन्डियन पेनल कोड जे क़लम 302 हेठि खून जो केस कीन हलंदो, छाकाण जो संदसि कयल गुनाह जे कर्म में राग॒द्वेष न हो, इनकरे संदसि इहो कर्म संचित कर्म में जमउ न थींदो। 18 सालनि खां घटि उमिर वारो ब॒ारु जेकड॒हिं कंहिं दस्तावेज़ ते सही करे त कोर्ट बि उहो नामंज़ूर कंदी आहे। उन ब॒ार खे वोट ड॒ियण जो बि अधिकार न हूंदो आहे। अहिड़े नमूने नशे जी हालत में, बेहोशीअ जी हालत में, या पाग॒लपन जी हालत में को माण्हूं गार्यूं ड॒िए या फ़साद करे त उन माण्हूअ जे ख़िलाफ़ इन्डियन पेनल कोड 323, 504 हेठ कोर्ट में केस न हलंदो आहे। वधि में वध माण्हूं गड॒िजी करे उनखे मारींदा। अहिड़े नमूने उन खे उन वक्ति ई संदसि कयल कर्म जो फलु मिली वेंदो या कुझु माण्हू उनते दया करे छड॒े ड॒ींदसि । अहिड़े माण्हूअ जे कयल इन कर्म में राग॒द्वेष न हुअण करे उहो कर्म संचित कर्म में जमउ न थींदो आहे।

(21) मनुष खां सवाइ ब॒ी जूण में कयल कर्म

मनुष जूणि खां सवाइ ब॒ियनि सभिनी जूणियुनि में कयल क्रियमाण कर्म संचित कर्म में जमउ न थींदा आहिनि। छाकाण त मनुष जूणीअ खां सवाइ ब॒ियनि सभिनी जूणियुनि में सिर्फ़ संचित कर्म प्रारब्ध रुप में भोग॒े देह छुटकारो पाए थी। उन्हनि जूणियूंनि में को बि नओं क्रियमाण कर्म संचित कर्म में

जमउ न थो थिए। घोड़नि, गड़्हनि, कुतनि, ब़िलियुनि, पखियुनि, पसुनि वग़ैरह जूणियुनि में जीव फ़क़त प्रारब्ध कर्म ई भोगु॒ण लाइ था रहनि ऐं उन्हनि जूणियुनि में कयल क्रियमाण कर्म बरवक्ति ई फलु ड॒ियनि था।

गड॒हु कंहिंखे लत हणे त उन वक्त ई ब॒ सोटियूं खाए त पोइ उहो कर्म संचित कर्म में जमउ न थींदो। वरी उनखे उनजो फलु न थो भोगु॒णो पवे। कुतो कंहिं माण्हूअ खे चकु पाए ऐं उहो माण्हू मरी वञे या नांगु कंहिं खे चकु पाए ऐं उहो माण्हू मरी वञे त पोइ उन कुते या नांग खे इन्डियन पेनल कोड क़लम 302 हेठि ख़ून जो केस कंहिं बि कोर्ट में हली न थो सघे। इन्डियन पेलन कोड सिर्फ़ मनुष जूणि लाइ ई ठहियलु आहे। गांइ या मेंहिं कंहिं खेत में घुसी वञी फ़सलु खे नुक़्सान पहुचाए त माण्हू उनखे लकिड़ीअ सां मारे भज॒ाईंदा या त उनखे ब़िए किथे ब॒धी छड॒ींदा। इन नमूने हू बरवक्ति फलु भोगि॒न था। पोइ उनजा उहे कर्म संचित कर्मनि में जमउ न था थियनि।

गांइ या मेंहिं नुक़्सानु करे त उनजो ड॒ंडु कैटल ट्रेस एक्ट मुजिब उन्हनि जे मालिकनि खे भरिणो थो पवे। मेंहुनि या गांयुनि ते हिन क़ाइदे मूजिब को बि केस कीन थो हली सघे। इन रीत तमाम जीव, पसूं, पखी, कीड़ा, माकोड़ा, मछियूं, जल जा ब़िया जीव, वण बू॒टा, नंढा नंढा पितिकिड़ा जीव वग़ैरह सभु भोगु॒ जूणी चइजनि था। उन्हनि जूणियुनि में नवां क्रियमाण कर्म जमउ न था थियनि। देव जूणी बि भोगु॒ जूणी सडि॒जे थी। देव पंहिंजनि पुञनि जे प्रभाव जेतिराई सुख भोगि॒न था। उन्हनि जा बि क्रियामाण कर्म संचित कर्मनि में जमउ न था थियनि ।

जेकी जीव "पूतपापाः निधूर्त कल्भषाः"

यानी जिनि जा तमाम पाप कर्म नास थी विया आहिनि, सिर्फ़ पुञ कर्म ई बाक़ी बचिया अथनि, उहे जीव देवजूणी भोगु॒ जूणीअ में सुर्गु॒ में वञी, उते सुठा भोगु॒ भोगि॒नि था ऐं पुञनि जे पूरे थियण शर्त ई मृत्युलोक में वापस जनम वठनि था। सुर्गु॒ में उन्हनि जा नवां क्रियमाणा कर्म संचित कर्म में जमउ न था थियनि। गीता में चयल आहे –

ते पुण्यमहासाद्य सुरेन्द्रलोकम्
अश्नन्ति दिव्यान् दिवि देवभोगान्।

ते तं भुक्तवा स्वर्गलोकं विशालं
क्षीणे पुण्ये मृत्यलोकं विशन्ति ॥

इन तरह मृत्युलोक में जनम वठी वापस अची जनम मरण जे चकर में अटिकनि था।

(22) कर्तापिणे जे अभिमान खां सवाइ कयल कर्म

अहिड़ा कर्म अकर्मे था बणिजी पवनि ऐं संचित कर्म में जमउ न था थियनि। इनकरे अहिड़नि कर्मनि जे फल भोगुण लाइ ब्रेहर देह धारिण करणी नथी पवे ऐं न वरी देह जे बुंधन जनम मरण जे चकर में ई अचिणो थो पवे।

को सेशन जजु ख़ून जे गुनाह हेठि गुनहगार खे फासीअ जी सज़ा डिए त उहो जजु हिक जीवहत्या करण हेठि गुनहगार न थींदो आहे। छाकाण त सेशन जज में फासीअ जी सज़ा डियण वक्ति कुझु बि कर्तापिणे जो अभिमान न हूंदो आहे। हीउ त सिर्फ़ क़ाइदे जी मर्यादा अंदर रही इन्साफ़ जो पालन थो करे। इन रीत जेको माण्हू सिर्फ़ पंहिंजीअ शुभ भावना सां पंहिंजे फ़र्ज़ जो पालन कंदो हुजे, उहो जगुत जे कंहिं माण्हूअ या बियनि अनेक इन्साननि खे केतिरो बि नुक़्सानु कंदो डिसण में छो न ईंदो हुजे, तड़हिं बि कर्तापिणे जे अभिमान खां सवाइ कर्म कंदे बि खेसि इहे कर्म बुंधन रुप न था थियनि। इनकरे भगुवान गीता में अर्जन खे वड़े वाके चयो आहे, "धर्म युद्ध में तूं चणनि ई जीवनि खे मारींदें तंहिं हूंदे बि तुंहिंजो इहो कर्म तोखे बुंधन में कीन विझंदो छो त तूं पंहिंजो कर्म कर्तापिणे जे अभिमान खां सवाइ सिर्फ़ फ़र्ज़ निभाइण जे ख़्याल खां करे रहियो आहीं।" हिन तत्व जो ज्ञाणू ऐं आऊं क़रियां थो इन रीत जो अभिमानु छड़े, जेको जीव धर्म जे मर्यादा अंदर रही न्याउ ऐं नीतीअ सां जेकी बि कर्म पंहिंजे फ़र्ज़ निभाइण जे लिहाज़ खां करे थो, सो तमाम कर्म कंदे बि उन्हनि में अटिके न थो, अहिड़ा कर्म खेसि बुंधन में बि न था विझनि। भगुवान वधीक चवे थो-

यस्य नाहंकृतो भावो बुद्धिः यस्य न लिप्यते ।
हत्वाऽपि सः इमान् लोकान् न हन्ति न निबध्यते ॥

"उन तत्व जे ज्ञाणण वारो सांख्य योग डिसंदे, बुधंदे, सिघंदे, भोजन कंदे, निंड कंदे, साहु खणंदे, गाईंदे, त्यागु कंदे, अखियूं खोलींदे, मतलब हर

क़िस्म जी क्रिया कंदे (सभु इन्द्रियूं पंहिंजे पंहिंजे कार्य क्षेत्र अंदर कमु करे रहियूं आहिनि) इएं समझी पोइ बिना कंहिं शक शुबह जे इएं ज़ाणे थो त आऊं कुझु बि न करे रहियो आहियां।'' गीता में भगुवान चवे थो -

नैव किंचित् करोमीति युक्तो मन्येत तत्ववित् ।
पश्यन् शृण्वन् स्पृशन् जिध्रन् अश्नन् गच्छन् स्वपन् श्वासन् ॥
प्रलपन् विसृजव् गृहणन् उन्मिशन निमिषन् अपि।
इन्द्रियाणि इन्द्रियार्थेषु वर्तन्ते इति धारयन् ॥

''जेकी जीव अभिमान वसि ''हीउ सभु कुझु मां करे रहियो आहियां'' अहिड़े कर्तापिणे जे अभिमान सां कर्म करे रहिया आहिनि, उन्हनि कर्मनि जो फलु उन्हनि जीवनि खे अगि़यां हली अनेक देहियूं धारण कराए थी एं फलु भोगा़ए थो। अहिड़ा अभिमानी जीव अजाई बकवास था कनि। भगुवान गीता जे 16 अध्याअ में बुधाए थो : मूं अजु हीउ हासिल कयो आहे हीउ पंहिंजो मनोरथ पूरो कंदुसि, मूं वटि केतिरो धन आहे त बि अञा वधीक हासिल कंदुसि। मां ऐश्वर्य खे भोगुण वारो आहियां। मूंखे सभु सिद्धियूं हासिल आहिनि, मां बुलवान ऐं सुखी आहियां, मां पाण समान बि़ए कंहिं खे बि कीन सुञाणां, यज्ञ कंदुसि, दान कंदुसि, अञा वधीक ख़ुशियूं हासिल कंदुसि, अहिड़ो जीव उन क़िस्म जे अज्ञान खां जकिड़ीयलु आहे।

घणनि ई क़िस्मनि जे भरमियल चित वारा अज्ञानी जीव मोह रुपी ज़ार में फाथल, विषय भोगु में आसक्त पापी मर्थींअ रीत कूड़े अभिमान करे जेकी बि कर्म कनि था, से संदनि कयल क्रियमाण कर्म, संचित कर्म में वञी जमउ थियनि था। जंहिं करे संदनि कर्म खेनि अनेक जनमनि जे चकर में फासाए रखनि था।

(23) सभ जे कल्याण ख़ातिर कयल कर्म

केतिरा कर्म दुनिया जे नज़र में पाप कर्म लेखिजण में ईंदे बि जेकडुहिं इहे जगुत जे सभ जे कल्याण ख़ातिर कया था वञनि त इहे पाप कर्म हूंदे बि संचित कर्म में जमउ न था थियनि। कूडु गा़ल्हाइणु हिकु वडो पाप कर्म लेखिजे थो। अगर कंहिंखां ज़बरदस्ती कूडु गा़ल्हाराइजे थो कंहिंखे कूड़ गा़ल्हाइण लाइ हिमिथाइजे त इहो बि एतिरोई पापु करे थो, इएं लेखिजे। इन

हूंदे बि ख़ुद भगुवान कृष्ण युधिष्ठिर जहिड़े धर्मराज खे कूड़ गाल्हाइण वास्ते आमादह कयो।

"नरो वा कुंजरो वा" इएं गोलमाल चई धर्मराज युधिष्ठिर "युद्ध में अश्वत्थामा मार्यो वियो आहे" इएं चयो । हिन कूड़ गाल्हाइण में श्री कृष्ण खे पंहिंजो को बि स्वार्थ कीन हो। पांडव जीतिनि त उन्हनि वटां खेसि कोबि हिस्सो या कमीशन मिलिणी कान हुई, पर जे युधिष्ठिर एतिरो कूड़ु न गाल्हाए हा त द्रोणाचार्य जो मौत नामुमकिन हो ऐं आम जे कल्याण ख़ातिर, उते दुष्टनि जो ख़ातिमो कराइण वास्ते, चालू करायल धर्मयुद्ध में पांडव जीते सघनि, इहो बि मुमकिन न हुओ। युधिष्ठर खे कूड़ गाल्हाइण करे थोरो नुक़्सानु त ज़रुर पहुतो, हिनखे सत्यवादीपिणे में थोरो कलंक लगी वियो, पर हिक माण्हूअ खे थोरो नुक़्सानु थियण सां जे घणनि जो कल्याण थींदो हुजे त उन लाइ कूड़ गाल्हाण जो उत्साह ड्रियारींदड़ श्रीकृष्ण उन पाप कर्म जो हिमायती हूंदे बि उन कर्म जो फलु न भोगियो आहे ऐं संदसि उहो कर्म संचित कर्म में जमउ थी हिन जे कंहिं बिए जनम जो कारण बि बणजी सघियो नाहे। श्री कृष्ण भगुवान पंहिंजे जीवनकाल में चोरियूं कयूं ऐं मखणचोर नाले सां मशहूर थियो। दिव्य मणी चोरायाईं ऐं कूड़ बि केतिरा ई गाल्हायाईं, पर संदसि सभु कर्म सभिनी जे कल्याण ख़ातिर ऐं जगुत जे उद्धार वास्ते कयल हुआ इनकरे भगुवान गीता में चयो आहे, "जन्म कर्म च में दिव्यम्" मुंहिंजो जनम ऐं कर्म बुई अद्भुत आहिनि। मूंखे निजी स्वार्थ वास्ते कुझु बि हासिल करणो आहे ई कीन। छो त आऊं पाण ई ख़ुद परीपूर्ण आहियां।"

"हे अर्जन ! मूंखे टिन्ही लोकनि में कुझु बि कर्तव्य करण वास्ते आहे ई कीन ऐं ख़सीस में ख़सीस हासिल करण योग्य वस्तू बि हासिल करणी न आहे। तड्रहिं बि मां कर्म कंदो ई रहां थो, छाकाण जो जेकड्रहिं आउं सावधानीअ सां कर्म कीन कर्यां त हे अर्जन, बिया सभिनी क़िस्मन जा मनुष बि मुंहिंजे वर्ताअ जो नक़ुलु करे पाण बि इएं हलणु शुरु करे छड्रींदा।"

श्री कृष्ण चवे थो त "मुंहिंजो जनम दिव्य आहे ऐं कर्म बि दिव्य आहिनि।" उनजा टे सबब आहिनि - हिकु त आउं बियनि मनुष जियां माउ जे पेट मां नवनि महिननि तांई मलमूत्र में ऊंधो लटिकी जनम वठंदो न आहियां। पर

आउं पाण अज़ख़ुद प्रगट थियां थो। ब्रियो त मुंहिंजे अग़ियनि जनमनि जा संचति कर्म बाक़ी बचियल न आहिनि ऐं टियों पंहिंजे जीवनकाल दौरान मूं जेकी बि कर्म कया आहिनि से सिर्फ़ लीला ई आहिनि ऐं ब्रियनि जे कल्याण ख़ातिर कयल आहिनि। इहे सभु मूं पंहिंजे कंहिं बि रागद्वेष जे असर हेठि, पंहिंजे कंहिं निजी स्वार्थ वास्ते या कर्तापिणे जे अभिमान सां न कया आहिनि। इनकरे इहे मुंहिंजा कर्म संचित कर्म में जमउ कीन थींदा ऐं मुंहिंजे ब्रिए कंहिं बि जनम वठण जो कारणु बि कीन बणिजंदा। आउं पंहिंजी इच्छा अनुसार जिते बि जड॒हिं बि जहिड़ीअ देहि जी ज़रूरत पवे थी, तहिड़ीअ ई देहि धारण कर्यां थो। संत तुलसीदास भग॒वान वास्ते चवे थो, ''निज इच्छा निर्मित तनु।'' पंहिंजीअ इच्छा सां ई भग॒वान मनुष जो चोलो धारण करे थो। दुनिया जे महापुरुष रामकृष्ण परमहंस, स्वामी रामतीर्थ, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, महमद पयग़ंबर जहिड़नि पंहिंजे जीवनकाल दौरान सिर्फ़ ब्रियन जे कल्याण लाइ कर्म कया आहिनि। तंहिंकरे उहे मुक्त जीव मञिया विया आहिनि।

(24) निष्काम कर्म

कामना रहित कर्म, संचित कर्म में जमउ न थींदा आहिनि। सचु त हर हिकु जीव जेकी बि कर्म करे थो, से कंहिं न कंहिं कामना, इच्छा ऐं आशा सां करे थो ऐं उन ग॒ाल्हि में संदसि डो॒हु बि कोन्हे। जीव फल जी इच्छा रखे या न रखे त बि संदसि कयल कर्म फल डि॒यण खां सवाइ खेसि छड॒ींदा ई कीन। इहो कर्म जो अटल सिद्धांत आहे। पर केतिराई माण्हू कर्म कनि था पर खेनि संदनि कयल कर्म जो फलु खपंदो ई कोन्हे। हीअ ग॒ाल्हि विचित्र न आहे, पर बिल्कुल सची आहे। माण्हू पाप कर्म करे थो पर हुन उन कर्म जो फलु घुर्यो कोन्हे, माण्हू चोरी करे थो, पर हीउ पूलीस खां पकिड़जणु नथो चाहे। छाकाण जो उन जो फलु 'सज़ा' हिन खे खपंदी कान्हे। इनकरे उनजो अर्थु इंएं कोन्हे त हीउ निष्काम कर्म करे रहियो आहे। इन्सान खे पाप कर्म करण जो इच्छा थिए थी, पर खेसि उन कर्म जे फल भोग॒ण जी चाहिना बिल्कुल न थींदी आहे। हिन खे त सिर्फ़ पुञ कर्मनि जो फलु घुरिणो आहे, पर हिन खे पुञ जा कर्म त करणा न आहिनि।

पुण्स्य फलमिच्छान्ति पुण्यं नेच्छन्ति मानवाः ।
म पापफलमिच्छन्ति पापं कुर्वन्ति यत्नतः ॥

पाप कर्म करण वारे खे उनजे फल जी इच्छा कान्हे इनकरे हीउ माण्हू पाप कर्म निष्काम भाव सां करे थो, इंएं समझण न घुरिजे। निष्काम कर्म माना शास्त्रनि जी आशा अनुसार कयल कर्म; धर्म जी मर्यादा अंदर रही, शख़्सी रागुद्वेष खां सवाइ, कर्तापिणे जे अभिमान रहित, ब्रियनि जे कल्याण ख़ातिर पंहिंजे निजी स्वार्थ सवाइ कयल कर्म खे निष्काम कर्म थो कोठिजे।

भगुवान गीता में आज्ञा थो करे त ''मा कर्म फल हेतु भवः'' फल मिले त पोइ कर्म कर्यां। इन भावना सां न, पर पंहिंजो फ़र्ज़ अदाई समझी, संदसि अंतरआत्मा राज़ी थिए उन वास्ते भगुवतप्रीतार्थ, माण्हू कर्म करे त इहो थियो निष्काम कर्म। मनुष सुबुह जो उथण सां ई सुख जी खोज में निकरे थो ऐं सिर्फ़ सुख मिलण वास्ते ई कर्म करे थो। को बि मनुष दुःख जी ख़ोज में निकरी, दुःख वास्ते कर्म न कंदो आहे त बि दुःख डुकी अची थो संदसि गले पवे। इनकरे सुखु या दुःखु प्रारब्ध अधीन आहे, असीं चाहियूं या न, तडुहिं बि सुखु चाहे दुःखु मिलंदो ई।

गुजरात जे श्रीकृष्ण भक्त नरसिंह महेता चयो आहे त -

सुख दुःख मन मां न आणीए, घट साथे रे घडिया,
टाड़या ते कोई ना नव टड़े, रघुनाथ ना जड़िया।

निष्काम भाव सां भगुवत प्रीतार्थ कयल कर्म संचित कर्म में जमउ न थींदा आहिनि ऐं जीव खे जनम मरण जे चकर में बि न विझंदा आहिनि।

सूर्यनाराइण उभरे थो त यकदम ऊंदहि जो अंत अची थो वञे। असीं जे सूर्यनाराइण खे चउं ''असीं तव्हां जा शुकिर गुज़ार आहियूं ऐं उपकार था मञूं जो तव्हां अची गहिरीअ ऊंदहि खे नास कयो आहे।'' त सूर्यनाराइण चवंदो, ''मूं ऊंदहि खे डिठोई किथे आहे? मूं खेसि नासु कीन कयो आहे। पर सिर्फ मुंहिंजे ज़ाहिर थियण सां ई ऊंदहि पंहिंजो पाणई नासु थी वेई आहे। उन में मुंहिंजी कहिड़ी महरबानी ? मुंहिंजीअ हाज़रीअ में बि जे ऊंदहि क़ाइम रहे त पोइ मुंहिंजे अचण जी क़ीमत ई कहिड़ी ?

सूर्यनाराइण न सिर्फ़ आम जे कल्याण ख़ातिर जगुत खे प्रकाश ऐं जीवन

ड्रियण वास्ते करोड़नि किलोमीटरनि जी मुसाफ़री करे थो, पर उन वास्ते हीउ कुझु बि पघार कीन थो घुरे। मुक़रर वक्त खां हिकु पलु बि अचण में देर कीन थो करे। पघार, पेन्शन, ग्रैचुएटी या ब्रीअ कंहिं बि शइ जी खेसि कामना कान्हे। सिर्फ़ आम जे कल्याण ख़ातिर कर्तापिणे जे अभिमान खां सवाइ हीउ कर्म कंदो थो रहे। उन खे निष्काम कर्म थो चइजे।

माउ पंहिंजे नंढ़े ब्रार जी परघोर लहे थी। संदसि ब्रार खे 102 बुख़ार अची वञे ऐं हूअ चइनि ड्रींहनि खां ओजागो करे रही हुजे, उन वक्त तन्हां खेसि चओ, "तोखे 100 रुपया था ड्रियूं, तूं हिन ब्रालक खे पाण वटि न रखु, न संदसि परघोर ई लहु, छाकाण त हीउ ब्रालकु वडो थी पंहिंजी घरवारीअ सां गड्रिजी तोखे ड्राढो सताईंदो ऐं दुःखी कंदो।" माउ तन्हांजी ग्रालिह क़बूल कीन कंदी। भली त अग्रिते हली उहो ब्रालकु खेसि दुःखी करे चाहे सुखी, उन ग्रालिह जो वीचार उन वक्ति माउ खे कीन ईंदो। छाकाण त माउ उन वक्ति निष्काम भाव सां ब्रार जी परघोर करे रही आहे। निष्काम कर्म जा अहिड़ा अनेक मिसाल दुनिया अंदर भर्या पिया आहिनि।

पंज हज़ार पघार खणंदड़ नशाबंदी विभाग जो ऑफ़ीसर जेको कमु न करे सघियो, सो कमु बिना पघार जे महात्मा गांधीअ ऐं ब्रियनि महापुरुषनि करे ड्रेखारियो। जंहिं पघार खाधी, उहो कमु न करे सघियो ऐं जिनि कमु कयो तिनि कड्रहिं बि पघार कीन घुरी। इन्हनि महापुरुषनि ब्रियनि जे कल्याण ख़ातिर निष्काम भाव सां कमु कयो आहे। निष्काम कर्मनि खे ऐं क्रियमाण कर्मनि खे जे कड्रहिं जीव योग रस्ते कंट्रोल में रखे ऐं उन्हनि खे संचित कर्मनि में जमउ थियणु न ड्रिए त पोइ हीउ जनम मरण जे चक्कर खां छुटी सघे थो। हाणे अचो त प्रारब्ध कर्मनि खे कहिड़ीअ रीत क़ाबूअ में रखिजे उन ते वीचार कर्यूं।

(25) प्रारब्ध भोग्रुण सां ई जान छुटे

गुज़रियल जनमनि में कयल क्रियमाण कर्म पची प्रारब्ध जे रूप में साम्हूं अची बीहंदा आहिनि, उन्हनि खे भोग्रुण खां सवाइ ब्रियो को रस्तो आहे ई कीन। जीवन काल में जेतिरनि बि प्रारब्ध कर्मनि भोग्रुण जो निर्णय थियो हूंदो ओतिरा सभु पूरे जा पूरा कर्म भोग्रुण खां सवाइ देहि जो छुटकारो थींदो

ई कीन। वडनि वडनि ज्ञानियुनि, महर्षियुनि, विद्वाननि बि प्रारब्ध खां बचण जी का बि कोशिश न कई आहे ऐं छुटी बि न सघिया आहिनि। राजा परीक्षित जो मिसाल असां पढ़ी आया आहियूं ऐं इहो सिद्धि थी चुको आहे त प्रारब्ध रस्ते फल जे रूप में जेकी कुझु बि प्राप्त थियणो आहे सो अवस मिलंदो ई।

घर जी अणबणत सबब भगुवान राम खे बन में वञिणो पियो। उन वक्ति भरत खे डाढो दुःखु थियो। महर्षी वसिष्टजीअ खेसि दिलदारी डींदे समझायो-

सुनहु भरत भावि प्रबल बिलख कहेउ मुनिनाथ,
हानि लाभ, जीवन मरण जश अपजश विधि हाथ।

"हे भरत बुधु, भावी डाढी ताक़त वारी आहे, मां तोखे पंहिंजे अनुभव सां बुधायां थो त नफ़ो या नुक़्सान, ज़मणु ऐं मरणु, नेकी या बदी इहे छह ग़ाल्हियूं प्रारब्ध ज़े वसि आहिनि, उन्हिन में कंहिंजो बि वसु न थो हले।" प्रारब्ध में जंहिं बि नमूने निश्चित थियल हूंदो, उन नमूने ई सभु कुझु मिलंदो।

रामाइण जो सारो इतिहासु पढ़ी डिसो, उन जे हरहिक प्रसंग में हीअ ग़ाल्हि गोस्वामीजीअ केतिरीअ न ख़ूबीअ सां पेश कई आहे। हाञी कंहिंजी थी ऐं लाभु कंहिंखे पहुतो। अचो त उन डांहं थोरो ध्यान डियूं। हानि कौशल्या माता जी थी। ख़ुद भगुवान राम जे माता कौशल्या खे वडीअ उमर में पंहिंजे हिक ई सिकीलधे पुट ऐं नूंहं खे जुवानीअ में बन वञण जी मोकल डियणी पेई। हाञी थी कोशल्या माता जी ऐं लाभु थियो शबरीअ खे। घर वेठे भगुवान राम अची खेसि दर्शन डिनो। रामजीअ जी सगी माउ हुई कौशल्या पर हिन खे हाञी पहुती ऐं जेका रामजी कुझु बि न न हुई तंहिंखे लाभु पहुतो। हाणे डिसूं त जीवन कंहिं खे मिल्यो ऐं मौत कंहिंखे नसीब थियो? अहिल्या खे मिल्यो जीवन ऐं मौत नसीब थियो राजा दशरथ खे। जंहिंजे चरणनि जी धूड़ जे स्पर्श सां अहिल्या खे जीवनदान मिल्यो उहो ई परीपूर्ण भगुवान रामु पंहिंजे पीउ जे मौत खे रोके कीन सघियो ।

प्रारब्ध डाढो बुलवान आहे। जसु कंहिंखे मिल्यो ऐं अपजसु कंहिं खे नसीब थियो? अपजसु केकईअ खे मिल्यो। कौशल्या खां बि वधीक प्रेम केकईअ जो राम सां हुओ। उन हूंदे बि हिन हिक अहिड़ी अणवणंदड़ ग़ाल्हि कई जो संसार जा सभु माण्हू रामाइण पढ़ण वक्ति केकईअ ते फिट लानत था विझनि।

को बि माण्हू पंहिंजीअ धीउ जो नालो केकई न रखंदो। श्री राम कौशल्या खां वधीक केकईअ खे प्यार कंदो हो। उन हूंदे बि केकईअ खे अपजसु ई मिल्यो।

केकईअ जो आत्मबुलु एतिरो त ज़बरदस्त हुओ जो भगुवान राम खे राक्षसनि जे कुल जो नासु करण लाइ जेको नाटकु करणो हो, उन में खलनायिका (Villain) जो किरदारु अदा करण वास्ते हिन केकईअ माता खे चूंडियो। घणी ई नफ़रत, निंदा सहन कयाईं। पति विञाए विधवा थी, विधवापिणे जा दुःख सठाईं, तंहिं हूंदे बि केकईअ खे जेको किरदार निभाइणो हो, सो बख़ूबी बहादुरीअ सां अदा करे डेखारियाईं। कौशल्या या सुमित्रा खे जेकडहिं हीउ खलनायिका जो किरदारु अदा करण मिले हां त इहे माण्हुनि जे अपमान, निंदा, विधवापिणे जे कारे टिके जे ख़्याल खां ई कंबी वञनि हां ऐं इहो पार्ट बख़ूबी करण खां थिड़की वञनि हां। पंहिंजी सगीअ माता खां बि वधीक प्यारी केकईअ खे भगुवान राम जे हिन खेल में अपजसु नसीब थियो। खेल जो सारो जसु बांदर खणी विया। रावण सां युद्ध करण वक्ति अयोध्या जे सेना जो हिकु बि सिपाही कम कीन आयो। बांदरनि जो लश्करु रामजीअ खे रावण खां जीताइण जो जसु खणी वियो। इनकरे ई मुनी वसिष्टजीअ चयो आहे, "हाञी-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश, विधि हाथ।"

प्रारब्ध में अगर हाञी, लाभ, जीवन-मरण, जस चाहे अपजस जो पक थियल हुजे त उनखे केरु बि मेटे या रोके नथो सघे। जीवन हिक शतरंज जी रांदि आहे, जंहिं में जीव हिक पियादे सिपाहीअ मिसल आहे। जगुत जे हिन खेल में परमात्मा हर हिक जीव खे पंहिंजे प्रारब्ध मूजिब जेको पार्ट अदा करणो आहे, उन मूजिब ई हिनखां प्रारब्ध भोगुण जो पार्ट अदा कराए थो।

घणा माण्हू ज्योतिष जो सहारो वठी पंहिंजो प्रारब्ध ज़ाणण जी कोशिश कंदा आहिनि। प्रारब्ध खे शायद अगुवाट ज़ाणिजे बि, तडहिं बि प्रारब्धु पुठि कीन छडींदी, ज्योतिषि शास्त्र साइंस जियां सफ़ा गणित शास्त्र आहे। ज्योतिष शास्त्र हिकदम सचो शास्त्र आहे, उनखे बुधाइण वारा घणे भाङे खोटा थियनि था छाकाणि त इहे धंधे करण वारा थींदा आहिनि। इनकरे ज्योतिष शास्त्र सचो कूड़ो थी वियो। प्रारब्ध वसि फल जे रुप में जेकी कुझु बि प्राप्त थियणो आहे सो त अवसि ई मिलणो आहे। उनजा टे निमित कारण थी सघनि थ

(1) स्वेच्छा (2) परच्छिा (3) अनिच्छा यानी पंहिंजी इच्छा, ब्रिए जी इच्छा ऐं बिना इच्छा (इच्छा रहित)

स्वेच्छा कृत - फलभोगु

कंहिं फल भोगुण वास्ते को कर्म पंहिंजी मरज़ीअ सां पंहिंजे हथां थी वञे त उनखे स्वकृत इच्छा फलभोगु कोठिजे थो। जीअं त बाहि में पंहिंजो हथु विझण जी इच्छा थियण सां बाहि में हथु विझिजे ऐं हथु सड़ण जो ईज़ाउ सहिजे।

परेच्छा कृत - फलभोगु

इनजी माना आहे कंहिं ब्रिए जी इच्छा सां फलभोगु थिए। मिसाल तोर कंहिं माण्हूअ खे असां जो भलो या बुरो करण जी इच्छा थिए ऐं पंहिंजीअ इच्छा वसि थी असां जो भलो या बुरो करे ऐं असां खे उनजो भलो या बुरो फल भोगिणो पवे। समझो त मुंहिंजे घर बाहि लगुण जो प्रारब्ध मुक़रर थी चुको आहे ऐं को माण्हू मुंहिंजे पाड़े में रहण वारो, वेर, हसद विचां मुंहिंजे घर खे बाहि लगाए, उन रीति ब्रिए जी इच्छा सां पंहिंजे घर सड़ण जो प्रारब्ध भोगियां।

अनिच्छा कृत - फलभोगु

प्रारब्ध त भोगुणो ई पवे थो, पर उनजे फल भोगुण जी असांजी मरज़ी बिल्कुल न हुजे तड़हिं पिण इच्छा न हूंदे बि असां खे उनजो फलु भोगुणो ई पवे थो। मिसाल तोर को वणु या मकान ओचितो अची असां मथां किरे या असीं कंहिं सही सलामत जगुहि ते फुटपाथ ते बीठा हुजूं उन हूंदे बि कंहिं मोटर ड्राईवर जे भुल सबब या कंहिं मोटर जी ओचितो ब्रेक फ़ेल थी वञण सबब मोटर फुटपाथ ते चढ़ी वञे ऐं असां खे ज़ख़्मी करे या मारे विझे।

उन नमूने प्रारब्ध भोगुण में परतंत्र हूंदे बि स्वेच्छा कृत ऐं परेच्छाकृत फल भोगुण वक्ति असीं कामनाउनि, वासनाउनि या रागुद्वेष वस थी जेके बि नवां क्रियमाण कर्म कर्यूं था, से वापस संचित कर्म में जमउ थी अगिते हली प्रारब्ध जे रुप में साम्हूं अची खड़ा थी बीहनि था।

बुद्धी कर्मानुसारिणी

प्रारब्ध भोगुण में जीव परतंत्र आहे, तंहिंकरे संदसि बुद्धी प्रारब्ध कर्मनि

अनुसार ई थींदी आहे जंहिं क़िस्म जो प्रारब्ध भोगि॒णो हूंदो आहे, तंहिं क़िस्म जी बुद्धी अचे थी। माण्हू केतिरो बि समझू ऐं सियाणो छो न हुजे तड॒हिं बि प्रारब्ध भोगु॒ण वक्ति उल्टी बुद्धी, ऊंधी समझ वापराईंदो डि॒सण में ईंदो। असां खे अजबु लगु॒ंदो त हहिड़ो समझू माण्हू जेको कंहिं खां बि ठगि॒जी न सघे ऐं कंहिं जे चंबे में बि अची न सघे सो हाणे कीअं फासी पियो। पर संदसि प्रारब्ध कर्म खेसि अहिड़ी ई वाट डे॒खारीनि था जो हिकु महा मूर्ख इन्सान बि अहिड़ी भुल न करे। इनकरे हीउ अक़ुलमंद इन्सान फासी पवे थो। छाकाण त प्रारब्ध कर्म पंहिंजो फल भोगा॒इण वास्ते खेसि अहिड़ी बुद्धी डि॒यनि था।

हिकु कूओ सजी॒ रात ओजागो॒ करे घर जी कुंड में पियल हिक टोकरीअ खे ऊंदहि में वेही थो कुतिरे। इहो सोचे त उन टोकरीअ में पियलु खाधो या फल, मिठाई खाईंदुसि। सजी॒ रात टोकरी कुतिरे उनमें टुं॒गु कयाईं। पोइ जंहिं वक्ति पंहिंजो मुंहुं खाधो खाइण वास्ते टोकरीअ में विझण लगो॒, उन वक्ति टोकरीअ में लिकलु नांगु ब॒ाहिर अची कूए खे खाई थो वञे। अहिड़े नमूने नांग खे कूए जो भोजु॒नु बि थो मिले ऐं मुक्ति पिण मिले थी। सजी॒ रात ओजागो॒ करे टोकरी कुतिरिण जी महिनत उनजे मौत जो कारण बणी। छाकाण त प्रारब्ध में संदसि वास्ते उन क़िस्म जो मौत लिखियलु हो ऐं बुखायल नांग वास्ते उन नमूने खाधो हासिल थियणु संदसि प्रारब्ध में लिखियलु हो। जो खेसि बिना कंहिं महिनत करण जे मिली वियो।

कापे उंदर करंड़ियो, साप उंदर ने खाय,
उद्योगे अवड़ो पड़े घणीनुं धार्युं थाय।

अर्थात : कूओ टोकरी कुतिरे थो, नांगु कूए खे खाए थो, कूए जी महिनत अजाई वेई। मालिक जी इच्छा सां ई सभु कुछु थिए थो।

हिक माकोड़े जो प्रारब्ध मोटर जे फीथे हेठां दबि॒जी मरण जो मुक़रर थी चुको हो। उहो माकोड़ो जंहिं वक्ति रस्ते तां लंघे रहियो हूंदो ऐं साम्हूं मोटर ईंदी डि॒संदो त हिकदम पंहिंजे बचाव जी प्रबु॒ल इच्छा सां गोसड़ियूं पाईंदो डु॒कंदो मोटर जे फीथे तरफ़ ई रुखु रखंदो ऐं हेठां अची दबि॒जी मरी वेंदो पाणु बचाइण जी इच्छा सां कयलु उहो डु॒कण जो पुरषार्थ संदसि प्रारब्ध

अनुसार खेसि मोटर जे फीथे तरफ़ ई डुकाईंदो। संदसि प्रारब्ध अनुसार ई खेसि समझ ईंदी ऐं ज्ञाणी वाणी पुरषार्थ करे मोटर जे फीथे हेठां अची मरण जो प्रारब्ध में लिखियलु फलु भोगे थो। जेकड़हिं हू को बि पुरषार्थ न करे, जिते हो उते ई बीठो हुजे हा त जेकर बची वञे हा। पर खेसि प्रारब्ध भोगाइण वास्ते संदसि बुद्धीअ खेसि मोटर जे फीथे तरफ़ डुकण वास्ते उत्साहित कयो। प्रारब्ध भोगाइण वास्ते बुद्धी कर्म खे रस्तो डेखारे थी।

जहिड़ो प्रारब्ध, तहिड़ी अचे थी समझ।

गोस्वामी तुलसीदासजी लिखनि था त-

तुलसी जैसी भवितव्यता, तैसी मिलहीं सहाय,
आपुनु आवाहिं ताहि तहां लेई जाई ।

जेकी कुझु बि जिते बणिजणो हूंदो उते असांजो प्रारब्ध असांखे गिहिलींदे वठी वेंदो, या त इहो पाण असां वटि अची पहुचंदो ऐं कीअं बि करे असां खे फल भोगाए तंहिंखां पोइ ई असांजी पुठि छड़ींदो। प्रारब्ध भोगुण में चङनि भलनि जी बुद्धी बि ऊंधी थी वञे थी। पुराण ऐं शास्त्र इन गाल्हि जी शाहिदी डियनि था।

असंभव हेममृगस्य जन्म, तथापि रामो लुलुभे मृगाय,
प्रायः समापन्न विपत्ति काले, धीयोऽपि पुसांम् मलिनी भवन्ति।

"सोन जो हरणु नामुमकिन हूंदे बि राम उन वक्ति भुलिजी पियो। छाकाण त अग्रियां कोई महान प्रारब्ध मुक़रर थी चुको हो। प्रारब्ध खे भोगुण वास्ते महान बुद्धीशाली माण्हूअ जी बुद्धी बि उन तरफ़ ई डुके थी।"

न निर्मितः केन न दृष्ट पूर्व, न श्रूयते हेममय कुरङ्गः ।
तथापि तृष्णा रघुनन्दनस्य, विनाश काले विपरित बुद्धिः ॥

ब्रह्मा जे हिन सृष्टिअ ते सोन जो हरणु न कंहिं जगहि ते कंहिं डिठो आहे न बुधो आहे। तंहिं हूंदे बि भगवान राम खे उनमें तृष्णा जागी। छाकाण मारीच, रावण ऐं सजे राक्षस कुल जो नासु करण लाइ भगवान राम खे अहिड़ी ई मति आई।"

रावण वडो वीचारवान ऐं महाज्ञानी हो, सभिनी वेदनि शास्त्रनि जो ज्ञाणू हो। भगवान शंकर जो परम भगतु हो, पूलस्त्य कुल जो पवित्र ब्राह्मण हो,

साणु साणु वड्डो सूरवीर हो। नव ग्रह सज्जो वक्त उनजी सेवा में हाज़िर रहंदा हुआ। वायुदेवता संदसि महिल में बुहारी पाए सफ़ाईअ जो कमु कंदो हो। वरुणदेवता संदसि महिल में पाणी भरण जो कमु कंदो हो। अहिड़ो ज्ञानी ऐं शक्तिशाली राजा हूंदे बि संदसि बुद्धी विपरीत थी वेई। प्रारब्ध वसू पंहिंजी बुद्धी सीता खे भज्जाइण में लगाए छड्डियाईं ऐं उन सबब ई संदसि अंत आयों।

"कौरव को मूर्ख कीन हुआ, गुरु द्रोणाचार्य जा शिष्य हुआ, अर्जन ऐं युधिष्ठिर सां गड्डु पढंदा हुआ। धर्म माना छा ऐं अधर्म माना छा? इन जो हिननि खे पूरो पूरो ज्ञान हो। ख़ुद दुर्योधन महाभारत में क़बूल कयो आहे,

जानामि धर्म न च मे प्रवृतिः
जानामि अधर्मम् न च मे निवृतिः।
केनापि देवेन हृदि स्थितेन
यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि॥

धर्म ऐं अधर्म जो ज्ञान हूंदे बि अंतःकरण में बाक़ी बचियल कामनाऊं ऐं वासनाऊं प्रारब्ध भोगुण वास्ते बुद्धीअ खे ऊंधों करे थियूं छड्डिनि।

कर्म बुद्धीअ अनुसार

इनकरे उल्टो र्कियमाण कर्म करण में जीव स्वतंत्र हूंदे बि संदसि नओं क्रियमाण कर्मु, संदसि शुद्ध-अशुद्ध बुद्धीअ अनुसार ई थिए थो। जेतिरी बुद्धी शुद्ध ऐं सात्त्विक, ओतिरोई संदसि नओं क्रियमाण कर्मु शुद्ध ऐं सात्विक थिए थो। भगुवत गीता में इनखे धंघोड़ी बुद्धी करे कोठियो वियो आहे । नएं क्रियमाण कर्म करण में बुद्धीअ ते जीव खे ज़ाब्तो रहे थो, इनकरो धंघोड़ी बुद्धीअ जो जीव जेतिरो उपयोग करे सघे, ओतिरो ई हीउ सुठो कार्य करे सघे थो। पर जन्म जनमांतरनि जे कामनाउनि ऐं वासनाउनि जा पर्दा (तह) त जीव जे अंतःकरण जे दरीअ मथां ज्जावा पिया आहिनि, इनकरे जीव कामनाउनि ऐं वासनाउनि जे वसि थी वञे थो ऐं संदसि बुद्धी हिन खे नवां खोटा क्रियमाण कर्म करण में उत्साहित करे थी। जेकी अग्रियां हली प्रारब्ध बणजी संदसि साम्हूं अची था बीहनि। हीउ जीव पंहिंजे कामनाउनि ऐं वासनाउनि खे जेकड्डहिं बराबर क़ाबूअ में रखे, (हीअ ग्राल्हि संदसि हथ वसि आहे ऐं उनखे क़ब्ज़े में रखण जी परमात्मा तर्फ़ां खेसि पूरी ख़ुदमुख़्तियारी मिलियल आहे।) त पोइ

संदसि बुद्धी धंधोड़ी यानी शुद्ध ऐं सात्विक बणजी कुकर्म करण खां हटाए, धर्म, न्याअ ऐं नीतीअ सां हलण में खेसि मदद करे थी। इन जी माना ईएं थी त प्रारब्ध भोग॒ण में बुद्धी कर्म अनुसार बणजे थी, यानी जहिड़ो कर्म तहिड़ी बुद्धी ऐं जहिड़ी बुद्धी तहिड़ो कर्म, प्रारब्ध भोग॒ण में जेको अग॒िले जनम में कर्म कयलु हूंदो, तहिड़ी ई बुद्धी थिए थी ऐं क्रियमाण कर्म करण में जहिड़ी बुद्धी, तहिड़ो ई थिए थो नओं कर्म, प्रारब्ध भोग॒ाइण में बुद्धी अग॒ु कयल कर्मनि जे हुकुम में रही वर्तिजे थी। जड॒हिं नओं क्रियमाण कर्म करण में कर्म बुद्धीअ जे हुकुम हेठि रही कजे थो। जहिड़ी बुद्धी, तहिड़ो कजे थो कर्म।

(26) ग्रह ऐं नक्षत्र प्रारब्ध भोग॒ाइण में कहिड़ी मदद था कनि?

जीव जो जहिड़ो प्रारब्ध मुक़रर थियो हुजे तहिड़ा ई ग्रह ऐं नक्षत्र संदसि ज॒मण वक्ति पंहिंजीअ पंहिंजीअ जाइ ते अची था बिहनि। जीव जे जीवन काल में शुभ अथवा अशुभ प्रारब्ध भोग॒ाइण वास्ते उन मूजिब ग्रहनि ऐं नक्षत्रनि जी गति रहे थी। उन्हनि जी गतिअ जो हिसाबु कर्म सां जीव जे जीवन काल में कहिड़ो वक्तु सुठो या ख़राब ईंदो, इहो सचा ग्रह गोचर ड॒िसंदड़ ज्योतिषी ज॒ाणी सघनि था।

ख़राब वक्त में जीव जाग्रत रही शुभ कर्मनि में वधीक मनु लग॒ाए सघे थो। यानी ज्योतिष शास्त्र जीव खे कल्याणकारी प्रवृतिअ में जोड़ण जो मार्गदर्शन कराए थो ऐं उन मूजिब जेकड॒हिं को बि जीव कल्याणकारी प्रवृतिअ में पाण खे जोड़े त पोइ खेसि ग्रहनि ऐं नक्षत्रनि खां डिज॒ण जी बिल्कुल ज़रुरत कान्हे, राहू, केतू, गुरु, मंगल, बुध, वग़ैरह ग्रह तमाम वड॒ा उत्तम पवित्र नीतीवान ऐं ईमानदार अमलदार कर्म जे क़ाइदे खे अमल में आणण वास्ते मुक़रर थियल आहिनि। इहे कर्म जे क़ाइदे जी मर्यादा अंदर रही, जीव खे संदसि शुभ या अशुभ प्रारब्ध भोग॒ाइनि था, पर खेसि उन खां बचणु कीन था ड॒ियनि।

हीउ उच कोटीअ जा पवित्र ऐं ईमानदार अमलदार दुनिया जे ब॒ियनि केतिरनि अमलदारनि जियां लालची या रिश्वतख़ोर न आहिनि। सज॒ी हयाती मंगलवार ड॒ींहुं असीं हिकु वेलो रोटी खाऊं, शुक्रवार जो भुग॒ड़ा खाई गुज़रान कयूं या शनिवार जो हिकु वेलो रोटी खाई वक्तु कातियूं, तड॒हिं बि प्रारब्ध भोग॒िणो ई पवंदो। अहिड़ा उपवास करण करे जेतिरो वक़्तु जीव पाप करण

खां बचंदो, ओतिरोई खेसि फ़ाइदो पहुचंदो। बाक़ी हीउ ग्रह ऐं नक्षत्र जीव खे प्रारब्ध भोगुण खां पूर्ण मुक्ति ड्रियारे न था सघनि।

असीं चोरी कयूं त पुलीस असां खे पकड़े वठी वेंदी, जे असांजी पुलीसवारनि सां वाक़िफ़्यत हुजे त वधि में वधि असांखे ब्रीड़ी, सिगरेट पीअण जी छूट ड्रियनि था, ब्रु टे ड्रंडा घटि हणनि, बसि एतिरोई पर पुलीस वारो असां खे सफ़ा छड्रे न सघे। ऐं जेकड्रहिं हीउ असांखां रिश्वत वठी वाक़िफ़्यत करे या सिफ़ारिश करे छड्रे ड्रिए त पुलीस वारो पाण खुद नौकरीअ खां मौक़ूफ़ कयो वञे। ग्रह ऐं नक्षत्र बि वड्रा ईमानदार अमलदार आहिनि। असीं उन्हनि जी पूज़ा अर्चना कयूं त असांखे प्रारब्ध भोगाइण में मानसिक शांति, राहत ड्रेई सघनि था, पर प्रारब्ध मां संपूर्ण मुक्त करे कीन था सघनि। उन्हनि जी उपासना कंदे असीं सात्विक वृतियुनि जो पालन कयूं त प्रारब्ध कष्टदाइक कीन बणजंदो, यानी प्रारब्ध भोगुण में दुःख घटि महिसूस कंदासूं। जीअं कंहिं ब्रार खे धकु लग़े ऐं हू रोअणु शुरु करे ऐं उन वक़्ति असां खेसि का मिठाई या रांदीको हथ में ड्रियूं त हू रोअणु बंदि कंदो, इनजो मतिलबु इहो कीन थियो त संदसि धकु लगुण जो दुःख लही वियो, दुःख त वक़्त सिर मिटिजंदो, हा - बाक़ी संदसि वृति दुःख मां हटी वञी मिठाईअ या रांदीके में पेई, इनकरे हिन रोअणु बंदि करे खिलणु शुरु कयो। बसि इन रीत व्रत नेम, पाठ, पूज़ाऊं असां खे पंहिंजे प्रारब्ध खिलाए खिलाए भोगाइनि थियूं।

असीं पाड़े मां ब्राह्मण खे घुराए हिनजी ड्रखिणा (दक्षिणा) मुक़रर करे पंहिंजे लाइ कंहिं ग्रह जो जपु करायूं ऐं असीं पाण ख़ुद पाप कर्म कंदा वञूं त पोइ हीउ ग्रह असां खे प्रारब्ध भोगुणु में थोरी बि सहूल्यत करे न ड्रींदा। ग्रहन खे उन नमूने खोटी सिफ़ारिश, वाक़िफ़्यत, रिश्वत, ड्रियण जो वीचार कड्रहिं बि न करणु घुरिजे (खेसि पाण शक़्सि तरह प्रसन्न करण जो यतनु करणु खपे। यानी असांखे पंहिंजे ग्रहनि जो पाठु पूज़ाऊं पाण ख़ुद करणु घुरिजनि ऐं न कंहिं विचवारे जे मारफ़ति।)

असीं हनुमानजीअ खे प्रार्थना कयूं, "हे हनुमान दादा तव्हीं जे मूंखे हिकु सौ दब्रा तेल जा खब्रे हथ सां ड्रियारींदा (ग़लत तरीक़े सां) त उन्हनि मां हिकु दब्रो तेल जो मां तव्हां जे मथां भोगु लग़ाईंदुसि।" हनुमानजी हिकदमु

असांखे चवंदो त मां काके मां फिरी भाइटियो थियणु न थो चाहियां। यानी प्रार्थना क़बूल न कंदो, इनजो मतिलबु इहो आहे त हू वड़े मां नंढो थियणु न थो चाहे। अहिड़ी अजाई वाहियात उमेद रखी पाण खे ख़राब कीन करणु घुरिजे।

जेको माण्हू सिधे रस्ते हलंदो हूंदो, उनखे ख़राब में ख़राब पुलीस वारो बि सताए कीन सघंदो पर जेको माण्हू रस्ते ते चोरी करण जे ख्याल खां निकितो हुजे, उहो पूलीस वारे खां डिजुंदो ई रहंदो ऐं जे चोरी कंदो त पुलीस वारो खेसि पकिड़ण खां बि कीन हबिकंदो।

अहमदाबाद खां मुंबईअ जी टिकेट वठी असीं गाडीअ में वेहूं त पोइ सजी रात निंडूं कंदा सुख सां अची मुंबईअ पहुचंदासूं। पर जे टिकेट वठण खां सवाइ सफ़र कयूं त रस्ते में जेकी बि माण्हू पिया चढ़ंदा उन्हनि सभिनी में असांखे टी.टी.ई नज़र ईंदो, असीं बिना डप जे वेही बि कीन सघंदासूं। इनकरे जेको बि प्रारब्ध असां जे साम्हूं अचे त उनखे प्रेम सां स्वीकार करणु घुरिजे। छाकाण त असां जे पहिरिएं कयल क्रियमाण कर्मनि जो इहो फलु आहे। इनकरे असां खे नेकदिलीअ सां इहो भोगुण घुरिजे। इनमां बचण वास्ते का बि कोशिश न करणु घुरिजे। शुभ कर्मनि में रुधल रहणवारे खे प्रारब्ध भोगुण में उत्तम बुल प्राप्त थींदो आहे।

(27) नाम सिमरण प्रारब्ध भोगुण में कहिड़ी मदद थो करे?

पंहिंजे इष्टदेव जो सिमरण ऐं जपु, जीव खे प्रारब्ध भोगुण में घणी मदद थो करे। रामनाम त संसार चकर में फाथल जीव खे भवसागर मां मुक्ति डियारे थो। नाम जपु त रामबाण औषधि (दवा) आहे। जंहिं सां जीव जो वडे में वडो रोगु (जनम मरण जो चकर) मिटिजी थो वञे। हीअ गाल्हि बिल्कुल सची आहे त नाम सिमरण हिक उच्च कोटिअ जी दवा आहे। हीअ दवा आयुर्वेदिक दवा जहिड़ी आहे। अंग्रेज़ी दवा करण सां वात जी परहेज़ न कबी आहे। असीं सुयूं हणाईंदा रहूं, गोयूं खाईंदा रहूं ऐं तेलु, मिर्च, खटाई बि खाईंदा रहूं। अंग्रेज़ी दवा में किरीअ ते ख़ास ज़ोर न भरींदा आहिनि, पर आयुर्वेदिक दवा करण वक्ति किरीअ जो पालन करिणो पवंदो आहे ऐं परहेज़ करण में जे थोरी बि भुलचुक थी वञे त दवा बेकार बेअसर थी पवंदी आहे ऐं

रोगीअ ते उल्टो असर कंदी आहे। अंग्रेज़ी दवा दर्द खे दबाए जल्द राहत डियारे थी, पर रोगु खे जड़ खां पटे नथी सघे। आयुर्वेदिक दवा सख़्त परहेज़ कराए ऐं धीरे धीरे रोगु खे पाड़ खां पटे थी छडे। रामनाम जपु पिण आयुर्वेदिक औषध जहिड़ो ई आहे। जीव खे जेको हिन जनम जो रोगु (भवरोगु) लगी वियो आहे, तंहिंखे हीउ पाड़ खां ई पटे ख़तम करे थो ऐं जीव खे ब्रेहर प्रारब्ध भोगुण वास्ते जनम मरण जे चकर में पवणु कीन थो डिए ऐं जीव खे मुक्ति डियारे थो छडे पर हिन औषध करण में सख़्त किरीअ (परहेज़) जी ज़रुरत आहे। हिक भगुत सख़्त किरीअ जी लिस्ट तैयार कई आहे,

हरिका नाम रसायण सेवे, किंतु अगर परहेज का पालन न हो,
सो नाम रटन का फल मिले नहीं, और भवरोग निवृत हो नहीं।

(1) कूड़ गाल्हाइण खां पासो करणु
(2) कंहिंजी बि गिला या निंदा न करणु ऐं न बुधणु
(3) पंहिंजी साख न सुणणु ऐं न कंहिंजी ख़ुशामद करणु
(4) आलिस असुल न करणु
(5) पराए धन खे धूड़ समान समझणु
(6) पराई स्त्रीअ खे माता समान समझणु
(7) पंहिंजे भजुन खे ज़ाहिर न करणु
(8) अभिमान में न अटिकणु
(9) आए जो आदर करणु
(10) लोभ ऐं मोह में न फासणु

लिस्ट वडी आहे पर उन मां ख़ास कड़ियूं हिति ज्ञाणायूं आहिनि। इहे सभु किरियूं या उन्हनि मां का बि हिक अधु करे जेकडहिं जीव चंङीअ तरह पालन करे त उन जीव खे नाम जपु नामक दवा लागू पवे थी ऐं प्रारब्ध भोगुण में खेसि वडी मदद मिले थी। पर मुंहिंजो ऐं तव्हांजो इहो अनुभव आहे त उन्हनि मां हिक बि परहेज़ असां ईमानदारीअ सां पाले नथा सघूं। इनकरे प्रारब्ध भोगुण में असां खे चङे नमूने मदद नथी मिले। जेकडहिं असां मथे ज्ञाणायल परहेज़ बराबर पालन न कयूं त पोइ भलु सजी हयाती नाम जपींदा रहूं या लिखंदा रहूं, सभु व्यर्थ आहे, उल्टो उन मां जीव में पाखंड, मिथ्याचार अची

थो वञे, जेको खेसि वडो नुक़्सान पहुचाए थो, सिर्फ़ राम नाम जपण सां जेकड़हिं जीव जो उद्धार थींदो हुजे त राम नाम वारे टेप रिकार्डर या ग्रामोफ़ोन जो जेकर सभ खां अगु उद्धार थी वञे हा। घणा माण्हू सारी हयाती राम नाम जपींदा रहंदा आहिनि। पर वहिंवार में मथे ज़ाणायल परहेज़ कीन कंदा आहिनि। इन करे संदनि उद्धार कडहिं बि कोन थींदो ऐं थियणो बि न आहे। इहो आहे सिर्फ़ पाण खे ठगणु ऐं पाण ते वधीक बोझो चाढ़णु। अखे भगुत सचु चयो आहे त-

तिलक करतां त्रेपन वह्यो, जपमाड़ा ना नाका गया,
कथा सुणी सुणी फूटयां कान, तो य न आव्युं ब्रह्म ज्ञान।
एक मूर्ख ने ऐवी टेव पथ्थर एटला पूजे देव,
तुलसी देखी तोड़े पान, पाणी देखी करे स्नान।

अर्थात्: तिलिक ड्रींदे ड्रींदे 53 साल गुज़री विया। नाम सिमरण वारी माला जे मोतियुनि जा टुंग बि वडा थी विया, कथा बुधी बुधी बोड़ा थी वियासीं। तडहिं बि ब्रह्मज्ञान कीन मिल्यो।

हिक मूर्ख इन्सान खे अहिड़ी आदत हुई त जेकी बि पथ्थर डिसे उनखे भगुवान समझी उनजी पूजा कंदो हो ऐं तुलसी डिसी करे उन जा पन टोड़े ऐं पाणी डिसी स्नान कंदो हो।

तडहिं बि उन जो भवरोग मिटिजंदो कीन, छाकाण त हीउ मथे ज़ाणायल किरियुनि जो पालन कीन थो करे, असीं जे शुरुअ खां वठी मथे ज़ाणायल परहेज़ कंदा रहूं त पोइ असां खे रोगु थींदो ई कीन। इनकरे असां खे दवा जी ज़रूरत बि कान पवंदी ऐं जेकडहिं असां परहेज़ न था कयूं त पोइ दवा वठण जी ज़रूरत बि कहिड़ी आहे? छाकाण त सिर्फ़ दवा असांखे फ़ायदो कीन रसाईंदी। इहा परहेज़ जे बराबर कयूं त पोइ राम नाम जपियूं या न, गाल्हि मिड़ई सागी आहे।

कुता, बिला, घोड़ा, गडह या बिया पखी पसूं, कीड़ा, माकोड़ां वग़ैरह राम नाम न था वठनि त बि उन्हनि जे मथां भगुवान जी दया दृष्टि हिक सरीखी रहे थी । कबीर भगतु हिक बी बि सुठी किरी बुधाए थो -

आऊं हरीअ जो, हरी आहे मुंहिंजो रखपाल,

इहो विश्वास वञे कीन,
हरी करे जेकी, उन में आहे भलो मुंहिंजो,
इहो निश्चो बदिलजे कीन।

अर्थात् : मां हरीअ जो, हरी मुंहिंजो रक्षकु, इहो विश्वास कड॒हिं वञे कीन। जेको हरी कंदो सो मुंहिंजे भले लाइ ई कंदो। इन ग॒ाल्हि जी असां खे पक हुजणु घुरिजे।

(28) भगु॒वान प्रारब्ध भोगु॒ण में कहिड़ी थो मदद करे?

असीं मथे पढ़ी आया आहियूं त क्रियमाण कर्म खे कंट्रोल करण में निष्काम कर्मयोग वड॒ी मदद करे थो तीअं प्रारब्ध कर्मनि खे कंट्रोल करण में भगि॒ती योग वड॒ी सहायता करे थो। भगु॒वान जी भगि॒ती करण सां प्रारब्ध भोगु॒ण में घणी मदद मिले थी, इहा हिक हक़ीक़त आहे। संत ऐं शास्त्र पिण इन ग॒ाल्हि जी शाहिदी भरीनि था। पर भगु॒वान जी भगि॒ती माना छा? हीअ ग॒ाल्हि बराबर समझणु घुरिजे। भगु॒वान जी भगि॒ती आहे संदसि आज्ञा अनुसार हलति हलणु। आऊं पंहिंजे पीउ जो भगु॒तु हुजां, सदाईं संदसि गुण ग॒ाईंदो रहां, पर संदसि चयो असुल कीन मञां। हू मूंखे स्कूल में पढ़ण वञण वास्ते चवे ऐं आऊं पढ़ण बदिरां फ़क़त रुलंदो वतां, हू मूंखे घर में तूफ़ान मचाइण खां मना करे ऐं आऊं तूफ़ान मचाईंदो ई रहां त पोइ मूं सिर्फ़ संदसि नाले गि॒न्हण या गुण ग॒ाइण करे हिन जी का भगि॒ती कई ईएं समझणु न घुरिजे। पर उल्टो पंहिंजी ग़लत हलति करे, मूं हिन खे नाराज़ कयो, संदसि अपमानु कयो, ईएं समझणु घुरिजे। धर्म अनुसार भगु॒वान जी आज्ञाउनि जो पालन न करे सिर्फ़ संदसि नालो वठी ग॒ाए, तिलिक लग॒ाए, मंदिर में दर्शन करण वञणु वग़ैरह असीं जे उन तरह हलण खे भगि॒ती समझूं त इहा असांजी वड॒े में वड॒ी भुल आहे। सज॒ी रात झांझूं वज॒ाइण सां को भगु॒तु थी कीन सघंदो। भगु॒त जा लछण गीता जे ब॒ारहें अध्याअ जे आख़रीनि श्लोकनि में भगु॒वान ब॒ुधाया आहिनि। उन्हनि में भगु॒वान ईएं कीन चयो आहे त जेको चइनि फुटनि जी चोटी रखंदो या ड॒ेढ फुट जी ड॒ाढ़ी रखंदो ऐं लूंगी या त जणियो पाईंदो, उहो ई मुंहिंजो भगु॒तु लेखिजण में ईंदो। भगु॒त जा लछण पंहिंजे मुखारविंद सां भगु॒वान हेठीअं रीति ब॒ुधाया आहिनि-

अद्वेष्टा सर्व भूतानां मैत्रः करुण एव च।
निर्ममो निरहंकार, सम दुःख : सुखः क्षमी।।
संतुष्टः सतत योगी यतात्मा दृढानिश्चयः।
मयिं अर्पित मनोबुद्धिर्यो मद् भक्तः समे प्रियः।।

जेको कंहिं बि प्राणीअ सां द्वेष न थो रखे, सभिनी सां मित्रता ऐं दया दृष्टि सां हले थो, मोह, ममता ऐं अहंकार खां परे आहे, सुख ऐं दुःख में समान रहे थो , खिम्यावान आहे सदाईं संतोषी, मन ऐं इन्द्रियुनि खे वस में रखदंड़ु, मौन में पको निश्चो रखण वारो, सुख, ईर्खा, भव ऐं रंज खां आजो आहे, इच्छाउनि खां रहित, वेदिक कर्मनि जे अभिमान जो त्यागु कंदड़ आहे, अहिड़ो भगुतु मूंखे प्यारो आहे। मथे ज्ञाणायल लछणनि मां हिकु बि लछणु जे असां में न हुजे त पोइ असीं पाण खे भगुत कीअं था कोठे सघूं ऐं भगुवान जा प्यारा बि कीन था थी सघूं।

मां सभिनी खे बुधायां त ''मां बिरला सेठ जो पुटु आहियां।'' ईएं चवण सां बिरला सेठ जे माल मिल्कियत मां मूंखे को हिस्सो कीन मिलंदो। पर जे बिरला सेठ पाण उथी ज़ाहिर करे त मां संदसि पुटु आहियां। त पोइ मूंखे उन जे माल मिल्कियत मां हिस्सो मिली सघे थो। सागीअ रीति भगुवान पाण चवे त, ''यो मद् भक्तः स मे प्रियः'' (ही मुंहिंजो भगुतु मूंखे प्यारो आहे।) त पोइ मूंखे बि मीरां ब्राईअ, नरसिंह महेता ऐं ब्रियनि भगुतनि जियां पंहिंजे प्रारब्ध भोगुण में मदद मिली सघे थी। इहो तड़हिं थी सघे थो जड़हिं मां भगुवान जा बुधायल लछण धारण कंदो हुजां ऐं कुछ लछणनि जो अमल कंदो हुजां। कंहिं बि हिक लछण खे जीवन में उतारण सां बाक़ी ब्रिया लछण पंहिंजो पाणई उन जे पोयां हल्या ईंदा आहिनि। सभिनी लछणनि में जड़ आहे सचु ग़ाल्हाइणु। इन हिक लछण खे क़ाबूअ में रखण जी सख़्त ज़रूरत आहे। उनखां सवाइ भगुवान त जगुत जो पिता आहे ऐं उहो पंहिंजनि सचनि चाहे कूड़नि, ठगुन चाहे भगुतनि ईएं सभिनी जे मथां कृपा दृष्टि रखे थो। छाकाण त हू दया जो सागरु आहे। ''आहीं तूं सदा सलामत, असां आहियूं तुंहिंजा ऐं तुंहिंजो हथु आ असां मथां।''

मां पंहिंजे पीउ जी आज्ञा जो पालन कयां ऐं संदसि मना करण खां पोइ बि

भित्यूं टिपंदो ऐं सजो ड्रींहुं अजायो ग़ाल्हाईंदो वतां ऐं कंहिं ड्रींहं जेकड्रहिं मुंहिंजो पेरु भज़ी पवे त मुंहिंजो पीउ मूं ते दया करे मूंखे कंहिं हड्रनि वारे डॉक्टर वटि वठी वेंदो। डॉक्टर जी फ़ी ऐं रिक्षा जो भाड़ो वग़ैरह बि हू ख़र्चींदो। डॉक्टर वटां घर वापस वठी ईंदो ऐं टाईम ते दवा पिण ड्रींदो। हर क़िस्म जी सेवा पिणि कंदो। हर वक्त मिठा ब्रोल ब्रोले मूंखे दुःखु महिसूस थियण न ड्रींदो। पर जे मां उनखां ग़ैरवाजबी घुर कयां त, "बाबा, मूंखे पेर में ड्राढो सूरु आहे सो ऊहो सूरु खणो त उहो सूर मुंहिंजो पीउ मूंखां वठी कीन सघंदो। उहो सूरु त मूंखे ई सहिणो पवंदो । साग़ीअ रीति असीं बि जे भग़वान जे आज्ञाउनि जो पालन न करे, कुकर्म कंदासूं त पोइ इहे पची प्रारब्ध जे रूप में असां जे साम्हूं अची बिहनि था ऐं पोइ प्रारब्ध त असांखे पाण ई भोग़िणो पवे थो। उन कर्म जे क़ाइदे जे अमल में जग़त पिता बि दस्तअंदाज़ी कीन थो करे।

ख़ुद भग़वान राम परीपूर्ण हूंदे बि जंहिं वक्ति निर्गुण निराकार सरूप छड्रे सगुण साकार रूप धारण करे जग़त में पधार्यो, तंहिं वक्ति हिन पिणि कर्म जे क़ाइदे जी मर्यादा निभाही आहे ऐं उन मुताबिक़ ई वर्तन कयो आहे। श्री राम ख़ुद चवे थो -

यत् चिन्तितं तदिह दूरतरं प्रयाति
यत् चेतसा न कलितं तदिहाभ्युपैति।
प्रातर्भवामि वसुधाधिपचक्रवर्ती
सोऽहं व्रजामि विपिने जटिलस्तपस्वी॥

"जंहिं ड्रींहुं सुबह जो चक्रवर्ती राजा थियण वारो हुउस ऐं गादीअ ते वेहण वारो हुउस, उन ड्रींहुं सुबह जो सवेर ई मूंखे कर्म जे क़ाइदे खे इज़त ड्रेई जटा धारणु करे तपस्वीअ जो वेसु धारण करे बन वञणो पियो।"

भग़वान राम ख़ुद पंहिंजे पिता दशरथजीअ जे पंहिंजे पुट जे विछोड़े में मृत्यु थियण वारे प्रारब्ध भोग़ण में काबि मदद कीन करे सघियो ऐं खेसि घटि में घटि चोड्रहनि सालनि जो मुद्दो वधाए ड्रियारे, जीअरो रखी कीन सघियो।

जंहिं रामजीअ जे पेरनि जी धूड़ लग़ण सां पत्थर मां अहिल्या थी सघी, पत्थरनि खेबि जीवनदान मिल्यो। सो भग़वान पाण ख़ुद पंहिंजे पीउ खे जीवन

दान डेई कीन सघियो, छाकाण त अहिल्या जा पाप पूरा थी चुका हुआ ऐं संदसि प्रारब्ध खेसि जीवन दान डियण वास्ते तैयार थी चुको हो। जड॒हिं राजा दशरथ जो श्रवण कुमार खे मारण वारो पापु प्रारब्ध बणजी फल भोगाइण वास्ते संदसि साम्हूं अची बीठो हो।उन में ख़ुद भगवान पाण बि दस्तअंदाज़ी करे कीन सघियो। इन करे गीता में भगवान साफ़ चयो आहे -

न कर्त्तत्वं न कर्माणि लोकस्य सृजति प्रभुः
न कर्म फल संयोगं, स्वभावस्तु प्रवर्तते।
नादत्ते कस्यचित्पाप न चैव सुकृतं विभुः
अज्ञानेनावृतं ज्ञानं तेन सुहयन्ति जन्तवः॥

आऊं परमात्मा भूत, प्राणियुनि, जीवन जे कर्तापिणे कर्मनि ऐं न वरी कर्मनि जे फल जे संजोग खे ई रचियां थो। जीव पंहिंजीअ पंहिंजीअ प्रकृतिअ मूजिब पाण ई उन्हनि में वर्तनि था। आऊं न कंहिंजा पाप थो वठां ऐं न कंहिं भगुत जा पुञ कर्म ई थो वठां। त पोइ शुभ कर्म छा जे करे अर्पण कया वेंदा आहिन? उन जे जवाब में भगवान चवे थो, ''जीव जो ज्ञान, विवेक, अज्ञान रूपी पर्दे 'माया' सां ढकियलु हुजण करे हीउ समझे थो त आऊं अर्पण थो कर्यां।'' जहिड़ीअ रीति संसारी जीव, कर्यां थो, खावां थो, गाल्हायां थो वग़ैरह उन क़िस्म जे मोह में अटिकियलु रहे थो। हक़ीक़त में अर्पण करण जहिड़ी का गाल्हि आहे ई कान। निष्काम भाव सां कयल कर्मनि खे ई अर्पण कयल कर्म समझणु घुरिजे।

गवर्नर क़ाइदो कढियो हुजे त गाडियूं सिर्फ़ खाबे पासे खां ई हलणु घुरिजनि त पोइ ख़ुद गवर्नर पाण बि जे गाडी साजे पासे खां हलाए त नंढे में नंढो पुलीस वारो बि संदसि गाडी रोके सघे थो। उन में गवर्नर जी कुझु बि हुजत हली कीन सघे। भगवान जे ठहियल कर्म जे क़ाइदे जो पूरीअ रीत पालन थिए। भगवान ख़ुद ईएं चाहे थो त पोइ असांखे बि संदसि आज्ञा अनुसार भगितीअ योग रस्ते पंहिंजो प्रारब्ध ख़ुशीअ ख़ुशीअ भोगे पूरो करणु घुरिजे।

(29) भगवान खां असां छा घुरंदा आहियूं ?

भगवान खां असां खे घुरणु बि कीन थो अचे। असां भगवान खां छा घुरी

रहिया आहियूं? मां कुछ पाप कर्म कया आहिनि उन्हनि जे फल स्वरूप मुंहिंजे साम्हूं दुःख डियण वास्ते प्रारब्ध अची बीठो आहे। अहिड़ी का दया कयों, जीअं उन जो फल मूंखे भोगिणो न पवे। अहिड़ी बेवाजिब घुर भगुवान क़बूल न थो करे। प्रारब्ध भोगुण में भगुवान खे कंहिंजी सिफ़ारिश या चउचवाउ न करण घुरिजे। जगुत में जेतिरा बि महान भगुत थी गुज़र्या आहिनि उन्हनि पंहिंजे प्रारब्ध में आयल दुःख प्रेम सां भोगिणा आहिनि । इन करे ई दुनिया जे नज़रुनि में भगुत दुःखी डिसण में ईन्दा आहिनि। कुंति माता भगुवान श्री कृष्ण जी पुफी हुई तंहिं हूंदे बि उन घणा कष्ट सहन कया। हमेशह भगुवान खां घुर कंदी हुई, "विपदः सन्तु नः शश्वत्।"

असां खे हर वक्ति दुःख ई मिले। अहिड़ी घुर असां कडुहिं बि भगुवान खां न था कयूं।

नरसिंह महेता भगुवान खां घुर कई त मुंहिंजो सत्यानास थिए। नरसिंह महेता, कुंती माता, मीरांबुाई ऐं बिया सभु भगुत संसार मां दुःखी थी विया आहिनि। नरसिंह महेता जो पुटु मरी वियुस ऐं धीउ विधवा थी घर मोटी आयस। ज़ाल मरी वियस ऐं इन जे ज़ात वारनि हिन सां को बि रिश्तो न रखियो। मीरां खे डेर ज़हर जो प्यालो मोकिल्यो। स्वामी श्री रामकृष्ण परमहंस लाइलाज बीमारीअ खे खिली खिली भोगे वर्तो। स्वामी शिवानंद महाराज खे पुठीअ में गोढ़ो निकतो। उन जो आपरेशन बिना बेहोशीअ जी दवा सिंघण जे करायाऊं ऐं सदाई जय भगुवान चवंदा हुआ। स्वामी हरी हरानंद भारती, जेके कनखल जे स्वामी सहिजानंद भारतीअ जा शिष्य हुआ से वडी उमर में किरी पिया। चेल्हि ऐं पुठीअ जा कंडा भजी पियनि। घणे वक़्त ताईं इस्पताल में रहिया ऐं चवंदा हुआ त, "मुंहिंजो छा, भलु त भोगे।" आहे बि सचु, "दुख सुखनि जी सूंहं, घोरिया सुख दुःखनि रे।" पर हिननि भगुतनि पंहिंजी भगिति ज़ाहिर न कई ऐं न वरी प्रारब्ध भोगुण खां बचण लाइ भगुवान खां का घुर कई।

हिक चक्रवर्ती राजा हिक बिखारीअ खे चयो, "तोखे जेकी कुझु बि घुरिजे सो घुरी वठु। तूं जेकी ऐं जेतिरो बि घुरंदें सो सभु मां, तोखे डींदुसि।" बिखारीअ राजा खां घुरियो, "मुंहिंजो बीख पिनण जो बर्तन भजी पयो आहे

सो उहो वठी डियो।'' बिखारीअ जी हीअ घुर बुधी राजा डाढो दुःखी थियो त बिखारीअ खे घुरणु बि कीन आयो। उन जूं सत पीढ़ियूं वेही खाईनि एतिरो धनु बि जेकड़हिं मूंखां घुरे हां त मां डियांसि हा, पर हिन बिखारीअ बीख घुरी त सिर्फ़ हिकु बीख पिनण जो बर्तन। जीअं सदाईं बीख पिनंदो ई रहे। अफ़सोस जो हिन खे बीख पिनणु बि न आई।

असीं पिणि भगुवान खां बिखारीअ वांगुर ख़सीस घुरूं कयूं था। इन करे भगुवान उल्टो नाराज़ थिए थो। असीं भगुवान खां घणे में घणो छा था घुरूं? कुछ लख या करोड़ रूपया, बु चार बंगला, बु चार गाडियूं, पुट, सुंदर पत्नी, हीउ सभु घुरूं बिखारीअ जे बर्तन जहिड़ियूं ई आहिनि। जेकी वतंदियूं असां खे रूह में रुलाईंदियूं। कुंती माता या भगुत नरसिंह महेता जेकी घुरियो असांखे बि अहिड़ो घुरणु अचे ई कीन थो। भगुवान असांखे बिना घुरण जे मनुष देह डिनी आहे। जेका मोक्ष जो द्वार आहे। उन जो उपयोग कीअं कजे ऐं मोक्ष कीअं प्राप्त कजे? इहो सभु असां खे संतनि ऐं शास्त्रनि रस्ते रोज़ानो समझायो पियो वञे। तड़हिं बि असीं बेकार जीव पंहिंजो स्वार्थ समझूं ई कीन था। इन करे प्रारब्ध कर्म जे फल भोगुण खां बचण जहिड़ी तुच्छ घुर असीं भगुवान खां कयूं था, भगुवान इनकरे नाराज़ थिए थो। असीं सचुपचु त अभागा जीव आहियूं जो असां खे बीख घुरणु बि नथी अचे।

(30) संचित कर्मनि खां कीअं छुटजे?

मथे पढ़ी आया आहियूं इन रीति कर्मयोग रस्ते क्रियमाण कर्म खे क़ाबूअ में रखी सघिजे थो। भगुती योग रस्ते प्रारब्ध भोगे उन्हनि मां छुटी सघिजे थो। पर संचति कर्मनि खां कीअं छुटकारो हासिल कजे? हीउ हिकु गंभीर सुवाल आहे, छाकाण त क्रियमाण कर्म करण में हरहिकु जीव आज़ाद आहे ऐं उन खे क़ाबूअ में रखणु पिणि संदसि वस में आहे। प्रारब्ध कर्म बि जेकी सीनो ताणे साम्हूं बीठा आहिनि, तिनि खे जीवन में ख़ुशीअ सां भोगे पूरा करे सघिजनि था, पर संचित कर्म जेकी अञा पची फलु डियण वास्ते तैयार न थिया आहिनि से त साम्हूं अची कीन बिहंदा ऐं वरी उहे अगुले जन्म में कयल क्रियमाण कर्म ई आहिनि। इनकरे इहे वापस वरी बि न था सघनि जीअं फिटी कयल थुक वरी चटे न थी सघिजे। हिकु दफ़ो ग़ाल्हायलु लफ़्ज़ु वापस वात में

विझी नथो सघिजे। बंदूक़ मां छुटल गोली वापस बंदूक़ में नथी अची सघे, तीअं हिकु दफ़ो कयल क्रियमाण कर्मु जेकी संचित कर्म में तब्दील थी वियो आहे ऐं अजा हिन जीवन काल में पची प्रारब्ध जे रूप में साम्हूं अची न बीठो आहे । उन खे त भोगे बि छुटी न थो सघिजे । इनकरे अहिड़नि संचति कर्मनि खे भोगुण वास्ते देह धारण करण खां सवाइ ब्रियो को रस्तो आहे ई कोन ऐं इहे संचित कर्म ऐतिरा थोरा बि न आहिनि जो हिक जन्म में भोगे वठिजनि त जान छुटी पवे। अनादि काल खां अनेक जनमनि जा संचित कर्म हिमालय पहाड़ जेतरा जीव जे पुठियां बीठा आहिनि ऐं जीअं जीअं इहे पचंदा वञनि था, तीअं तीअं प्रारब्ध कर्म जे रूप में जीव भोगींदो रहे थो। तड़हिं पिण अंतकाल ताईं अनेक देहियूं जीव धारण करे त बि इहे खुटण जा न आहिनि। त पोइ उन्हनि मां छुटिजे कहिड़ीअ रीति? छाकाण त हीउ संचित कर्म अंतकाल ताईं जीव खे जनम-मरण जे चक्कर में फेरा पाराईंदा ई रहंदा। इनकरे जीव लाइ मोक्ष प्राप्त करणु नामुमकिन थी पवंदो ऐं जेसिताईं देह धारण करणी पवे थी तेस्ताईं मोक्ष मिली न सघंदो, वेदांत छाती ठोके करे चवे थो त अहिड़ी हालत में बि घबराइण जी का बि ज़रूरत न आहे। जीव चाहे त हिन चालू जीवन काल में ई उन्हनि तमाम संचित कर्मनि खे ख़तम करे सघे थो, पर इहे सभु भोगे ख़तम करे सघिजनि इहो मुमकिन कोन्हे। इनकरे उनजो सिर्फ़ हिकु ई उपाउ आहे त संचित कर्मनि जा जेकी वड़ा वड़ा ढेर जमउ थियल आहिनि, तिनखे साड़े ख़तम करे छड़िजे। हिन भयंकर संचित कर्मनि जे पहाड़नि खे बाहि लग़ाइण खां सवाइ को बि रस्तो आहे ई कोन। छाकाण जो कंहिं बि काल में एतिरा सारा संचित कर्म ख़तम थियण वारा आहिनि ई कीन। हाणे उहा अग्नी जंहिं सां संचित कर्मनि जे पहाड़नि खे साड़े भसम करणो आहे सा आहे ज्ञान अग्नी।

जीअं कर्मयोग रस्ते क्रियमाण कर्म खे क़ाबूअ में रखी थो सघिजे ऐं भग़िती योग रस्ते प्रारब्ध कर्मनि खे पूरीअ रीति भोगे ख़तम करे थो सघिजे, तीअं ज्ञान योग रस्ते अनेक जन्म जन्मांतरनि खां जमउ थियल संचित कर्मनि खे साड़े भसम करे सघिजे थो। इन रीति कर्म योग, भग़िती योग ऐं ज्ञान योग रस्ते हरहिकु जीव तमाम क्रियमाण कर्मनि, प्रारब्ध कर्मनि ऐं संचित कर्मनि

खां मुक्ति हासिल करे हिन चालू जीवन काल में पक ई पक मोक्ष प्राप्त करे सघे थो। संचित कर्मनि खे सिर्फ़ ज्ञान रस्ते ई साड़े भसम करे थो सघिजे। कृष्ण गीता में साफ़ साफ़ अखरनि में खोले बुधायो आहे-

यथैधांसि समिद्धोग्निः भस्मात् कुरुतेऽर्जुन ।
ज्ञानाग्निः सर्व कर्माणि भस्मसात् कुरुते तथा ॥

"हे अर्जुन! जीअं बुरंदड़ अग्नीअ में हर प्रकार जूं सन्हियूं चाहे थुल्हियूं, सुक्यूं या आल्यूं, नंढियूं या वड्डियूं सभु काठियूं सड़ी ख़ाक थी वञनि थियूं, तीअं ज्ञान अग्नीअ में विधल सभिनी क़िस्मनि जा शुभ चाहे अशुभ क्रियमाण, प्रारब्ध ऐं संचित कर्म सड़ी भसम थी वञनि था ऐं मोक्ष हासिल थिए थो यानी जनम मरण जे बुंधन खां मुक्त थी वञिजे थो।

(31) ज्ञान अग्नि कीअं प्रघट कजे?

जीव पंहिंजे असली सचे सरूप खे भुलजी वियो आहे। जीव ब्रह्म जो ई अंश आहे। ब्रह्म सत्, चित्त-आनंद सरूप ई आहे। पर जीव खे हिन ग़ाल्हि जो ज्ञान न थो अचे। जंहिंकरे जीव जनम-मरण जे चक्कर में भिटिकंदो रहे थो। कृष्ण गीता में चयो आहे, "ममैवांशो जीव लोके, जीव भूतः सनातक।" जीव ब्रह्म जो सनातन अंश हूंदे बि, मुक्त हूंदे बि माया जे संग में अची क़ैद थी पियो आहे। (अध्याय 15) जीव खे पंहिंजे स्वरूप जो यथार्थ ज्ञान ईंदे ई संदसि तमाम संचित कर्म सड़ी ख़ाक थी वञनि था। पर जीव खे पंहिंजे स्वरूप जो सचो ज्ञान थियणु घणो कठिन कम आहे। हिन खे जड॒हिं को समर्थ गुरू मिली वञे त पोइ हीउ पंहिंजे स्वरूप जो सचो ज्ञान हासिल करे सघे थो।

ज्ञान यानी पुस्तकनि, ग्रंथनि, वेदनि, शास्त्रनि जो ज्ञान न, पर पंहिंजे स्वरूप जो ज्ञान, हीअ ग़ाल्हि बराबर याद रखण घुरिजे। वडा वडा पंडित पिणि अहिड़े भरम में भिटिकी रहिया आहिनि।

हिकु शींहं जो नंढो बचिड़ो ज़मण सां ई पंहिंजे माउ खां विछड़ी अलग़ थी वियो ऐं रिढुनि जे टोले जे मालिक उनखे खणी रिढुनि सां गडु पाले वडो कयो। हीउ शींहं जो बचो हमेशह रिढुनि जे टोले सां गडु घुमंदो वतंदो हो ऐं संग दोष, अज्ञान वसि थी पाण खे रिढ समझण लग़ो। हिन खे पकी ख़ातरी थी वेई त मां रिढ आहियां। हिक डींहुं हिक शींहं जी नज़र उन ते पेई ऐं शींहुं उन

टोले जे वेझो पहुतो। शींहं खे इहो ड्रिसी ड्राढो अजबु लग्रो त हू ब्रुचो पिणि रिढुनि सां गडु भज्री रहियो हो। शींहं ब्रियनि सभिनी रिढुनि खे वञण ड्रिनो ऐं आख़िर में हिन शींहं जे ब्रुचिड़े खे पकिड़ियो। ब्रुचिड़ो ड्रकण लग्रो ऐं शींहं खे वेनती करण लग्रो त, "मूंखे छड्डे ड्रे, मूंखे न मारि, मां रिढ आहियां।" शींहं चयुसि त तूं रिढ न आहीं, तूं त मुंहिंजो ज़ात भाई शींहं जो ब्रुचिड़ो आहीं। तोखे मूंखां डिज्रुण जी ज़रूरत न आहे, मां तोखे कीन मारींदुसि, पर शींहं जे ब्रुचे खे इन ग्राल्हि ते विश्वास न आयो ऐं हू चवण लग्रो, "मां रिढ ई आहियां, मूंखे न मारजो।" उन खां पोइ शींहं खेसि हिक तलाव जे किनारे ते वठी वियो ऐं चयाईंस, "हिन तलाव जे पाणीअ में पंहिंजो मुंहु ड्रिसु। तुंहिंजो ऐं मुंहिंजो मुहुं हिक जहिड़ो ड्रिसण में अचई थो या न? मां गर्जना कयां त तूं पिणि मूं वांगुर गर्जना करि।" ब्रुचे शींहं जो चवणु मञियो ऐं गर्जना कयाईं। हाणे हिन खे पक थी त मां रिढ न पर शींहं जो ब्रुचो आहियां। पंहिंजे असली स्वरूप जी ज्राण थींदे ई ही बेडपो थी शींहं सां गडु हल्यो वियो। बस इहा साग्री हालत असांजी बि आहे।

जीअं सूर्य जा किरणा सूर्य खां अलग्र थी सारे संसार में फहिलजी था वञनि, तीअं जीव अनादी काल खां ब्रह्म खां अलग्र थी जग्रत में भिटिकी रहियो आहे। बादलनि जो पाणी बिल्कुल साफ़ सुथरो हूंदो आहे, इहो बादल में गजगोड़ थियण करे बूंदूं बणजी बादल खां अलग्र थी धरतीअ ते किरे थो। आकाश मां धरतीअ ते किरंदे उन में ऑक्सीजन, नाइट्रोजन ऐं ब्रियूं घणियूं ई गैसूं अची शामिल थियनि थियूं। इहे बूंदूं धरतीअ ते किरण शर्त मिटीअ में मिली गंदियूं थी पवनि थियूं ऐं अहिड़ियूं अनेक बूंदूं मिली नदी बणजी पवनि थियूं ऐं धरतीअ जो तमाम किनु कचिरो पाणसां गडु खणंदे वञी समुंड सां मिलनि थियूं। उन वक्ति समुंड जो पाणी घणो खारो हूंदो आहे। साग्रियूं बूंदूं ब्राफ बणजी वापस अची बादल में मिलनि थियूं, उनसां मिली पवित्र बणजी हिकु थी वञनि थियूं। बराबर उन नमूने जीव ब्रह्म मां अलग्र थी वियो आहे ऐं जग्रत में माया जी सुहिबत करे, अविद्या, अज्ञान वसि मलीनता ऐं गंदगीअ खे प्राप्त कयो आहे। गोस्वामी तुलसीदासजीअ रामाइण में हिक ई सिट में इन ग्राल्हि खे समझायो आहे,

भूमि परत भा डाबर पानी,
जीमी जीव ही माया लपटानी।

शींहं जहिड़ो को समर्थ गुरू शींहं जे ॿचे वांगुर अगर हिन जीव खे मिली वञे त पोइ हिन खे पंहिंजे सचे स्वरूप जी समझ अची वेंदी ऐं पोइ हीउ पंहिंजे तमाम कर्मनि जे डप मां आजो थी वेंदो ।

गोस्वामी तुलसीदासजी रामाइण में लिखे थो त-

ईश्वर अंश जीव अविनाशी,
चेतन अमल सहज सुखराशी।
सो माया वश भयउ गोंसाई
वध्यो कीर मर्कटकी नाईं।।

जीव ईश्वर जो ई अंश आहे, अविनाशी आहे। पंहिंजे अंदर वेठल आत्मा जी आज्ञा मञी, आज्ञा ते अमल करे पाण खे सुख आनंद, स्वरूप बणाए सघे थो। पर जीव माया वसि थी पाण खे सियाणो समझे थो, नतीजे तोर पाण खे बांदर जियां बाज़ीगर जे रसीअ (ॾोरीअ) सां खणी ॿधायो आहे। जीअं बाज़ीगरु बांदर खे नचाईंदो आहे, तीअं माया पिण जीव खे कलाबाज़ियूं खाराए रही आहे।

अड़े तूं शींहं जो ॿचो आहीं, तूं रिढ न आहीं, तूं सत् चित आनंद स्वरूप आहीं। हीअ देह तुंहिंजो सचो स्वरूप नाहे। इन क़िस्म जो ज्ञान को सचो समर्थ गुरु कराए त पोइ ई को ॿेड़ो पार थिए। सरूप जो ज्ञान थींदे ई संचित कर्म बरवक्ति सड़ी ख़तम थी वञनि था। हीअ ग़ाल्हि असीं सभु सिर्फ़ पाण पंहिंजे शख़्सी अनुभव सां सिद्ध करे सघूं था।

हिक माण्हूअ रात जो 12 बजे ताईं पंहिंजी पत्नीअ सां ग़ाल्हियूं वेठे कयूं, उन खां पोइ संदसि अखि लॻी वेई। उन वक्ति उन खे सुपनो आयो, सुपने में हिन हिक माण्हूअ जो ख़ून करे विधो। ख़ून जो केस 3 साल हलियो, रात जो 12 ऐं 12.30 बजे जे विच में, हिन खे ॾहनि सालनि जी सख़्तु सज़ा थी, हिन खे जेल में विधो वियो। हक़ीक़त में हीउ बिस्तरे में सवड़ि पाए सुम्हियो पियो हो। जेलर खेसि हररोज़ पुठीअ ते चहिबूक (हंटर) हणंदो हो इनकरे संदसि पुठी हररोज़ गाढ़ी लाल थी पवंदी हुई। इन रीति हिन टिनि सालनि जी सज़ा

भोगी। पर हिक ड्रींहं जेलर सख़्तु गुस्से में अची खेसि पुठीअ ते वधीक चहिबूक हंया ऐं हीउ रड़ि करे जागी पियो। पत्नीअ घबराइजी पुछियूसि, "छा थियो?" हिन चयुसि "मुंहिंजी पुठी त डिसु, इहा ग़ाढ़ी लाल थी पई आहे।"

संदसि पत्नीअ चयुसि, "तव्हीं त बिस्तरे में सवड़ि पाए सुम्हया पिया आहियो ऐं तव्हांजी पुठी बि बिल्कुल साफ़ सुथिरी पेई आहे।" उन वक्त हीउ माण्हू सुपने जी अवस्था मां जाग्रित अवस्था में अची वियो हो ऐं खेसि पंहिंजे सचे सरूप जो ख़्याल अची वियो त ही ख़ूनी न आहे, निर्दोष आहे। पोइ हिन पत्नीअ खे पंहिंजे सुपने वारी ग़ाल्हि बुधाई त संदसि ख़िलाफ़ ख़ून जो केस 3 साल हलियो ऐं खेसि डहनि सालनि जी सख़्तु सज़ा मिली। संदसि पत्नीअ चयुसि, "रात जो 12 बजे ताईं त असां पाण में ग़ाल्हियूं वेठे कयूं ऐं हिन वक्ति 12.30 थिया आहिनि त पोइ हिन अध कलाक में तव्हां 3 साल किथां ऐं कीअं घुमी आया?" हिन खे डहनि सालनि जी सज़ा थी हुई, जिनि मां हिन 3 साल सज़ा भोगी हुई ऐं बाक़ी बचियल 7 साल सज़ा केरु भोगींदो? सुपने अवस्था मां जाग्रत अवस्था में ईंदे शर्त ई संदसि बाक़ी रहियल 7 सालनि जी सज़ा 'संचित कर्म' सड़ी भसम थी वेई, छाकाण त हिन खे पंहिंजे सचे सरूप जो ज्ञान थी वियो हो। ज्ञान अग्नी सभिनी कर्मनि खे साड़े भसम करे छडे थी।

ज्ञानग्निः सर्वकर्माणि शप्मसात् कुरुतेऽर्जुन।

इन रीति जीअं सुपन अवस्था जा सुख दुःख जाग्रित अवस्था में कूड़ा डिसण में अचनि था, तीअं जाग्रित अवस्था जा सुख दुःख ज्ञान अवस्था में कूड़ा लगुनि था।

हिकु माण्हू रात जो पूर्यूं, पकोड़ा, खीर वग़ैरह पेटु भरे खाई सुम्हयो हुजे, उन हूंदे बि सुपन अवस्था में "मां बुख्यो आहियां।" ईएं चवंदे सजी रात बीख जो बर्तन खणी बीख पिनंदो वते त उन वक्ति ख़ूद शंकारचार्य बि अची खेसि समझाए त, "अड़े अज्ञानी जीव तूं बुख्यो न आहीं, तूं त पेटु भरे खाई सुम्हियो आहीं।" त बि हीउ संदसि ग़ाल्हि असुल न मञींदो। जंहिं वक्ति हीउ जाग्रित अवस्था में ईंदो, तडहिं ई खेसि पंहिंजे सचे सरूप जी समझ अची वेंदी। साग्िए नमूने हिन जाग्रित अवस्था में असीं अविद्या सां घेरियल आहियूं। उन्हन जीवन खे शास्त्र ऐं संत पुकारे पुकारे चई रहिया आहिनि त, "हीउ

जगुत कूड़ो आहे ऐं ब्रह्म ई सचो आहे, तूं उन ब्रह्म जो ई जुज़ो सत्-चित आनंद सरूप आहीं।'' तडहिं बि हीउ अभागो जीव मञे ई कीन थो, छाकाण त हीउ अञां जाग्रत अवस्था मां ज्ञान अवस्था में आयो न आहे। शंकराचार्य जिनि अनेक ग्रंथनि जो ततु सिर्फ़ अध श्लोक में समझायो आहे,

श्लोक धेर्न प्रवक्ष्यामि यदुक्त ग्रंथ कोटि भिः।
ब्रह्म सत्य जगत् मिथ्या जीवो ब्रहमैव नायरः॥

करोड़ें ग्रंथनि जे अध्ययन करण खां पोइ समझ में आयो त संदनि समूरो सार सिर्फ़ अध श्लोक में ई समझायो आहे। ब्रह्म सत, जगुत मिथ्या, जीव ब्रह्म खां अलगु न आहे। पाण ई ब्रहम आहे।''

इन्हनि दृष्टांतनि मूजिब जीअं डहनि सालनि जी सज़ा मां टिनि सालनि जी सज़ा भोगिण बैदि सचो ज्ञान थींदे ई बाक़ी सतनि सालनि जी सज़ा ख़तम थी वेई, तीअं हिन जीव खे पंहिंजे सत-चित-आनंद सरूप जे सचे ज्ञान थियण शर्त ई संदसि कर्म तत्काल ई ख़तम थी वञनि था। जीअं क्रियमाण कर्मनि खे क़ाबू करण वास्ते कर्म मार्ग आहे, त्तीअं संचित कर्मनि खे समाप्त करण वास्ते ज्ञान मार्ग आहे। हीउ टेई मार्ग अपनाए जीव पंहिंजे हिन जनम जी जीवन यात्रा पूरी करे आख़िर मोक्ष प्राप्त करे सघे थो ऐं जनम मरण जे चक्कर खां आजो थी सघे थो।

(32) ज्ञान छा जे करे नथो थिए?

जेसिताई संसार में आसक्ति आहे, तेसिताई ज्ञान प्रघट थियणो न आहे। ज्ञान मार्ग में देह, धन, मान, मर्तबो, माता-पिता, स्त्री, पुटु, धीउ वग़ैरह मां आसक्ति कढणी पवे थी। शास्त्र ऐं संत चवनि था त गुज़रियल जनम जे माता-पिता, स्त्री, औलाद खे जीअं असां अज्ञान करे विसारे छडि़यो, तीअं हिन जनम जे माता-पिता, स्त्री, औलाद वग़ैरह खे ज्ञान करे विसारे छडि़यो। भगुवान जी इहा कृपा असां ते आहे जो गुज़रियल जनम असां खे याद न आहिनि। जेकडहिं ईएं न हुजे हा त असीं पंहिंजे गुज़रियल जनमनि जे रिश्तेदारनि ऐं साथियुनि खे हिन जनम में पिण ज्ञाणंदा ऐं सुञाणंदा हुजूं हा, पोइ रस्ते में वेंदड़ गडह खे गले लगाए चऊं हा त ''हीउ मुंहिंजो काको आहे।'' गुज़रियल जनम जी पत्नी हिन जनम में जेकडहिं कंहिं पशुअ जी जूण में हुजे त उनखे सुञाणे जे

घर वठी अचूं त वड्डो ममणु मची वञे। पर भगुवान जी अनंत कृपा आहे जो असीं पंहिंजे गुज़रियल जनम जे संगियुनि साथियुनि खे अज्ञान करे ई भुलजी विया आहियूं। इहा तमाम सुठी गाल्हि आहे।

जहिड़ीअ रीत असां पंहिंजे अगुले जनमजा रिश्ता अज्ञान करे विसारे वेठा आहियूं, तहिड़ीअ रीत हिन जनम जा रिश्ता पिण ज्ञान रस्ते भुलजी वञूं। संसार मां जीअं जीअं असीं आसक्ति कढंदा वेंदासूं ऐं वैराग़ु वृतिअ खे अपनाईंदा वेंदासी, तीअं तीअं ज्ञान जो प्रकाश महिसूस कंदा वेंदासूं। संसार में असां आसक्त आहियूं या विरक्त उनजी ज़ाण असांखे पाण ई थींदी। असीं अकेलाइप खे महिसूस कयूं त इहा आहे आसक्ति पर अकेला हूंदे बि अकेलाइप खे महिसूस न कयूं त इहा आहे विरक्ति। इन रीत असां पाण खे मापे सघूं था त असां ज्ञान मार्ग तरफ़ वञण जे लायक़ आहियूं या न?

असां कड्डहिं ज्ञान वठण विया आहियूं?

असां सचीअ माना में ज्ञान हासिल करण वास्ते वेंदा ई न आहियूं, डोंगरे महाराज, शंभू महाराज जे भागुवत सप्ताह, स्वामी शांती प्रकाश या स्वामी गंगेश्वरानंद महाराज जे सत्संग में अनेक दफ़ा वेंदा हुजूं या सन्यास आश्रम में हररोज़ वेंदा रहूं, पर हक़ीक़त में ज्ञान हासिल करण वास्ते मनोरंजन कार्यक्रम में भागु वठण लाइ ई वेंदा आहियूं। बाक़ी ध्यान त घर में ऐं ब्रारनि में ई लगो पियो हूंदो आहे। त पोइ ज्ञान कहिड़ीअ रीत हासिल थी सघंदो?

असां बज़ार में कणिक वठण वञूं पर थेल्ही खणण खां सवाइ वञूं त दुकानदार हिकदम समझी वेंदो त हीउ भाई कणिक वठण न आयो आहे, पर अघु पुछण आयो आहे। इनकरे दुकानदार असांखे सही अघ खां ब्र पंज रूपया घटि ई बुधाईंदो, छाकाण हू समझी वियो आहे त हीउ सिर्फ़ अघु पूछंदो, कणिक न वठंदो। पोइ असीं ब्र टे ब्रिया बि दुकान घुमऊं ऐं उन्हनि खां अघु पुछुं त उहे पहिरिएं दुकानदार खां पंज रुपया वधीक बुधाईनि त पोइ असां खे ख़ातरी थींदी त पहिरिएं दुकानदार अघु वाजबी चयो आहे। कुछु ड्डींहनि खांपोइ असीं थेल्ही खणी उन पहिरिएं दुकानदार वटि कणिक वठण वञूं त हू हिकदम समझी वेंदो त हीउ अजु सचुपचु कणिक वठण आयो आहे। हाणे उहो दुकानदार कणिक जो अघु उन ड्डींहं खां पंज रुपया मथे बुधाईंदो। जे

असीं पुछंदासूं त भाई अग॒ त अघु घटि बु॒धायो हुयुइ, अजु पंज रुपया मथे छो? दुकानदार मुश्कंदे मिठनि लफ़्ज़नि में जवाबु डीं॒दो त उहा कणिक ख़लास थी वेई आहे। हाणे माल जी घटताईअ करे अघ वधी विया आहिनि। असीं उन ते विश्वास करे वधीक पैसा डे॒ई पाणु ठगा॒ए घर डां॒हुं रवाना थींदासूं।

असां डु॒ही वठण वञूं, त दुकानदारु पुछंदो, "डु॒ही छा में खणी वेंदा? को बर्तन आंदो अथव?" डु॒हीअ लाइ साफ़ ऐं कलई कयल बर्तन ज़रूरी आहे। (अजु कल्ह त पोलीथिन थैल्हियुनि में बि डु॒ही वठी सघिजे थी) शींहं जे खीर लाइ सोन जो बर्तन ज़रूरी आहे मिटीअ जो बर्तन न हलंदो। साग॒ीअ रीत ज्ञान वठण वञण वास्ते पिण असां वटि शुद्ध पात्र (बर्तन) यानी वैराग॒ वृतिअ सां निर्मल थियल अंतःकरण हुअण घुरिजे। जेसिताईं असां जो मन संसार में आसक्त आहे ऐं अंतःकरण में अनेक जन्म जन्मान्तरनि जे कामनाउनि ऐं वासनाउनि जा ढेर भर्या पिया आहिनि, मथस कंचन ऐं कामनीअ जी कटु चढ़ियल आहे, तेसिताईं शुद्ध ज्ञान थींदो ई कीन।

"वैराग॒वृतिअ खां सवाइ ज्ञान थींदो ई कीन, खणी करोड़ें उपाव कजनि।"

ज्ञान यानी छा? इन ग॒ाल्हि खे बराबर समझण घुरिजे सिर्फ़ M.A., M.Com., L.L.B. जूं डिग्रयूं हासिल करण सां असीं ज्ञानी थी वियासूं ईएं समझणु न घुरिजे।

अमेरिका जे सभिनी नदियुनि जा नाला बरज़ुबान बु॒धाए वञूं, रशिया जे तमाम शहिरनि जा नाला छातीअ ते उकर्या पिया हुजनि, आफ़्रीका जे झंगलनि जी पखेड़ मापे अचूं, आस्ट्रेल्या, इंग्लैंड वग़ैरह मुल्कनि जे जोड़जक जो अभ्यास कर्यूं, तडु॒हिं बि पाण खे ज्ञानी कोठाए कीन सघंदासूं। इन सभ खे ज॒ाण ई चइजे थो। ज्ञानीअ जा लछण भग॒वत गीता जे 13 अध्याअ जे 7 श्लोक खां वठी समझायल आहिनि सिर्फ़ चोथें श्लोक में अज्ञानीअ जा लछण बु॒धाया विया आहिनि।

अमान्त्विम् अदंभित्वम्, अहिंसा क्षान्तिरार्जवम्।
आचार्योपासनं शौचं स्थैर्यम् आत्मविनिग्रहः ॥

इन्द्रियार्थेषु वैराग्यम् अनहंकार एव च।
जन्म-मृत्यु जराव्याधि दुःखदोषानुदर्शनम् ॥
असक्तिः अनभिश्वंगः पुत्रदारगृहादिषु ।
नित्यं च समचितत्वं इष्टानिष्टोपपतिषु ॥
मयि चानन्ययोगेन भक्तिरव्यभिचारिणि।
विविक्तदेशसेवित्वम् अरतिर्जनसंसदि॥
अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम् ।
एतद् ज्ञानमिति प्रोक्तम् अज्ञानं यदतोऽन्यथा॥

अभिमान खां परे, छल कपट खां दूर, अहिंसावादी खिम्यावान, मन-वचन सां सरल, श्रद्धा, अंतःकरण में पुख़ितो, मन ऐं इन्द्रियुनि समेत शरीर ते कड़ी नज़र रखण वारो, हिन लोक ऐं परलोक जी इच्छा खां परे, निरअहंकारी, ॼमण मरण, बुढापे, रोगु ऐं व्याधीअ जे दुःखनि ऐं दोषनि जो वर वर करे विचार करण वारो, पुत्र, स्त्री, घर ॿार, धन ऐं दौलत में न अटिकण वारो, ममता,लोभ खां परे, जो हिकचित थी ध्यान योग रस्ते, श्रद्धा सां, अहंकार छॾे सदाईं चिंतन करण वारो, एकांत में शुद्ध वायुमंडल में रहण वारो, विषई जीव जो संग न करण वारो, अध्यात्मक ज्ञान में नित स्थित रहण वारो, तत्वज्ञान अनुसार परमात्मा खे हर जाइ ॾिसण वारो, इन रीत वर्तन करण वारो जीव थियो ज्ञानी।

हिन क़िस्म जे ज्ञान हासिल करण वास्ते वैराॻवृतीअ वारो अंतःकरण हुअण ज़रूरी आहे ऐं उन ज्ञान हासिल करण वास्ते सदाईं अटूट पुरुषार्थ करे मोक्ष प्राप्त करणु ई कर्म जे क़ाइदे जो मूल मक़सद आहे। मरण जे कंधीअ ते वेठल परीक्षित शुकदेवजीअ खां सिर्फ़ सतनि ॾींहनि ताईं श्रीमद भाॻवत जो ज्ञान ॿुधी मोक्ष प्राप्त कयो। श्रीमद भाॻवत में इहा ताक़त आहे जो अजु बि सिर्फ़ सतनि ॾींहनि अंदर जीव जो मोक्ष करे सघे थो। पर उन खे ॿुधाइण वारो शुक्रदेव जहिड़ो ज्ञानी ऐं ॿुधण वारो परीक्षित जहिड़ो वैराॻी हुअणु घुरिजे ।

असां घणा ई भेरा भाॻवत सप्ताह में विया आहियूं । भाॻवत ॿुधो आहे। पर अजु ताईं तन्हां जो या मुंहिंजो मोक्ष थियो न आहे। इन जो कारणु या त भाॻवत ॿुधाइण वारो सही न आहे या असां ॿुधण वारा सफ़ा चटु आहियूं।

अजु त घणे भाङे रुपयनि जी ब्रोल करे व्यास गादीअ ते अची थो वेहे ऐं सज्रो ड्रींहुं भाग्रवत पढ़ंदे बि "केतरा केला आया, केतरा नारेल चढ़िया, केतरा रुपया पोथीअ ते चढ़िया, संदसि वास्ते केतिरयूं धोतियूं आयूं" संदसि जीव इन्हनि वीचारनि में अटिकियो पियो आहे। इहा हालत थी आहे अजु कल्ह जे वेचारनि शुकदेवजीअ जी ऐं वरी परीक्षित जंहिं भाग्रवत विहारियो हुजे उन जी हालत त हिन खां बि बदतर हूंदी आहे।

अजु जो परीक्षित त वेचारो पल्थी मारे वेही कथा बि बुधी न थो सघे। हू वेचारो, "केतरा सेण सज्रुण आया, केतरा नाठी ऐं धीअरु आया, केतरा नाठी रुसी विया ऐं भोज्रनु कराइण वक्ति केतरो सीधो सामान वापिरबो, केतरा दब्रा तेल जा खपंदा ऐं ब्राह्मण खे केतरी ड्रखणा ड्रियणी पवंदी" इन्हीअ चिन्ता में सतनि ड्रिहाड़नि में ख़ूब थकजी पवे थो।

अजु जेकड्रहिं शुकदेव ऐं परीक्षित वेचारनि जी अहिड़ी हालत थिए त उते वेचारो श्रीमद् भाग्रवत कंहिंजो उद्धार करे सघंदो। शुकदेवजीअ जो, परीक्षित जो या संगति जो? इहा ग्राल्हि गहराईअ सां सोचणु घुरिजे। बाक़ी श्रीमद् भाग्रवत खे अजु बि एतरी ताक़त आहे जो सिर्फ़ परीक्षित जहिड़े संसारी जीव जो त छा, धुंधुकारीअ जहिड़े भूत प्रेत जो बि उद्धार करे सघे थो। ज्ञान प्राप्त करण ऐं उन खां संचित कर्मनि खे साड़े भसम करणु को मामूली कम न आहे पर उन वास्ते सदाईं पके इरादे सां पुरुषार्थ कंदो रहणु घुरिजे।

मोक्ष मार्ग में वञण खां असां खे केरु थो रोके?

भौतिक नियम अनुसार हिक हंधि टिकी बीठल वस्तु जेसिताईं उन जी अस्थिरता जे ख़िलाफ़ ब्रिए कंहिं बि ताक़त जो इस्तैमाल न कयो वियो आहे, तेसिताईं इहा वस्तु हमेशह वास्ते हिक हंधि ई टिकियल रहे थी। साग्रीअ रीत हिक वक्ति लरज़श में आयल पदार्थ जे ख़िलाफ़ जेसीं ब्रिए कंहिं बि ब्रल जो इस्तैमाल न कयो वियो आहे, तेसीं इहो पदार्थ सदाईं लरज़श में ई रहे थो। हिन सिद्धांत खे विज्ञानिक स्थिति सातत्य करे था कोठिनि। आकाश तरफ़ तेज़ीअ सां फिटी कयल का बि वस्तु हमेशह वास्ते आकाश तरफ़ तेज़ीअ सां परवाज़ नथी करे सघे, छाकाण त धरतीअ जी कशिश जा खेसि पाण तरफ़ छ्रींचण करे, उन वस्तुअ जी रफ़्तार ते रोक पवे थी ऐं उन जी तेज़ परवाज़ जी

रफ़्तार धीरे धीरे घटिजी आख़िर ख़तम थी वञे थी ऐं इहा वस्तु धरतीअ ते अची किरे थी। इहो साग्रियो असूल अधि भौतिक विज्ञान में बि कम करे रहियो आहे। असांजे चेतन्य खे पिण अहिड़ीअ कशिश जी छिक थींदी रहंदी आहे। पर इहा छिक धरतीअ जे सेंटर जी न पर असांजे भौतिक आसक्तियुनि जी आहे। असां उनखां भरजी भारी थी पिया आहियूं, स्त्री, पूत्र, मोटर गाड्डियूं, बंगला वग़ैरह भौतिक पदार्थनि जे ब्रोझ ऐं इन्द्रियुनि जे विषयनि तरफ़ झुकाउ मोक्ष मार्ग तरफ असांजी रफ़्तार खे रोके था रखनि। आसक्तियुनि जो घेरो ऐं छिक जीव जे मोक्ष मार्ग तरफ़ परवाज़ करण खे रोके, उन जो विरोध करे उनखे अटिकाए रखन था ।

(33) कर्मयोग, भग्रितीयोग ऐं ज्ञानयोग

परमात्मा खे प्राप्त करण वास्ते टे वाटूं आहिनि। कर्मयोग, भग्रितीयोग ऐं ज्ञानयोग। जीव जंहिं वाट जो अधिकारी हुजे, उहा ई वाट खेसि अपनाइणु घुरिजे। अर्जुन कर्मयोग जो अधिकारी हो, हिन भग्रवान वटां सन्यास वठण जी इच्छा ज़ाहिर कई, पर भग्रवान खेसि युद्ध जे वक्ति सन्यास वठण खां साफ़ इन्कार कयो ऐं खेसि कर्म योग में ई लग्रायो। विदुरजी भग्रिती मार्ग जो अधिकारी हो इनकरे महाभारत जे युद्ध वक्ति बि खेसि यात्रा ते वञण जी मोकल मिली। उद्धव ज्ञान मार्ग जो अधिकारी हो इनकरे भग्रवान श्री कृष्ण खेसि ज्ञान जो उपदेश ड्रिनो।

रोग्रीअ जी नब्ज़ परखे जीअं वैदु हिक बीमार खे सलाह ड्रिए त, "तोखे सिर्फ़ ड्रही खाइणु घुरिजे ब्रियो कुझु न।" ब्रिए रोग्रीअ खे चवे त, "जे थोरी बि ड्रही खाधइ त मरी वेंदें।" इन नमूने जीव जंहिं मार्ग जो अधिकारी हुजे, उन मार्ग जो उपदेश ई खेसि फ़ाइदो पहुचाए कल्याण करे थो।

आख़िर में त हीउ टेई वाटूं अग्रिते हली पाण में मिली हिकु थी वञनि थियूं। टिन्ही वाटुनि मां कंहिं बि हिक वाट ते हलंदड़ जीव आख़िर में परमात्मा खे ई प्राप्त करे थो। जीअं "सर्व देव नमस्कार, केशव प्रति गच्छति।" सभिनी देवताऊनि खे कयल नमस्कार आख़िर में परमात्मा खे ई मिले थो।

अहमदाबाद खां बड़ोदा थींदे रेल रस्ते दिल्हीअ पहुची सघिबो आहे, तीअं अहमदाबाद खां रतलाम थींदे रोड रस्ते बि दिल्हीअ वञी सघिबो आहे ऐं

अहमदाबाद खां जोधपुर, जयपुर थींदे जहाज़ रस्ते पिण दिल्हीअ वञी सघिबो आहे। आख़िर में असां खे टेई रस्ता दिल्हीअ ई पहुचाईनि था। जंहिं जी जहिड़ी वीचार धारा, तहिड़ी आहे संदसि रस्ते वठण जी वाट।

जनक राजा कर्म जे रस्ते, नरसिंह महेता ऐं मीरांबाई भगि़तीअ रस्ते ऐं अक्रूर, उद्धव ज्ञान रस्ते वञी पार पहुता, मुक्ति हासिल कयाऊँ। जंहिंजी जहिड़ी वाट। नरसिंह महेता भगि़ती मार्ग ते हलंदे आख़िर ज्ञान मार्ग सां वञी मिल्यो। संदसि पदनि में ज्ञान जो ई प्रकाश मिले थो। जहिड़ोकि-

"अखिल ब्रहमांड मां एक तू श्री हरि,
जूजवे रूपे अनंत भासे।"

वेद, स्मृति, श्रुति सभु साख भरिनि थियूं त-

सोन ऐं कुंडलनि में भेदु न कोई,
घाट घड़जण खां पोइ सडि़जनि अलग़ु अलग़ु नाले,
आख़िर में आहीं त हिकु तूं हरी।

कर्मयोगः- हिकु वडो, वेकरो, शांतिको राजमार्ग (High way) आहे। पढ़ियल, अणपढ़ियल, ज्ञानी, अज्ञानी मतलब त हर क़िस्म जा जीव हिन राज मार्ग ते अखियूं बूटे बि हलनि त बि खेनि किरण या कंहिं धक लगि़ण जो ख़तरो न आहे।

शास्त्रनि ऐं संतनि जी आज्ञा अनुसार न्याअ, नीतीअ ऐं धर्म सां पंहिंजो नित कर्म कंदे कंदे जीवन जो हिकु हिकु कर्म भगि़ती बणजी थो पवे। हजामत कंदे, कासाईअ जो धंधो कंदे, तोड़े कुंभर जहिड़ो धंधो कंदे पिण अनेक भग़ुत कर्म मार्ग ते न्याअ, नीती ऐं धर्म सां शास्त्रनि ऐं संतनि जे आज्ञा अनुसार हली पंहिंजे हरहिक कर्म खे भगि़तीमय बणाए सघिया आहिनि। उन्हनि जी हरहिक क्रिया भगि़तीअ में बदिलजी वञे थी। भग़ुवान शंकर जे शिवलिंग ते मंत्र पढ़ी पंजाहु दिला पाणीअ जा चाढ़णु न अचनि त उन में को बि नुक़सान न आहे, पर जे उन्हनि पाणीअ जे दिलनि मां घर जी माता पंहिंजनि गंदगीअ में भरियल ब़ालकनि खे स्नान कराए शुद्ध करे ऐं ब़ालकनि खे स्नान कराइण वक्ति इहा भावना रखे त, "मां शंकर भग़ुवान खे अभिषेक करे रही आहियां।" त संदसि इहा गंदगीअ में भरियल ब़ालकनि खे स्नान कराइण वारी क्रिया बि

शंकर जी भगुती बणजी पवे थी। पर जे हीअ सजो ड्रिहाड़ो शिवलिंग ते पाणीअ जा दिला चाढ़ींदी रहे ऐं पंहिंजनि बुालकनि खे गंदो रखे त पोइ खेसि शंकर जी भगुतीअ जो कुझु बि फलु हासिल न थींदो।

कर्म मार्ग वड्डो वेकरो राजमार्ग आहे त भगुती मार्ग उनखां नंढो ऐं सोढ़ो ड्राढो डुखियो मार्ग आहे।

ज्ञान मार्ग ते हलणु जुणु तलवार जी धार ते हलण बराबर आहे। ज्ञान मार्ग तमाम मुझांईंदड़ु आहे। हिन रस्ते ते हलण वास्ते पाण सां गडु को उन रस्ते जो ज्ञाणू हुअण ज़रूरी आहे। न त उन रस्ते ते गुम थी वञण जो ख़तरो रहे थो। इन करे ज्ञान मार्ग जी वाट वठण वास्ते उन जे ज्ञाणू समर्थ गुरुअ जो साणु हुअणु ज़रूरी आहे।

(34) भगुतु ऐं ज्ञानी

भगुतु हिक ब्रिलीअ जे बुचे समान ऐं ज्ञानी हिक बांदरीअ जे बुचे समान आहे। ब्रिलीअ जो बुचो जनम खां पोइ सतनि ड्रींहनि ताईं अंधो हूंदो आहे, इनकरे ब्रिली उन खे वात में खणी सत घर घुमाईंदी आहे। हू पंहिंजी माउ ते सजो आधार रखे थो। पोइ छो न हुन जी माउ हुन खे किथे बि रखे त हू दांहं न कंदो आहे। पर ब्रिलीअ खे पंहिंजे बुचे जी घणी चिंता थींदी आहे। हूअ पंहिंजे बुचे खे घणीअ हिफ़ाज़त सां वात में खणी घर घर घुमाईंदी आहे।पर बांदरीअ जो बुचो वरी पंहिंजी माउ जी चिंता कंदो आहे। जडहिं बांदरी टिपा ड्रियणु शुरु कंदी आहे त बुचो हिन खे तमाम ज़ोर सां पकिड़ींदो आहे। बुचे जी माउ हिक वण तां ब्रिए वण ते टिपा ड्रिए त उन वक्ति बुचो माउ खे तमाम सोघो पकड़े रखंदो आहे।

ब्रिलीअ जो बुचो जेतिरो ब्रिलीअ खे प्यारो आहे, ओतिरोई बांदरीअ जो बुचो बांदरीअ खे प्यारो आहे। उन्हनि जे प्यार में को बि फ़र्क़ु न आहे। इन हूंदे बि ब्रिन्ही माताउनि जो पंहिंजो पंहिंजो तरीक़ो आहे। पीउ नंढे ब्रार खे कुल्हे ते चाढ़े घुमाए थो, उन खां थोरे वड्डे ब्रार खे आङुर खां पकड़े हले थो। जडहिं इहो ब्रार जुवान थिए ऐं पीउ बुढो थिए त पोइ जुवान पुटु पीउ खे हथ खां वठी घुमाए थो। गोस्वामी तुलसीदास भगुवान राम जा चयल अखर बुधाए थो, ''मोरे प्रौढ तनय सम ज्ञानी।'' ज्ञानी मुंहिंजो वड्डो ब्रालकु आहे ऐं भगुतु

मुंहिंजो नंढो ब्रालकु आहे। ज्ञानी भगुवान जो ध्यान रखे थो, जड॒हिं भगुवान वरी भगुत जो ख़्याल रखे थो। उन हूंदे बि ब्रिन्ही मथां भगुवान जी हिक सरीखी ई कृपा रहंदी आहे।

(35) टिन्ही वाटुनि ते हलंदड़ जीव जो भगुवान सां वहिंवार अलगु अलगु थिए थो।

कर्म मार्ग ते हलंदड़ जीव चवे थो, ''मां भगुवान जो आहियां।'' भगुती मार्ग जी पेरवी कंदड़ जीव समझे थो, ''भगुवान मुंहिंजो आहे।'' ऐं ज्ञान मार्ग ते हलंदड़ ज्राणे थो, ''मां ऐं ईश्वर हिकु ई आहियूं।''

हिक स्त्री जुवानीअ में शादी करे पंहिंजे साहुरे घर वञे थी। उन वक्ति हीअ समझे थी त, ''मां पंहिंजे धणीअ जी आहियां, जीअं धणी चवंदो तीअं मां कंदियसि, उनजी मर्ज़ीअ ते हलंदियसि। उनजी पसंद नापसंद जो ध्यानु रखंदियसि, उन जो चयो मञींदियसि।'' छाकाण त हूअ समझे थी त मां पंहिंजे धणीअ जे हवाले आहियां। कुछु सालनि खां पोइ जड॒हिं हूअ ब्रिनि टिनि ब्रारनि जी माउ थिए थी त उन वक्ति हूअ ईएं थी समझे त, ''धणी आहे मुंहिंजो।'' इहा स्त्री जे पतीअ खे चवे त कुझु शयूं आणिणयूं आहिनि त धणीअ खे आणे ड॒ियणियूं पवनि थियूं। जे चवेसि त ऑफ़ीस मां मोटंदे हिन माण्हूअ वटां थींदा अचिजो त हू ज़रूर उन माण्हूअ सां मिली पोइ घर ईंदो। पर हूअ मना करेसि त हिन जे घर न वञिजो त हू ओड॒ांहुं अखि खणी बि कीन निहारींदो।

जड॒हिं हूअ शादी करे हिन घर में आई तड॒हिं चयाईं पिए त, ''मां आहियां हिनजी'' ऐं सागी स्त्रीअ में कुछु सालनि खां पोइ फ़रक़ु अची वञे थो। हाणे हूअ ईंए थी समझे ''पती आहे मुंहिंजो।'' हीअ स्त्री जंहिं वक्ति बुढी थिए थी ऐं संदसि पति बि बुढो थिए थो त उन वक्ति हीअ बुढी ऐं बुढो हिकु थी वञनि था। हाणे इहा बुढी समझण लगी थी त ''मां ऐं हीउ ब॒ई हिकु ई त आहियूं।'' पहिरयाईं जुवानीअ में समझंदी हुई, ''मां आहियां संदसि।'' पोइ चयाईं, ''पती आहे मुंहिंजो।'' ऐं आख़िर में चवे थी त, ''मां ऐं हीउ ब॒ई हिकु ई आहियूं।'' उन वक्ति उद्वैत भाव अची थो वञे। हाणे जेकड॒हिं पुटु बुढे खे के खहुरा अखर चवे त बुढीअ जो मुंहु लही वेंदो ऐं जे नूंहं बुढीअ खे कुछु चवे त बुढे जी शिकिल फिरी वेंदी। बुढो ऐं बुढी ब॒ई हिकु थी विया। इन नमूने कर्म

मार्ग में जीव चवे थो, "मां भगुवान जो आहियां।" हू भगुवान जी आज्ञा अनुसार पंहिंजा कर्म करे थो। संदसि हर कर्मु भगिती बणजी पवे थो। हीउ जीव जड॒हिं अगि॒यां वधंदे भगिती मार्ग जो अधिकारी बणजे थो त उन वक्ति समझे थो त, "भगुवान आहे मुंहिंजो।" कर्म मार्ग ते हलंदे चवंतो त, "मां भगुवान जो आहियां।" भगिती मार्ग में पेरु रखंदे ई चवे थो त, "भगुवान मुंहिंजो आहे।" ऐं भगतु जेकी कुझु बि चवे,सो भगुवान खे मञणो पवे। भगतु चवे त "मुंहिंजो रथु हलाइ।" त भगुवान खे ईएं करणो पवे थो ऐं रथ जे थकल घोड़नि खे पंहिंजे हथ सां दाणो पाणी डि॒यणो पवे थो। भगतु चवे त मूंखे धीउ जी शादी कराइणी आहे। त समूरी सामग्रीअ समेत अची हाज़िर थीउ।" त भगुवान खे अचिणो ई पवे थो। भगतु संदसि नाले हुंडी लिखे त भगुवान खे उहा हुंडी भरे डि॒यणी पवे थी। कर्म मार्ग ऐं भगिती मार्ग में द्वैत आहे "मां ऐं ईश्वर।" कर्म मार्ग में जीव चवे थो, "मां ईश्वर जो।" भगिती मार्ग वारो जीव ऐं भगुवान हिकु थी वञनि था। ज्ञानी चवे थो, "अहम् ब्रहमास्मि।" मां ईश्वर आहियां। जीव ऐं ईश्वर जो अद्वैत थी वञे थो।

मथिएं नमूने टिन्हीं मार्गनि रस्ते अधिकार हासिल करे जीव पंहिंजनि क्रियमाण कर्मनि, प्रारब्ध कर्मनि ऐं संचित कर्मनि खे पूरीअ तरह ख़तम करे परमात्मा खे प्राप्त करे सघे थो। मोक्ष हासिल करण जो अधिकार सिर्फ़ मनुष खे मिलियलु आहे, "दुःख जी निवृति ऐं संतान सुख जी प्राप्ति यानी मोक्ष।"

सर्वेत्र सुखिनः सन्तु सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखमाप्नुयात्॥

परिशिष्ट (ज़मीमो)

श्री हीराभाई ठक्कर पंहिंजे हयातीअ जे 60 साल में प्रवेश कयो तड॒हिं संवत 2033 जे आखाड़ में रथयात्रा जे डीं॒हुं हिन किताब जो विधीअ सां प्रकाशन कयो हो। उन बइद हिन किताब जो अहमदाबाद थियोसोफिकल सोसायटीअ अभ्यास करे कुछ सवाल खड़ा कया हुआ। उन्हनि जा श्री हीराभाई ठक्कर जेके जवाब डि॒ना हुआ तिन खे हिते शामिल कयो वियो आहे। इन्हनि खे बि पढ़ण जी प्रार्थना आहे।

(36-1) क्रियमाण कर्म करण में जीव पूरीअ रीत ख़ुदमुख़्तियार आहे।

मनुष जूणि में परमात्मा जीव खे पूरीअ रीत ख़ुदमुख़्तियारी ड॒िनी आहे। मनुष खां सवाइ कंहिं बि जूणि में पूरीअ रीत आज़ादी मिलियल कान्हे, छाकाण त मनुष खां सवाइ ब॒ियनि जूणीयुनि में संदसि देह सिर्फ़ प्रारब्ध कर्म भोग॒े छुटी थी वञे। उन्हनि जा नवां क्रियमाण कर्म संचित कर्मनि में जमउ थींदा न आहिनि। छाकाण त इहे सिर्फ़ भोग॒ जूणियूं आहिनि। मनुष सज॒णु थियण वास्ते स्वतंत्र (आज़ाद) आहे, एतिरो ई न पर हिन खे अगर दुर्जन थियणो हुजे त पंहिंजे हिसाब ऐं जोखम ते दुर्जन थियण वास्ते पिण सफ़ा छुटलु आहे।

मनुष खे सिर्फ़ दान करण जी छूट मिलियल आहे, ईएं नाहे। हिन खे जमउख़ोरी करणी हुजे त उन वास्ते पिण आज़ाद आहे। माण्हूअ खे सिर्फ़ सचु ग॒ाल्हिाइणो आहे, खेसि उन क़िस्म जी आज़ादी मिलियल आहे, ईएं नाहे। हीउ चाहे त कूड़ बि ग॒ाल्हिाए सघे थो। उन में पिण हीउ पूरीअ रीत आज़ाद आहे। मनुष जूणि में त खेसि आपघात करण जी बि आज़ादी मिलियल आहे। जड॒हिं पखियुनि, पसुनि जे जूणियुनि में ऐं ब॒ियन किन बि जूणियुनि में त आपघात करण जी बि आज़ादी मिलियल कान्हे। इन रीत परमात्मा मनुष खे संपूर्ण स्वतंत्र बणायो आहे। मनुष जूणीअ में खेसि विज्ञानमय ऐं आनंदमय जहिड़ा ब॒ वधीक ख़जाना परमात्मा ड॒िना आहिनि। ब॒ियनि जूणियुनि में इहे ब॒ ख़जाना कंहिं खे बि मिलियल न आहिनि। मनुष स्वतंत्र आहे छाकाण त हिन में समायलु विज्ञानमय ऐं आनंदमय परमात्मा पाण ख़ुद स्वतंत्र आहे।

मनुष जे बुरे थियण में आज़ाद न हुजे त पोइ संदसि भले थियण जी आज़ादीअ जी का क़ीमत ई न रहे। मनुष में बेईमान थियण जी आज़ादी न हुते त पोइ संदसि ईमानदार थियण जी आज़ादीअ जो को बि क़दुर ई कीन रहे। बेईमान थियण जी आज़ादी मिलियल आहे, तड॒हिं त ईमानदार जी इज़त थिए थी। मनुष जेकड॒हिं सिर्फ़ भले थियण में स्वतंत्र हुजे ऐं बुरे थियण जी खेसि आज़ादी मिलियन न हुजे त पोइ उन स्वतंत्रता खे संपूर्ण स्वतंत्रता चई कीन सघिबो।

असीं जे इएं चऊं त असां पंहिंजी पत्नीअ खे पूरी आज़ादी डेई छडी आहे, सज़ी टिजोड़ी (Safe) उनखे सोंपे छडी आहे पर उनजी चाबी मूं वटि आहे। त इन आज़ादीअ खे पूरी आज़ादी न चइबो पर उनखे मज़ाक चइबो।

हिक खिलाईंदड़ ग़ाल्हि मूं पढ़ी। अमेरिका जे हेनरी फोर्ड जडहिं सभ खां पहिरियाईं मोटरकार ठाही, उन वक्ति सभु मोटरकारूं हिक ई कारे रंग जूं ठाहियूं हुयूं। उन उहे कारूं विकिरो करण वारे दुकात ते ग्राहकनि लाइ हिकु बोर्ड लग़ायो, जंहिं ते लिखियल हो -

'You can choose any colour you like provided it is black.'

याने, तव्हां कोबि रंगु पसंद करे सघो था बशरते कि उहो कारो हुअण घुरिजे।

सभु मोटरकारूं कारे रंग जूं ई हुयूं, ब्रियो को रंगु हुओ ई कोन पर चूंड करण जी पूरी आज़ादी डिनल हुई त तव्हां कहिड़ो बि रंगु पसंद करे सघो था पर पोयां इहो बि शर्त हो त उहो कारो हुअण घुरिजे।

(36-2) जेतिरी आज़ादी, एतिरी जवाबदारी

हिक अंग्रेज़ी कहावत आहे, ''Freedom implies responsibilities.'' आज़ादी जवाबदारीअ जी जड़ आहे, आज़ादी बि मुंहीं न आहे। असीं क्रियमाण कर्म करण में पूर्ण स्वतंत्र ऐं उनजी जवाबदारीअ खां सफ़ा आज़ाद ईएं ब्रई ग़ाल्हियूं थी नथियूं सघनि। क्रियमाण कर्म करण में पूरीअ रीत आज़ाद आहियूं त पोइ उनजे फल भोग़ुण वास्ते गिण एतिराई ब्रधल आहियूं। इन ग़ाल्हि जो असां खे पूरीअ रीत ध्यान रखणु घुरिजे। कृष्ण गीता में साफ़ साफ़ अखरनि में चयो आहे त, ''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।'' इहो बि खोले खोले बुधायो अथसि त 'तव्हीं को बि कर्म कर्यो, उन में मुंहिंजी कंहिं बि क़िस्म जी जवाबदारी या भाग़ीदारी कान्हे।'' आऊं प्राणियुनि जे न कर्तापणे, न कर्मनि ऐं न वरी कर्मनि जे फल संयोग खे ई रच्यां थो। हर हिकु मनुष पंहिंजे सुभाव वसि कर्म करे थो ऐं उनजो फलु भोग़े थो।

न कर्तृव्यं न कर्माणि, लोकस्य सृजति प्रभुः!
न कर्म फल संयोग स्वभावस्तु प्रवर्तते ।
नादते कस्यचित पापं न चैवं सुकृतं विभुः ॥ (5.14,15)

ब्र हथ मथे करे आऊं सारे जगुत खे चिताए रहियो आहियां, पर केर बि मूंखे बुधे न थो। अर्थ ऐं काम जो मां को दुश्मन न आहियां। अर्थ ऐं काम जी उपासना बिलाशक कर्यो, पर धर्म जे हद अंदर रही ऐं मोक्ष जी प्राप्तिअ वास्ते''। अहिड़ो साफ़ सनातन सचु असांखे समझाइण वास्ते इतिहास खे सजो दृष्टांतनि ज़रिए कम आर्णीदे वेद व्यासजीअ सारो महाभारत रचियो आहे। नसीबदार हुजो त पढ़ी डिसो।

(14) प्रारब्ध ऐं पुरषार्थ हिक ब्रिए जा विरोधी न पर पूरक आंहिन।

अजु असां जेकी बि क्रियमाण कर्म कयूँ था, से संचित कर्मनि में जमउ रही, अगिते हली पची प्रारब्ध बणजनि था ऐं उन प्रारब्ध भोगुण वास्ते शरीरु मिले थो। इनकरे सही माना में पुरषार्थु ई अगिते हली प्रारब्ध बणजे थो। इनकरे प्रारब्ध ऐं पुरषार्थ ब्रुई हिकु ई आहिनि। ब्रिन्हीं जो कार्यक्षेत्र (कर्म करण जी वाट) अलगु अलगु हुजण करे ब्रुई हिक ब्रिए जी वाट बि कीन था ओरांघिनि। प्रारब्ध चालू शरीर खे फलु भोगुाए थो ऐं पुरषार्थ ईंदड़ सृष्टिअ खे तैयार करे थो। जंहिंकरे अगुते हली इहो ई पुरषार्थ प्रारब्ध बणजी मुस्तक़बिल में शरीर खे फलु भोगुाए थो। अंग्रेज़ीअ में चवणी आहे -

Man is the architect of his own fortune

असीं पंहिंजो प्रारब्ध पाण ई पंहिंजनि हथनि सां चालू पुरषार्थ सां ठाहे सघूं था। प्रारब्ध बिना पुरषार्थु पिंगिलो आहे त पुरषार्थ खां सवाइ प्रारब्ध अंधो आहे। ''हिकु अंधो ऐं ब्रियो पिंगिलो'' अहिड़ी दोस्तीअ जी कहाणीअ वांगुर आहे । अंधे खे रस्तो डिसण में न पियो अचे ऐं पिंगिलो हली कीन पियो सघे। इनकरे ब्रिन्ही दोस्तनि पंहिंजे विवेक बुद्धिअ खां कमु वर्तो। पिंगिलो अंधे जे कुल्हनि ते चढ़ी वेठो। अंधो हलण लगुो ऐं पिंगिलो खेसि रस्तो डेखारण लगुो। इन नमूने ब्रुई सवलाइअ सां लंघे पार पहुता। जीवनयात्रा खे सफलतापूर्वक पूरो करण वास्ते पुरषार्थ ऐं प्रारब्ध हिक ब्रिए खे पूरीअ रीत सहायता कनि था। असीं पंहिंजे प्रारब्ध सां पंहिंजो सुखु ऐं दुःखु भोगियूं था, ब्रियो केर बि असां खे सुखी या दुःखी करे न थो सघे। इहो त सिर्फ़ निमित मात्र ई आहे।

सुखस्य दुःखस्य न कोऽपि दाता परो ददातीति कुबुद्धिरेषा।
अहं करोमीति वृथाभिमानः स्वकर्मसुत्रात् ग्रथितो हि लोकः ॥

(15) कर्म करण में आज़ाद ऐं फल भोगुण में ब॒धल आहियूं।

गीता जो हिकु महाकाव्य आहे त -

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।

अर्थात कर्म करण ते तुंहिंजो अधिकार आहे, पर फल ते तुंहिंजो अधिकार न आहे। तूं कर्म कंदो रहु पर फल जी इच्छा सफ़ा न रखु। हिन महा वाक्य जे अर्थ करण में थोरी ग़लतफ़हिमी थियण जी गुंजाइश आहे। भग॒वान इएं कीअं चवंदो त तूं कर्म कंदो रहु पर फल जी इच्छा न रखु। तूं सज॒ो महिनो नौकरी करि पर पहिरीं तारीख़ पघार न घुरु ऐं न वठु। स्टेशन तां कूलीअ खां सामान खणाइ पर कोई खेसि मज़ूरीअ जा पैसा ड॒ियण जे बदरां खेसि गीता जो उपदेश चई बुधाएसि त ''भाई तूं गीता पढ़ी ड॒िसु, उनमें श्रीकृष्ण उपदेश ड॒िनो आहे त कर्म करण ते तुंहिंजो अधिकार आहे पर फल ते न।'' इहो बुधी कूली पक ई पक तव्हां खे चवंदो ''मूंखे गीता जो ज्ञान कीन घुरिजे, पर मज़ूरीअ जा पैसा घुरजनि''।

कर्मु कबो त फल पक ई पक मिलंदो, फल ड॒ियण खां सवाइ कर्म शांत कीन थींदो, त पोइ मथे चयल क़ौल जो अर्थु इहो आहे त कर्म करण ते असां जो अधिकार आहे पर फल ते न। मतलब त कर्मु करणु या न करणु कहिड़ो करणु, कहिड़ो न करणु, शुद्ध बुद्धिअ जो उपयोग करे उनमें रुंभी वञण में असीं स्वतंत्र आहियूं, पर उनजे फल भोग॒ुण में परतंत्र आहियूं। मतलब त असांजी फल भोग॒ुण जी मरज़ी न बि हुजे त बि नतीजे तोर पैदा थियलु फल भोग॒िणो ई पवंदो उन में का बि चालाकी करे कीन सघंदासीं।

असां वटि केरु महेमान रसोई खाइण अचे त असां उनजे लाइ खीरणी पूर्यूं, पकोड़ा, भाज॒ियूं, दाल, चांवर, मिठाई, रायतो, सलाद ऐं ब॒ियूं घणे शयूं ठाहे संदसि अग॒ियां खाइण लाइ रखियूं। उन्हनि मां हू छा खाए ऐं छा खाए, छा वधीक खाए उन्हीअ ग॒ाल्हि में हू बिल्कुल आज़ाद आहे। हू काकड़ी वधीक चाह सां खाईंदो त असीं सिक सां खेसि काकड़ी वधीक खाइ लाइ ड॒ींदासूं। हाणे हिन जी तबीयत खे काकड़ी भांइ पवंदी या न, इन

ख़्यालु त खेसि ई रखिणो आहे न की असांखे। हीउ जे सिर्फ दाल खाए ऐं पेटु खराब थी पवेसि त उनजो ख़्यालु बि हिन खे ई रखिणो आहे,असां खे न। असां त ख़ुश थींदे खेसि दाल खाइण लाइ ड्रींदा वेंदासूं, इहा दाल खाइण में हू स्वतंत्र आहे । पेट जे ख़राब थियण करे तकलीफ़ भोगे त उनमें हू परतंत्र आहे। उनते संदसि कोबि वसु हली कीन सघंदो ऐं उन ते कंहिं बि सुठे डॉक्टर जी सिफ़ारिश बि हली कीन सघंदी। दाल वधीक खाइण जो कर्मु जेको हिन कयो उन जो फलु भोगुण खां पोइ ई हिन खे राहत थींदी ।

(16) फल भोगुण वास्ते उन मुताबिक देह धारणी पवे थी।

शुभ कर्मनि जो फलु सुख भोगुण वास्ते ऐं पाप कर्मनि जो फलु दुःख भोगुण वास्ते पिण देह धारण करणी पवे थी। फल भोगुण जो साधन सिर्फ़ देह ई आहे। देह धारण करण खां पोइ ई फलु भोगे थो सघिजे। इनकरे शुभ चाहे अशुभ कर्मनि जो फलु भोगुण वास्ते देह जो धारण करणु ज़रूरी आहे। इनकरे ई जनम मरण जे चकर में अचिणो पवे थो। जेसिताईं जनम मरण जो चकर चालू रहे थो, तेसिताईं मोक्षु मिलणु तमाम मुश्किल आहे, नामुमकिन आहे। देह धारणी ई न पवे उन परिस्थितिअ जो नालो आहे मोक्षु।

जेसिताई शुभ या अशुभ कर्मनि जा ढेर संचित कर्मनि में जमउ आहिनि तेसितांई हिन संसार में अचण वञण जो चकर चालू ई रहे थो, देह धारण करणी ई पवे थी। शुभ कर्मनि जे फल सरुप सुख भोगुण लाइ देह धारण करणी पवे त उहा थी सोन जी ज़ंजीर ऐं अशुभ कर्मनि जे फल सरुप दुःख भोगिण वास्ते देह धारण करणी पवे त उहा थी लोह जी ज़ंजीर। पर ब्रिन्ही हालतुनि में शुभ चाहे अशुभ कर्मनि जे फल भोगुण वास्ते जीव खे लाज़िमी तोर देह धारण करणी पवे थी। इन जो मतलब इहो आहे त कंहिं बि क़िस्म जो कर्म जीव वास्ते बुंधन यानी जनम मरण जे चकर जी ज़ंजीर पाए था छड्डिनि पोइ भले उहा ज़ंजीर सोन जी हुजे या लोह जी, पर आहे त बुंधन ई न।

सुपातरी दान कर्यूं त उनजे फल सरुप सुख भोगिण लाइ देह धारण करणी पवे थी।

सुपात्रदानात् च भवेत् धनाढयो
धनप्रभावेन करोति पुण्यम् ।

पुण्यप्रभावत् सुरलोकवासी
पुनर्धनाढयो पुनरेव भोगी ॥

ऐं कुपातरी दान कर्यूं त उनजे फल सरुप दुःख भोगुण वास्ते बि देह धारण करणी पवे थी।

कुपात्रदानात् च भवेत् दरिद्रो
दारिद्रयदोषेण करोति पापम्।
पापप्रभावत् नरकं प्रयाति
पुनर्द्ररिद्रो पुनरेव पापी॥

ब्रिन्ही जी औखी चाहे सौखी चकी संसार चकर जी फिरंदी रहे थी ऐं उन में जीव मात्र पीसजंदो ई रहे थो, उन खे मोक्षु मिले ई नथो। छाकाण जो हीउ नवां नवां क्रियमाण कर्म कंदो रहे थो। उन्हनि मां जेके कर्म ततकाल फलु न था ड्रियनि से संचित कर्मनि में जमउ थींदा आहिनि। जिनि जा आहिस्ते आहिस्ते ढेर थी था वञनि, उन्हनि मां जेतिरा संचित कर्म पचंदा था वञनि ऐं प्रारब्ध में तबदील थींदा था वञनि, ओतिरा प्रारब्ध जा फल भोगुण लाइ जीव शरीर धारण कंदो ई थो रहे। इन रीत हिन संसार जो विष चकर अनादिकाल खां हलंदो थो अचे ऐं इहो अंतकाल तांई हलंदो रहंदो। महर्षी पंतजलीअ चयो आहे त -

सति मूले तद्विपाकः जातिः आयुः भोगाः ।

''जेसिताई कर्म रुप जड़ आहे, तेसिताई शरीर रुपी वणु उभरंदो ई रहंदो ऐं उन वण में ज़ात, उमिरि ऐं भोगु जा फल लगुंदा ई रहंदा।

(16-अ) कर्मनि में कट-सट कीन थिए।

घणा माण्हू इएं समझनि था त जे टे मण पाप कर्म कंदासूं, तहिंखां पोइ पंज मण पुञ कर्म कंदासूं त पंजनि मणनि पुञनि मां टे मण पाप कटिजी वेंदा बाक़ी बचंदा ब्र मण पुञ। तंहिंजो फलु भोग्रींदासूं। टे मण पाप कर्मनि जो फल भोग्रिण खां बची वेंदासूं। इहा ग्रुणप ग़लत आहे। कर्मनि जे क़ाइदे में कट नथी थिए। उनमें त सिर्फ़ जोड़ करणो पवंदो आहे।

असां टे मण पाप कर्म कर्यूं ऐं पंज मण पुञ कर्म कर्यूं त अठ मण कर्मनि जो फलु भोग्रणो पवे थो। पुञ कर्मनि जे फल सरुप सुख भोगुण लाई देह धारण

करणी पवे थी ऐं कयल पाप कर्मनि जो फलु भोगुण लाइ पिण देह धारण करणी पवे थी, इएं करण सां अठ मण पाप पुञ्ञ जे फल सरुप अठ मण सुख-दुःख भोगुण वास्ते देह धारण करणी पवे थी।

(17) त पोइ मोक्षु कड॒हिं ?

सिर्फ़ इन्सान ई मोक्ष जो अधिकारी आहे ऐं मानव शरीर मोक्ष प्राप्त करण वास्ते ई मिल्यो आहे। जीव इन्सानी चोलो धारण करण खां पोइ बि जे मोक्षु प्राप्त न करे सघे त पोइ चोर्यासी लख जूणियुनि में भिटिकण जी मुसीबत मथांउस कड़के थी। सिर्फ़ इन्सान ई पको निश्चो करे त देह जे ब॒ंधन मां छुटी प्रारब्ध परमेश्वर में लीन थियण लाइ समर्थ ऐं स्वतंत्र (आज़ाद) आहे। छाकाण त हीउ ब्रह्म जो ई अंश आहे ऐं उन में ई लीन थी मोक्षु प्राप्त करण लाइ ई हू बणायो वियो आहे।

पर जेसिताईं हीउ हिन जनम जो पूरो प्रारब्ध भोगे॒ न वठे ऐं अग॒लो अनादीकाल जा अनेक जनम जन्मान्तरनि जा जमउ थियल बेशुमार संचति कर्मनि जा ढेर पंहिंजी ज़िंदगीअ में पूरा न करे तेसिताईं उनखे वारंवार हरघड़ीअ अनंतकाल ताईं अनेक जनम, अनेक देहियूं धारण करणियूं ई पवन थियूं, जेसिताईं हिन खे मोक्षु न मिले। हिन खे जेकड॒हिं मोक्ष हासिल करण जी तमाम इच्छा थिए ऐं सचु-पचु जे मोक्ष हासिल करणो हुजे त पोइ खेसि तमाम संचति कर्मनि जो नासु करणो पवे। सभिनी संचित कर्मनि खे ज्ञान रुपी अगनीअ में साड़े भसम करणो पवे ऐं हलंदड़ जीवन में प्रारब्ध खे पूरीअ तरह सां भोगिणो पवन्दो।

हिन ज़िंदगीअ में ई हाणे खां ई माण्हू नवां क्रियमाण कर्म अहिड़ीअ रीत करे, जिएं इहे तुर्तु फलु डे॒ई शांत थी वञनि। उन्हनि मां हिकु बि क्रियमाण कर्म संचित कर्मनि में जमउ न थिए। जंहिंकरे भविष्य में संचित कर्म पची करे प्रारब्ध रुप में साम्हूं अची न बिहे ऐं उहो भोगुण लाइ हिन खां पोइ का देह वरी न धारणी पवे। पर तकलीफ़ त इहा आहे जो जीव चालू जीवनकाल में भोगुण जेतिरा कर्म प्रारब्ध रुप भोगीं॒दे भोगीं॒दे ब॒िया अनेक क्रियमाण कर्म करे थो ऐं पोइ उहे भोगुण वास्ते अनेक जनम धारण करे थो। तंहिंकरे हिन जीवन दौरान हाणे जेकी बि क्रियमाण कर्म कर्यूं से अहिड़ा कर्यूं जेके कहिड़ीअ

बि रीत संचित कर्मनि में जमउ न थियनि जो अगिते हली नईं देह धारण करण जे बुंधन में न पऊं।

अहिड़े सोचे समझी कयल कर्म खे योग चइबो आहे। गीता में भगवान योग जी व्यवस्था कई आहे त "योगः कर्म सु कौशलम्" क्रियमाण कर्म खे सोचे समझी कुशलता सां कजे त उन जो नालो आहे योग।

(18) पर को बि कर्म न कजे त ?

को माण्हू जे इएं चवे त "मां हिन जीवनकाल में को बि कर्म न कर्यां त पोइ कर्म जो संचित कर्म में जमउ थियण जो सुवाल ई पैदा न थो थिए ऐं पची करे प्रारब्ध रुप में भोगुण जो सुवाल बि न रहंदो, ऐं फल भोगुण वास्ते देह बि धारण न करणी पवंदी ऐं पंहिंजो पाण ई मोक्षु मिली वेंदो। पोइ देह धारण करण खां हमेशह लाइ मुक्त थी वञिबो। हीउ वीचार बराबर न आहे छाकाण त जीवु कर्म करण खां सवाइ रही न सघंदो।

भगवान गीता में चयो आहे त-

नहि कश्चित क्षणमपि जातु तिष्ठति अकर्मकृत,
शरीर यात्राऽपि च ते न प्रसिध्ये त अकर्मणः।

को बि माण्हू हिकु पलु बि कर्म करण खां सवाइ रही न थो सघे, जेकड॒हिं हीउ कर्म न करे त संदसि जीवनयात्रा ई अटकी पवे." स्नान करणु, खाइणु, पीअणु, उथणु-वेहणु, ग॒ाल्हाइण, समिझणु, डि॒सण, साहु खणण, नौकरी धंधो करणु, पंहिंजी तंदुरस्तीअ वास्ते कसरत करणु, जहिड़ा अनेक कर्म करणा ई पवनि था। इन्सान खे जनम खां मरण तांईं कर्म करणा ई पवनि था। पर क्रियमाण कर्म करण वक्ति असांखे अहिड़ी कुशलता सां या सोचे करे करणु घुरिजनि जेके उन्हीअ वक्ति फल डे॒ई शांत थी वञनि ऐं संचित कर्मनि में जमउ न थियनि। इएं करण सां उहे अगिते हली भविष्य में प्रारब्ध रुप में भोगुण लाइ बि॒यो शरीर धारण न करिणो पवे। तंहिंकरे इन्सान खे अहिड़ा क्रियमाण कर्म करणु घुरिजनि जेके संचित कर्मनि में जमउ न थियनि।

(19) कहिड़ा क्रियमाण कर्म संचित कर्मनि में जमउ न था थियनि?

हेठि ज॒ाणायल क्रियमाण कर्म संचित कर्मनि में जमउ न था थियनि (1) बा॒लपिण में कयल कर्म (2) बेहोशी अवस्था में कयल कर्म, बेसमझीअ

में कयल कर्म (3) मनुष्य देह खां सवाइ ब॒ीअ कंहिं जूणि में कयल कर्म (4) कर्तापिणे जे अभिमान खां सवाइ कयल कर्म (5) सृष्टिअ जे कल्याण ख़ातिर कयल कर्म (6) निष्काम कर्म

(20) मासूम ऐं बेहोशीअ जी हालत में कयल कर्म

ब॒ाल अवस्था में कयल कर्म, बेसमझीअ में, पाग॒लपिणे में, नशे में, बेहोशीअ जी हालत में कयल कर्म, राग॒-द्वेष खां आजा हूंदा आहिनि। इनकरे राग॒द्वेष रहित कर्म संचित कर्मनि में जमउ न थींदा आहिनि। को नंढो ब॒ालक बाहि में हथु विझे त उन जो हथु सड़ी वेंदो यानी कर्मु उन्हीअ वक्ति फलु ड॒ींदो, पोइ उन जो कर्म संचित कर्म में जमउ थी वरी फलु न ड॒ींदो। हिकु टिन सालनि जो ब॒ारु रांदि कंदे कंदे खट ते टिपा ड॒ियण लगो॒। उन वक्त उन खट ते टिन महिननि जो नंढो ब॒ार सुमिहियो पियो हो। रांदि कंदे कंदे ब॒ारं जो पेर सुमिहियल ब॒ार जे गले ते पियो ऐं नंढो ब॒ारु उन वक्ति ई मरी वञे त उन टिन सालनि जे ब॒ार ते इन्डियन पेनल कोड जे क़लम 302 हेठि खून जो केस कीन हलंदो, छाकाण जो संदसि कयल गुनाह जे कर्म में राग॒द्वेष न हो, इनकरे संदसि इहो कर्म संचित कर्म में जमउ न थींदो। 18 सालनि खां घटि उमिर वारो ब॒ारु जेकड॒हिं कंहिं दस्तावेज़ ते सही करे त कोर्ट बि उहो नामंज़ूर कंदी आहे। उन ब॒ार खे वोट ड॒ियण जो बि अधिकार न हूंदो आहे। अहिड़े नमूने नशे जी हालत में, बेहोशीअ जी हालत में, या पाग॒लपन जी हालत में को माण्हू गार्यूं ड॒िए या फ़साद करे त उन माण्हूअ जे ख़िलाफ़ इन्डियन पेनल कोड 323, 504 हेठ कोर्ट में केस न हलंदो आहे। वधि में वध माण्हू गड॒िजी करे उनखे मारींदा। अहिड़े नमूने उन खे उन वक्ति ई संदसि कयल कर्म जो फलु मिली वेंदो या कुझु माण्हू उनते दया करे छड॒े ड॒ींदसि । अहिड़े माण्हूअ जे कयल इन कर्म में राग॒द्वेष न हुअण करे उहो कर्म संचित कर्म में जमउ न थींदो आहे।

(21) मनुष खां सवाइ ब॒ी जूण में कयल कर्म

मनुष जूणि खां सवाइ ब॒ियनि सभिनी जूणियुनि में कयल क्रियमाण कर्म संचित कर्म में जमउ न थींदा आहिनि। छाकाण त मनुष जूणीअ खां सवाइ ब॒ियनि सभिनी जूणियुनि में सिर्फ़ संचित कर्म प्रारब्ध रुप में भोगे॒ देह छुटकारो पाए थी। उन्हनि जूणियूंनि में को बि नओं क्रियमाण कर्म संचित कर्म में

जमउ न थो थिए। घोड़नि, गड॒हनि, कुतनि, बि॒लियुनि, पखियुनि, पसुनि वग़ैरह जूणियुनि में जीव फ़क़त प्रारब्ध कर्म ई भोगु॒ण लाइ था रहनि ऐं उन्हनि जूणियुनि में कयल क्रियमाण कर्म बरवक्ति ई फलु डि॒यनि था।

गड॒हु कंहिंखे लत हणे त उन वक्त ई ब॒ सोटियूं खाए त पोइ उहो कर्म संचित कर्म में जमउ न थींदो। वरी उनखे उनजो फलु न थो भोगु॒णो पवे। कुतो कंहिं माण्हूअ खे चकु पाए ऐं उहो माण्हू मरी वञे या नांगु कंहिं खे चकु पाए ऐं उहो माण्हू मरी वञे त पोइ उन कुते या नांग खे इन्डियन पेनल कोड क़लम 302 हेठि ख़ून जो केस कंहिं बि कोर्ट में हली न थो सघे। इन्डियन पेलन कोड सिर्फ़ मनुष जूणि लाइ ई ठहियलु आहे। गांइ या मेंहिं कंहिं खेत में घुसी वञी फ़सलु खे नुक़्सान पहुचाए त माण्हू उनखे लकिड़ीअ सां मारे भजु॒ाईंदा या त उनखे बि॒ए किथे ब॒धी छडीं॒दा। इन नमूने हू बरवक्ति फलु भोगि॒न था। पोइ उनजा उहे कर्म संचित कर्मनि में जमउ न था थियनि।

गांइ या मेंहिं नुक़्सानु करे त उनजो ड॒ंडु कैटल ट्रेस एक्ट मुजिब उन्हनि जे मालिकनि खे भरिणो थो पवे। मेंहुनि या गांयुनि ते हिन क़ाइदे मूजिब को बि केस कीन थो हली सघे। इन रीत तमाम जीव, पसूं, पखी, कीड़ा, माकोड़ा, मछियूं, जल जा बि॒या जीव, वण बू॒टा, नंढा नंढा पितिकिड़ा जीव वग़ैरह सभु भोगु॒ जूणी चइजनि था। उन्हनि जू॒णियुनि में नवां क्रियमाण कर्म जमउ न था थियनि। देव जूणी बि भोगु॒ जूणी सडि॒जे थी। देव पंहिंजनि पुञनि जे प्रभाव जेतिराई सुख भोगि॒न था। उन्हनि जा बि क्रियामाण कर्म संचित कर्मनि में जमउ न था थियनि ।

जेकी जीव "पूतपापाः निधूर्त कल्भषाः"

यानी जिनि जा तमाम पाप कर्म नास थी विया आहिनि, सिर्फ़ पुञ कर्म ई बाक़ी बचिया अथनि, उहे जीव देवजूणी भोगु॒ जूणीअ में सुर्गु॒ में वञी, उते सुठा भोगु॒ भोगि॒नि था ऐं पुञनि जे पूरे थियण शर्त ई मृत्युलोक में वापस जनम वठनि था। सुर्गु॒ में उन्हनि जा नवां क्रियमाणा कर्म संचित कर्म में जमउ न था थियनि। गीता में चयल आहे -

ते पुण्यमहासाद्य सुरेन्द्रलोकम्
अश्नन्ति दिव्यान् दिवि देवभोगान्।

ते तं भुक्तवा स्वर्गलोकं विशालं
क्षीणे पुण्ये मृत्यलोकं विशन्ति ॥

इन तरह मृत्युलोक में जनम वठी वापस अची जनम मरण जे चकर में अटिकनि था।

(22) कर्तापिणे जे अभिमान खां सवाइ कयल कर्म

अहिड़ा कर्म अकर्मे था बणिजी पवनि ऐं संचित कर्म में जमउ न था थियनि। इनकरे अहिड़नि कर्मनि जे फल भोगुण लाइ ब्रेहर देह धारिण करणी नथी पवे ऐं न वरी देह जे बुंधन जनम मरण जे चकर में ई अचिणो थो पवे।

को सेशन जजु ख़ून जे गुनाह हेठि गुनहगार खे फासीअ जी सज़ा डि्ए त उहो जजु हिक जीवहत्या करण हेठि गुनहगार न थींदो आहे। छाकाण त सेशन जज में फासीअ जी सज़ा डि्यण वक्ति कुझु बि कर्तापिणे जो अभिमान न हूंदो आहे। हीउ त सिर्फ़ क़ाइदे जी मर्यादा अंदर रही इन्साफ़ जो पालन थो करे। इन रीत जेको माण्हू सिर्फ़ पंहिंजीअ शुभ भावना सां पंहिंजे फ़र्ज़ जो पालन कंदो हुजे, उहो जग्रुत जे कंहिं माण्हूअ या ब्रियनि अनेक इन्साननि खे केतिरो बि नुक़्सानु कंदो डि्सण में छो न ईंदो हुजे, तडहिं बि कर्तापिणे जे अभिमान खां सवाइ कर्म कंदे बि खेसि इहे कर्म बुंधन रुप न था थियनि। इनकरे भगुवान गीता में अर्जन खे वडे वाके चयो आहे, ''धर्म युद्ध में तूं घणनि ई जीवनि खे मारींदें तंहिं हूंदे बि तुंहिंजो इहो कर्म तोखे बुंधन में कीन विझंदो छो त तूं पंहिंजो कर्म कर्तापिणे जे अभिमान खां सवाइ सिर्फ़ फ़र्ज़ निभाइण जे ख़्याल खां करे रहियो आहीं।'' हिन तत्व जो ज्राणू ऐं आऊं करियां थो इन रीत जो अभिमानु छडे, जेको जीव धर्म जे मर्यादा अंदर रही न्याउ ऐं नीतीअ सां जेकी बि कर्म पंहिंजे फ़र्ज़ निभाइण जे लिहाज़ खां करे थो, सो तमाम कर्म कंदे बि उन्हनि में अटिके न थो, अहिड़ा कर्म खेसि बुँधन में बि न था विझनि। भगुवान वधीक चवे थो-

यस्य नाहंकृतो भावो बुद्धिः यस्य न लिप्यते ।
हत्वाऽपि सः इमान् लोकान् न हन्ति न निबध्यते ॥

''उन तत्व जे ज्राणण वारो सांख्य योग डि्संदे, बुधंदे, सिघंदे, भोज्रन कंदे, निंड कंदे, साहु खणंदे, ग्राईंदे, त्याग्र कंदे, अखियूं खोलींदे, मतलब हर

क़िस्म जी क्रिया कंदे (सभु इन्द्रियूं पंहिंजे पंहिंजे कार्य क्षेत्र अंदर कमु करे रहियूं आहिनि) इएं समझी पोइ बिना कंहिं शक शुबह जे इएं ॼाणे थो त आऊं कुझु बि न करे रहियो आहियां।'' गीता में भगुवान चवे थो -

नैव किंचित् करोमीति युक्तो मन्येत तत्ववित् ।
पश्यन् शृण्वन् स्पृशन् जिघ्रन् अश्नन् गच्छन् स्वपन् श्वासन् ॥
प्रलपन् विसृजव् गृहणन् उन्मिशन निमिषन् अपि।
इन्द्रियाणि इन्द्रियार्धेषु वर्तन्ते इति धारयन् ॥

''जेकी जीव अभिमान वसि ''हीउ सभु कुझु मां करे रहियो आहियां'' अहिड़े कर्तापिणे जे अभिमान सां कर्म करे रहिया आहिनि, उन्हनि कर्मनि जो फलु उन्हनि जीवनि खे अगियां हली अनेक देहियूं धारण कराए थी एं फलु भोगाए थो। अहिड़ा अभिमानी जीव अजाई बकवास था कनि। भगुवान गीता जे 16 अध्याअ में बुधाए थो : मूं अजु हीउ हासिल कयो आहे हीउ पंहिंजो मनोरथ पूरो कंदुसि, मूं वटि केतिरो धन आहे त बि अञा वधीक हासिल कंदुसि। मां ऐश्वर्य खे भोगुण वारो आहियां। मूंखे सभु सिद्धियूं हासिल आहिनि, मां बुलवान ऐं सुखी आहियां, मां पाण समान ब्रिए कंहिं खे बि कीन सुञाणां, यज्ञ कंदुसि, दान कंदुसि, अञा वधीक ख़ुशियूं हासिल कंदुसि, अहिड़ो जीव उन क़िस्म जे अज्ञान खां जकिड़ीयलु आहे।

घणनि ई क़िस्मनि जे भरमियल चित वारा अज्ञानी जीव मोह रुपी ॼार में फाथल, विषय भोगु में आसक्त पापी मर्थोंअ रीत कूड़े अभिमान करे जेकी बि कर्म कनि था, से संदनि कयल क्रियमाण कर्म, संचित कर्म में वञी जमउ थियनि था। जंहिं करे संदनि कर्म खेनि अनेक जनमनि जे चकर में फासाए रखनि था।

(23) सभ जे कल्याण ख़ातिर कयल कर्म

केतिरा कर्म दुनिया जे नज़र में पाप कर्म लेखिजण में ईंदे बि जेकडुहिं इहे जगुत जे सभ जे कल्याण ख़ातिर कया था वञनि त इहे पाप कर्म हूंदे बि संचित कर्म में जमउ न था थियनि। कूड़ु गाल्हाइणु हिकु वडो पाप कर्म लेखिजे थो। अगर कंहिंखां ज़बरदस्ती कूड़ु गाल्हाराइजे थो कंहिंखे कूड़ गाल्हाइण लाइ हिमिथाइजे त इहो बि एतिरोई पापु करे थो, इएं लेखिजे। इन

हूंदे बि ख़ुद भगुवान कृष्ण युधिष्ठिर जहिड़े धर्मराज खे कूड़ ग़ाल्हाइण वास्ते आमादह कयो।

"नरो वा कुंजरो वा" इएं गोलमाल चई धर्मराज युधिष्ठिर "युद्ध में अश्वत्थामा मार्यो वियो आहे" इएं चयो । हिन कूड़ ग़ाल्हाइण में श्री कृष्ण खे पंहिंजो को बि स्वार्थ कीन हो। पांडव जीतिनि त उन्हनि वटां खेसि कोबि हिस्सो या कमीशन मिलिणो कान हुई, पर जे युधिष्ठिर एतिरो कूड़ु न ग़ाल्हाए हा त द्रोणाचार्य जो मौत नामुमकिन हो ऐं आम जे कल्याण ख़ातिर, उते दुष्टनि जो ख़ातिमो कराइण वास्ते, चालू करायल धर्मयुद्ध में पांडव जीते सघनि, इहो बि मुमकिन न हुओ। युधिष्ठर खे कूड़ ग़ाल्हाइण करे थोरो नुक़्सानु त ज़रुर पहुतो, हिनखे सत्यवादीपिणे में थोरो कलंक लग़ी वियो, पर हिक माण्हूअ खे थोरो नुक़्सानु थियण सां जे घणनि जो कल्याण थींदो हुजे त उन लाइ कूड़ ग़ाल्हाण जो उत्साह ड्रियारींदड़ श्रीकृष्ण उन पाप कर्म जो हिमायती हूंदे बि उन कर्म जो फलु न भोग़ियो आहे ऐं संदसि उहो कर्म संचित कर्म में जमउ थी हिन जे कंहिं ब्रिए जनम जो कारण बि बणजी सघियो नाहे। श्री कृष्ण भगुवान पंहिंजे जीवनकाल में चोरियूं कयूं ऐं मखणचोर नाले सां मशहूर थियो। दिव्य मणी चोरायाईं ऐं कूड़ बि केतिरा ई ग़ाल्हायाईं, पर संदसि सभु कर्म सभिनी जे कल्याण ख़ातिर ऐं जगुत जे उद्धार वास्ते कयल हुआ इनकरे भगुवान गीता में चयो आहे, "जन्म कर्म च में दिव्यम्" मुंहिंजो जनम ऐं कर्म ब्रुई अद्‌भुत आहिनि। मूंखे निजी स्वार्थ वास्ते कुझु बि हासिल करणो आहे ई कीन। छो त आऊं पाण ई ख़ुद परीपूर्ण आहियां।"

"हे अर्जन ! मूंखे टिन्ही लोकनि में कुझु बि कर्तव्य करण वास्ते आहे ई कीन ऐं ख़सीस में ख़सीस हासिल करण योग्य वस्तू बि हासिल करणी न आहे। तड्रहिं बि मां कर्म कंदो ई रहां थो, छाकाण जो जेकड्रहिं आउं सावधानीअ सां कर्म कीन कर्यां त हे अर्जन, ब्रिया सभिनी क़िस्मन जा मनुष बि मुंहिंजे वर्ताअ जो नक़ुलु करे पाण बि इएं हलणु शुरु करे छड्रींदा।"

श्री कृष्ण चवे थो त "मुंहिंजो जनम दिव्य आहे ऐं कर्म बि दिव्य आहिनि।" उनजा टे सबब आहिनि - हिकु त आउं ब्रियनि मनुष जियां माउ जे पेट मां नवनि महिननि तांई मलमूत्र में ऊंधो लटिकी जनम वठंदो न आहियां। पर

आउं पाण अज़ख़ुद प्रगट थियां थो। ब्रियो त मुंहिंजे अग्रियनि जनमनि जा संचति कर्म बाक़ी बचियल न आहिनि ऐं टियों पंहिंजे जीवनकाल दौरान मूं जेकी बि कर्म कया आहिनि से सिर्फ़ लीला ई आहिनि ऐं ब्रियनि जे कल्याण ख़ातिर कयल आहिनि। इहे सभु मूं पंहिंजे कंहिं बि राग्रुद्वेष जे असर हेठि, पंहिंजे कंहिं निजी स्वार्थ वास्ते या कर्तापिणे जे अभिमान सां न कया आहिनि। इनकरे इहे मुंहिंजा कर्म संचित कर्म में जमउ कीन थींदा ऐं मुंहिंजे ब्रिए कंहिं बि जनम वठण जो कारणु बि कीन बणिजंदा। आउं पंहिंजी इच्छा अनुसार जिते बि जड्हिं बि जहिड़ीअ देहि जी ज़रुरत पवे थी, तहिड़ीअ ई देहि धारण कयाँ थो। संत तुलसीदास भग्रवान वास्ते चवे थो, "निज इच्छा निर्मित तनु।" पंहिंजीअ इच्छा सां ई भग्रवान मनुष जो चोलो धारण करे थो। दुनिया जे महापुरुष रामकृष्ण परमहंस, स्वामी रामतीर्थ, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, महमद पयग़ंबर जहिड़नि पंहिंजे जीवनकाल दौरान सिर्फ़ ब्रियन जे कल्याण लाइ कर्म कया आहिनि। तंहिंकरे उहे मुक्त जीव मञिया विया आहिनि।

(24) निष्काम कर्म

कामना रहित कर्म, संचित कर्म में जमउ न थींदा आहिनि। सचु त हर हिकु जीव जेकी बि कर्म करे थो, से कंहिं न कंहिं कामना, इच्छा ऐं आशा सां करे थो ऐं उन ग्राल्हि में संदसि ड्रोहु बि कोन्हे। जीव फल जी इच्छा रखे या न रखे त बि संदसि कयल कर्म फल ड्रियण खां सवाइ खेसि छड्रींदा ई कीन। इहो कर्म जो अटल सिद्धांत आहे। पर केतिराई माण्हूं कर्म कनि था पर खेनि संदनि कयल कर्म जो फलु खपंदो ई कोन्हे। हीअ ग्राल्हि विचित्र न आहे, पर बिल्कुल सची आहे। माण्हूं पाप कर्म करे थो पर हुन उन कर्म जो फलु घुर्यो कोन्हे, माण्हू चोरी करे थो, पर हीउ पूलीस खां पकिड़जणु नथो चाहे। छाकाण जो उन जो फलु 'सज़ा' हिन खे खपंदी कान्हे। इनकरे उनजो अर्थु इएं कोन्हे त हीउ निष्काम कर्म करे रहियो आहे। इन्सान खे पाप कर्म करण जी इच्छा थिए थी, पर खेसि उन कर्म जे फल भोग्रण जी चाहिना बिल्कुल न थींदी आहे। हिन खे त सिर्फ़ पुञ कर्मनि जो फलु घुरिणो आहे, पर हिन खे पुञ जा कर्म त करणा न आहिनि।

पुण्स्य फ़लमिच्छान्ति पुण्यं नेच्छन्ति मानवाः ।
म पापफलमिच्छन्ति पापं कुर्वन्ति यत्नतः ॥

पाप कर्म करण वारे खे उनजे फल जी इच्छा कान्हे इनकरे हीउ माण्हू पाप कर्म निष्काम भाव सां करे थो, इंएं समझण न घुरिजे। निष्काम कर्म माना शास्त्रनि जी आशा अनुसार कयल कर्म; धर्म जी मर्यादा अंदर रही, शख़्सी रागद्वेष खां सवाइ, कर्तापिणे जे अभिमान रहित, ब्रियनि जे कल्याण ख़ातिर पंहिंजे निजी स्वार्थ सवाइ कयल कर्म खे निष्काम कर्म थो कोठिजे।

भगुवान गीता में आज्ञा थो करे त "मा कर्म फल हेतु भवः" फल मिले त पोइ कर्म कर्यो। इन भावना सां न, पर पंहिंजो फ़र्ज़ अदाई समझी, संदसि अंतरआत्मा राज़ी थिए उन वास्ते भगुवतप्रीतार्थ, माण्हू कर्म करे त इहो थियो निष्काम कर्म। मनुष सुबुह जो उथण सां ई सुख जी खोज में निकरे थो ऐं सिर्फ़ सुख मिलण वास्ते ई कर्म करे थो। को बि मनुष दुःख जी ख्रोज में निकरी, दुःख वास्ते कर्म न कंदो आहे त बि दुःख डुकी अची थो संदसि गले पवे। इनकरे सुखु या दुःखु प्रारब्ध अधीन आहे, असीं चाहियूं या न, तड॒हिं बि सुखु चाहे दुःखु मिलंदो ई।

गुजरात जे श्रीकृष्ण भक्त नरसिंह महेता चयो आहे त -

सुख दुःख मन मां न आणीए, घट साथे रे घडिया,
टाड़या ते कोई ना नव टड़े, रघुनाथ ना जड़िया।

निष्काम भाव सां भगुवत प्रीतार्थ कयल कर्म संचित कर्म में जमउ न थींदा आहिनि ऐं जीव खे जनम मरण जे चकर में बि न विझंदा आहिनि।

सूर्यनाराइण उभरे थो त यकदम ऊंदहि जो अंत अची थो वञे। असीं जे सूर्यनाराइण खे चउं "असीं तव्हां जा शुकिर गुज़ार आहियूं ऐं उपकार था मञूं जो तव्हां अची गहिरीअ ऊंदहि खे नास कयो आहे।" त सूर्यनाराइण चवंदो, "मूं ऊंदहि खे डि॒ठोई किथे आहे? मूं खेसि नासु कीन कयो आहे। पर सिर्फ मुंहिंजे ज़ाहिर थियण सां ई ऊंदहि पंहिंजो पाणई नासु थी वेई आहे। उन में मुंहिंजी कहिड़ी महरबानी ? मुंहिंजीअ हाज़रीअ में बि जे ऊंदहि क़ाइम रहे त पोइ मुंहिंजे अचण जी क़ीमत ई कहिड़ी ?

सूर्यनाराइण न सिर्फ़ आम जे कल्याण ख़ातिर जगुत खे प्रकाश ऐं जीवन

ड्रियण वास्ते करोड़नि किलोमीटरनि जी मुसाफ़री करे थो, पंर उन वास्ते हीउ कुझु बि पघार कीन थो घुरे। मुक़रर वक्त खां हिकु पलु बि अचण में देर कीन थो करे। पघार, पेन्शन, ग्रैचुएटी या ब्रीअ कंहिं बि शइ जी खेसि कामना कान्हे। सिर्फ़ आम जे कल्याण ख़ातिर कर्तापिणे जे अभिमान खां सवाइ हीउ कर्म कंदो थो रहे। उन खे निष्काम कर्म थो चइजे।

माउ पंहिंजे नंढ़े ब्रार जी परघोर लहे थी। संदसि ब्रार खे 102 बुख़ार अची वञे ऐं हूअ चइनि ड्रींहनि खां ओजाग्रो करे रही हुजे, उन वक्त तन्हां खेसि चओ, "तोखे 100 रुपया था ड्रियूं, तूं हिन ब्रालक खे पाण वटि न रखु, न संदसि परघोर ई लहु, छाकाण त हीउ ब्रालकु वड्रो थी पंहिंजी घरवारीअ सां गड्रिजी तोखे ड्राढो सताईंदो ऐं दुःखी कंदो।" माउ तन्हांजी ग्राल्हि क़बूल कीन कंदी। भली त अग्रिते हली उहो ब्रालकु खेसि दुःखी करे चाहे सुखी, उन ग्राल्हि जो वीचार उन वक्ति माउ खे कीन ईंदो। छाकाण त माउ उन वक्ति निष्काम भाव सां ब्रार जी परघोर करे रही आहे। निष्काम कर्म जा अहिड़ा अनेक मिसाल दुनिया अंदर भर्या पिया आहिनि।

पंज हज़ार पघार खणंदड़ु नशाबंदी विभाग जो ऑफ़ीसर जेको कमु न करे सघियो, सो कमु बिना पघार जे महात्मा गांधीअ ऐं ब्रियनि महापुरुषनि करे ड्रेखारियो। जंहिं पघार खाधी, उहो कमु न करे सघियो ऐं जिनि कमु कयो तिनि कड्रहिं बि पघार कीन घुरी। इन्हनि महापुरुषनि ब्रियनि जे कल्याण ख़ातिर निष्काम भाव सां कमु कयो आहे। निष्काम कर्मनि खे ऐं क्रियमाण कर्मनि खे जे कड्रहिं जीव योग रस्ते कंट्रोल में रखे ऐं उन्हनि खे संचित कर्मनि में जमउ थियणु न ड्रिए त पोइ हीउ जनम मरण जे चक्कर खां छुटी सघे थो। हाणे अचो त प्रारब्ध कर्मनि खे कहिड़ीअ रीत क़ाबूअ में रखिजे उन ते वीचार कर्यूं।

(25) प्रारब्ध भोग्रुण सां ई जान छुटे

गुज़रियल जनमनि में कयल क्रियमाण कर्म पची प्रारब्ध जे रूप में साम्हूं अची बीहंदा आहिनि, उन्हनि खे भोग्रुण खां सवाइ ब्रियो को रस्तो आहे ई कीन। जीवन काल में जेतिरनि बि प्रारब्ध कर्मनि भोग्रुण जो निर्णय थियो हूंदो ओतिरा सभु पूरे जा पूरा कर्म भोग्रुण खां सवाइ देहि जो छुटकारो थींदो

ई कीन। वडॖनि वडॖनि ज्ञानियुनि, महर्षियुनि, विद्वाननि बि प्रारब्ध खां बचण जी का बि कोशिश न कई आहे ऐं छुटी बि न सघिया आहिनि। राजा परीक्षित जो मिसाल असां पढ़ी आया आहियूं ऐं इहो सिद्धि थी चुको आहे त प्रारब्ध रस्ते फल जे रूप में जेकी कुझु बि प्राप्त थियणो आहे सो अवस मिलंदो ई।

घर जी अणबणत सबब भगॖवान राम खे बन में वञिणो पियो। उन वक्ति भरत खे डॖाढो दुःखु थियो। महर्षी वसिष्टजीअ खेसि दिलदारी डॖींदे समझायो-

सुनहु भरत भावि प्रबल बिलख कहेउ मुनिनाथ,
हानि लाभ, जीवन मरण जश अपजश विधि हाथ।

"हे भरत बुधु, भावी डॖाढी ताक़त वारी आहे, मां तोखे पंहिंजे अनुभव सां बुधायां थो त नफ़ो या नुक़्सान, ज॒मणु ऐं मरणु, नेकी या बदी इहे छह गॖाल्हियूं प्रारब्ध ज़े वसि आहिनि, उन्हिन में कंहिंजो बि वसु न थो हले।" प्रारब्ध में जंहिं बि नमूने निश्चित थियल हूंदो, उन नमूने ई सभु कुझु मिलंदो।

रामाइण जो सारो इतिहासु पढ़ी डिॖसो, उन जे हरहिक प्रसंग में हीअ गॖाल्हि गोस्वामीजीअ केतिरीअ न ख़ूबीअ सां पेश कई आहे। हाञी कंहिंजी थी ऐं लाभु कंहिंखे पहुतो। अचो त उन डॖांहं थोरो ध्यान डिॖयूं। हानि कौशल्या माता जी थी। ख़ुद भगॖवान राम जे माता कौशल्या खे वडॖीअ उमर में पंहिंजे हिक ई सिकीलधे पुट ऐं नूंहं खे जुवानीअ में बन वञण जी मोकल डिॖयणी पेई। हाञी थी कोशल्या माता जी ऐं लाभु थियो शबरीअ खे। घर वेठे भगॖवान राम अची खेसि दर्शन डिॖनो। रामजीअ जी सगॖी माउ हुई कौशल्या पर हिन खे हाञी पहुती ऐं जेका रामजी कुझु बि न न हुई तंहिंखे लाभु पहुतो। हाणे डिॖसूं त जीवन कंहिं खे मिल्यो ऐं मौत कंहिंखे नसीब थियो? अहिल्या खे मिल्यो जीवन ऐं मौत नसीब थियो राजा दशरथ खे। जंहिंजे चरणनि जी धूड़ जे स्पर्श सां अहिल्या खे जीवनदान मिल्यो उहो ई परीपूर्ण भगॖवान रामु पंहिंजे पीउ जे मौत खे रोके कीन सघियो ।

प्रारब्ध डॖाढो बॖलवान आहे। जसु कंहिंखे मिल्यो ऐं अपजसु कंहिं खे नसीब थियो? अपजसु केकईअ खे मिल्यो। कौशल्या खां बि वधीक प्रेम केकईअ जो राम सां हुओ। उन हूंदे बि हिन हिक अहिड़ी अणवणंदड़ गॖाल्हि कई जो संसार जा सभु माण्हू रामाइण पढ़ण वक्ति केकईअ ते फिट लानत था विझनि।

को बि माण्हू पंहिंजीअ धीउ जो नालो केकई न रखंदो। श्री राम कौशल्या खां वधीक केकईअ खे प्यार कंदो हो। उन हूंदे बि केकईअ खे अपजसु ई मिल्यो।

केकईअ जो आत्मबलु एतिरो त ज़बरदस्त हुओ जो भगुवान राम खे राक्षसनि जे कुल जो नासु करण लाइ जेको नाटकु करणो हो, उन में खलनायिका (Villain) जो किरदारु अदा करण वास्ते हिन केकईअ माता खे चूंडियो। घणी ई नफ़रत, निंदा सहन कयाईं। पति विञाए विधवा थी, विधवापिणे जा दुःख सठाईं, तंहिं हूंदे बि केकईअ खे जेको किरदार निभाइणो हो, सो बख़ूबी बहादुरीअ सां अदा करे डेखारियाईं। कौशल्या या सुमित्रा खे जेकडहिं हीउ खलनायिका जो किरदारु अदा करण मिले हां त इहे माण्हुनि जे अपमान, निंदा, विधवापिणे जे कारे टिके जे ख़्याल खां ई कंबी वञनि हां ऐं इहो पार्ट बख़ूबी करण खां थिड़की वञनि हां। पंहिंजी सगुीअ माता खां बि वधीक प्यारी केकईअ खे भगुवान राम जे हिन खेल में अपजसु नसीब थियो। खेल जो सारो जसु बांदर खणी विया। रावण सां युद्ध करण वक्ति अयोध्या जे सेना जो हिकु बि सिपाही कम कीन आयो। बांदरनि जो लश्करु रामजीअ खे रावण खां जीताइण जो जसु खणी वियो। इनकरे ई मुनी वसिष्टजीअ चयो आहे, "हाञी-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश, विधि हाथ।"

प्रारब्ध में अगर हाञी, लाभ, जीवन-मरण, जस चाहे अपजस जी पक थियल हुजे त उनखे केरु बि मेटे या रोके नथो सघे। जीवन हिक शतरंज जी रांदि आहे, जंहिं में जीव हिक पियादे सिपाहीअ मिसल आहे। जगुत जे हिन खेल में परमात्मा हर हिक जीव खे पंहिंजे प्रारब्ध मूजिब जेको पार्ट अदा करणो आहे, उन मूजिब ई हिनखां प्रारब्ध भोगुण जो पार्ट अदा कराए थो।

घणा माण्हू ज्योतिष जो सहारो वठी पंहिंजो प्रारब्ध ज्ञाणण जी कोशिश कंदा आहिनि। प्रारब्ध खे शायद अगुवाट ज्ञाणिजे बि, तडहिं बि प्रारब्धु पुठि कीन छडींदी, ज्योतिषि शास्त्र साइंस जियां सफ़ा गणित शास्त्र आहे। ज्योतिष शास्त्र हिकदम सचो शास्त्र आहे, उनखे बुधाइण वारा घणे भाङे खोटा थियनि था छाकाणि त इहे धंधे करण वारा थींदा आहिनि। इनकरे ज्योतिष शास्त्र सचो कूड़ो थी वियो। प्रारब्ध वसि फल जे रुप में जेकी कुझु बि प्राप्त थियणो आहे सो त अवसि ई मिलणो आहे। उनजा टे निमित कारण थी सघनि था

भगुवान जी पूजा जो पुष्पु बणाए छड़ि त पोइ तूं पक ई पक परमसिद्धिअ खे प्राप्त कंदें।''

''सिद्धि विन्दति मानवः।''

उन वास्ते कंहिं झंगल में वञी भारी तपु या साधना करण जी का ख़ास ज़रूरत न आहे। असां संसार में रही बि अगर पंहिंजो नितकर्म भगुतीअ सां ईश्वर लगु कंदा रहूं त असांजो हर हिकु कर्म परमात्मा जो पुष्पु बणजी पवंदो। भगुवान गीता में स्पष्ट आज्ञा करे थो-

यत करोषि यद अश्नासि, यत जुहोर्षि ददासियत्।
यत तपस्यसि कौन्तेय, तत् कुरुष्व मदर्पणम् ॥

''तूं जेकी बि पंहिंजा नित कर्म करीं, से मूंखे अर्पण करण जे ख़्याल खां करि। पोइ तूं डिसंदें त उहो हर हिकु कर्मु तोखां पंहिंजो पाणई शुद्ध थींदो।''

स्वे स्वे कर्मणि अभिरतः संसिद्धि लभते नरः।

तूं ब्रियनि जे कर्मनि में अजायो पंहिंजो मथो न हणु, सिर्फ़ पंहिंजा नित कर्म बराबर कंदो रहु। संसार जे नाटक में तूं जंहिं स्टेज ते आयो आहीं, उते तूं पंहिंजो पार्ट बख़ूबी अदा करे डेखारि।

ब्रिया पंहिंजे पार्ट अदा करण में अगर भुलूं चुकूं कनि त उन्हनि में अजाई नूस नूस करणु तुंहिंजो कमु कोन्हे। ब्रिया ऐक्टर जे पंहिंजे पार्ट अदा करण में घटितायूं करे रहिया आहिनि त मैनेजर पाणही संदनि पघार कटींदो या कढी बाहिर कंदो पर ब्रिया ऐक्टर पंहिंजो कमु ठीक कनि था या न, इहो डिसणु तुंहिंजो कमु न आहे। इहो कमु मैनेजर यानी परमात्मा जो आहे। तूं ब्रियनि जे झंझट में न पउ, तूं सिर्फ़ पंहिंजो पार्ट बख़ूबी अदा कंदो रहंदें त पोइ भलु जा ब्रिया ऐक्टर पंहिंजो पार्ट बराबर अदा कनि चाहे न कनि, त बि परमात्मा 'मैनेजर' तोखे को बि नुक़्सान कीन पहुचाईंदो ऐं न वरी को दड़को ई डींदो। ब्रिए जी मूर्खता वास्ते तूं छो वेठो अजायो पाण खे ख़राब करीं।''

This world is a stage, where we all are actors.

तुंहिंजो पिता, पुट, पति, पत्नी, सेठ या नौकर तरीके जे को बि पार्ट हिन विश्व रूपी स्टेज ते अदा करण वास्ते मुक़र्रर थियो हुजे, सो पार्ट बख़ूबी अदा करे डेखारि त जींअं तुंहिंजो मैनेजर परमात्मा घणो ई ख़ुश थिए। तोखे

ब्रियनि माण्हुनि जी चिंता करणु न खपे ऐं खोटी ब्रधछोड़ में बि पाण खे अटिकाइणु न खपे।

तूं जेको बि करीं, सो उन भावना सां करि ज्रणु कि तूं उहो कर्म भगुवान जी पूज्रा करण वास्ते करे रहियो आहीं।

पूजा ते विषयोपभोगरचना, निद्रा समाधिस्थितिः ।
संचारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरः ॥

तूं संसार में जंहिं बि विषय जी रचनात्मक क्रिया करीं त ईअं समझी करि, ज्रणु तूं परमात्मा जी क्रिया करे रहियो आहीं, जे तूं निंड कंदो हुजीं त बि उन वक्ति ईअं समझु त, "मां परमात्मा जी गोद में मथो रखी संदसि ध्यान में लीन थी वियो आहियां।"

तूं बज़ार वञी, आफ़ीस वञी या जेडांहि बि वञी, तुंहिंजे पेरनि जो जिते जिते बि प्रवेश थिए, उते तूं ईअं ज्राण त "मां परमात्माजी प्रदक्षिणा करे रहियो आहियां।" छाकाण त परमात्मा हर हंध मौजूद आहे। तूं जंहिं बि जगुहि ते जेकी कुझु बि ग्राल्हाईं ब्रोल्हाईं, सो ईअं समझु ज्रणु त तूं भगुवान जा स्त्रोत, वडाईअ जा गीत ग्राए रहियो आहीं। अहिड़ीअ रीत इन भावना सां जे तूं पंहिंजो हिकु हिकु कर्म कंदो रहंदें त तुंहिंजो हर हिकु कर्म भगुतीमय थी पवंदो ऐं भगुतीअ में प्रब्रीण थियण खां पोइ तोखे झांझूं वज्राए, खरताल खड़काए या महादेव जे मंदिर में चोटो ब्रधी भग्रिती करण जो मिखिरु करे भगुवान खे राज़ी करण जी कूड़ी कोशिश करण जी कुझु बि ज़रुरत कीन रहंदी। पंहिंजे नित कर्म सां ई तूं भगुवान जी अखंड पूज्रा करि। पूज्रा करण लाइ कंहिं बि सामग्रीअ जी ज़रुरत न आहे। तुंहिंजो हरहिकु कर्म ई पूज्रा जी सामग्री आहे। पूज्रा जी भावना खां सवाइ कर्म जी कुझु बि क़ीमत कान्हे।'

जेकडहिं हिकु सफाई वारो निःस्वार्थ भावना सां सफ़ाईअ जो कमु करे रहियो आहे त भगुवान जी नज़र में हिन सफाई वारे जे सफ़ाईअ जो इहो कमु हिकु अति उत्तम "परमात्मा जी पूज्रा" जो कर्म आहे। जडहिं कि ब्रह्मण पूज्रारीअ जी अभ्यर्चना (निःस्वार्थ) जी भावना खां सवाइ शिवलिंग जो हज़ार दिलनि पाणीअ सां पूज्रा पिण हिक निकमी मर्यादा थी पवे थी।

परमात्मा जे हिन महान विराट यंत्र में हरहिक जीव खे हिकु ख़ास मुक़

कार्य सौंपण में आयो आहे। संदसि जेको बि मुक़रर थियल कार्य आहे, जंहिंखे नित कर्म, स्वकर्म या स्वधर्म चइजे थो, सो हर हिक इन्सान खे उन में पुख़्तो रही सावधानीअ सां पूरो करणो आहे। इहा ई भगुवान जी आज्ञा आहे।

पंहिंजो स्वकर्म, स्वधर्म छडे बारनि बुचनि खे छिनो छोरो बणाए कंहिंजो कमु अध में रुलाए, झंगल में वञी धूणी दुखाए वेही या सन्यासी बाओ ठही वेहे त अहिड़ो कमचोर, टोटी, संधनि सुकलु परमात्मा जे कोर्ट में सख़्त सेखत जे लाइक़ थिए थो। भगुवान गीता में चवे थो त -

स्वधर्मे निधनम् श्रेयः परधर्मो भयावहः ।

पंहिंजो धर्म इते उते कल्याणकारी आहे। पंहिंजे धर्म में मरणु बि सुखदाई आहे, पर बिए जो धर्म अख़्तियार करणु महा दुःखदायक आहे ऐं जनम मरण जो चकर डियण वारो आहे।

को गृहस्थी पंहिंजे धर्म खे छडे ज़ाल ऐं बारनि बुचनि खे रण में रुलाए, धंधो, वापार, नोकरी छडे वञी सन्यासी बाओ बणजे त हू पक दुःखी थींदो।

परमात्मा जंहिं मनुष जो जेको स्वधर्म, स्वकर्म, नितकर्म मुक़रर कयो आहे, सो संदसि शक्तिअ जो पूरो पूरो अंदाज़ो लगाए घणीअ समझदारीअ सां मुक़रर कयो आहे। परमात्मा मनुष खां घणो वधीक होशियार ऐं समझू आहे।

भगुवान मूंखे हिन बेकार कम में किथे अची लगायो आहे ? ईअं चई परमात्मा जो क़सूर कढी पंहिंजे स्वधर्म खे छडे डियणु परमात्मा जी इच्छा जो निरादर करण बराबर आहे। ईश्वरी योजना में दख़लगीरी करण जे बराबर आहे ऐं इश्वर जे अधिकार खे समझण सीने सहाइण जे बराबर आहे। जगुत सृष्टिअ जे हेडे वडे कारख़ाने में तूं सिर्फ़ हिकु स्पेरपार्ट बराबर आहीं। परमात्मा हिन जगुत जे ज़बरदस्त यंत्र में तोखे सोचे समझी, जिते बि फ़िक्स कयो आहे, उते पुख़्तो रही, जगुत जे मालिक जे हिन तमाम वडे यंत्र खे हलाइण में तोखे तुंहिंजे हिस्से में आयल पंहिंजो नितकर्म, स्वधर्म सिक ऐं श्रद्धा सां निष्ठापूर्वक परमात्मा डांहुं पूरीअ वफ़ादारीअ सां संदसि आज्ञा में रही बराबर नमूने निभाइणो आहे। उनमें तोखे पंहिंजी अजाई खोटी सियाणप हलाइण जी कुझु

बि ज़रुरत न आहे।

"मां एल.एल.बी. पास करे वकील थियुसि, उनखां जे एम.बी.बी.एस पास करे डॉक्टर थियो हुजां हा त मां जेकर ड॒हूणो धन वधीक कमाए सघां हा।" अहिड़ियूं वाहियात ग॒ाल्हियूं करे अजु हिन पंजाह वरिहयनि जी उमिर में वकालत जो धंधो 'स्वधर्म' छड॒े मां जे वञी दवाख़ानो खोले वेहां, 'परधर्म' अख़्तियार कर्यां त पोइ घणनि ई माण्हुनि खे मौत जे घाट उतारे छड॒ियां, छो त परधर्म भयावह।

हर हिक इन्सान जो स्वकर्म, स्वधर्म, नितकर्म मुक़रर कयलु हुजे थो, ब॒ालक ज॒मण सां ई पंहिंजो स्वकर्म स्वधर्म ज॒ाणे थो। खेसि बुख लग॒ी थी,उन वक्ति हू पंहिंजो पाण सभु कार्य करे पंहिंजी बुख मिटाए थो। उन जे पोयां परमात्मा जी अलौकिक प्रेरणा रहे थी। माता त सिर्फ़ पंहिंजो स्वधर्म पूरो करे थी ऐं ब॒ारु स्वकर्म करे थो। ताज़ो ज॒ावलु ब॒ार पिण परमात्मा जी प्रेरणा सां ज॒ाणे थो त उन नमूने हू पंहिंजो नितकर्म पंहिंजे सुभाव मूजिब करे थो। उन में माता खे खेसि सेखारण जी कुझु बि ज़रुरत नथी पवे।

घोड़े खे उञ लग॒े, उन वक्ति कीअं पाणी पीइजे इहो पंहिंजो स्वधर्म, स्वकर्म हू बराबर ज॒ाणे थो ऐं अगर खेसि उञ न लग॒ी हुजे त तन्हीं बाल्टीअ में पाणी भरे संदसि साम्हूं रखी बि खेसि पाणी पीआरे न सघंदा।

You can take the horse to the stream,
But you can not make him drink.

इन नमूने ब॒ाल अवस्था में विद्या हासिल करणु, इहो जीव जो स्वकर्म, स्वधर्म ऐं नितकर्म आहे। गृहस्थ आश्रम में नोकरी, धंधो, वापार, करणु,न्याअ नीतीअ सां पंहिंजे कुटुंब जो पालन पोषण करणु ऐं समाज जे ब॒ियनि आश्रम-वासियुनि जी शेवा करणु, इहो संदसि नित कर्म आहे।

इन रीत वानप्रस्त ऐं सन्यासीअ जा बि स्वकर्म स्वधर्म ऐं नितकर्म मुक़रर थियल आहिनि ऐं खेनि इहे स्वधर्म, स्वकर्म सिक ऐं श्रद्धा सां ईश्वरप्रीतार्थ करणा आहिनि। ब्रह्मण, खत्री, वइश ऐं शूद्र जा पिण स्वधर्म, स्वकर्म शास्त्रनि में ज॒ाणायल आहिन।

सियारे में गरम कपड़ा पहिरणु, इहो स्वधर्म आहे। उन्हारे में थाधल महिसूस थिए, अहिड़ो खाधो ऐं कपड़ा पहिरणु स्वधर्म आहे। सुबह जो सवेर उथी वातु ऐं ड̱ंद सफ़ा करणु, टायलेट में वञी पेट जी सफ़ाई करणु, स्नानपाणी करणु, मंझंदि जो वञी धंधो करणु, नोकरी, करणु या वापार करणु ऐं रात जो भगुवत स्मरण करणु वग़ैरह करणु इहे सभु नित कर्म आहिनि। इन रीत हर हिक मुंद में, समे में, काल में, हर अवस्था में स्वधर्म बदिलजंदो थो रहे। इन रीत देश, काल ऐं परिस्थितिअ, हालातुनि जो जाइज़ो वठी हर हिक खे पंहिंजो पंहिंजो स्वधर्म, स्वकर्म ऐं नितकर्म ज़रूर करणु घुरिजे।

(37-1) पाप खुले मैदान कर्यो ऐं पुञ लिकी छिपी कर्यो।

चोरी करणु बि हिक किस्म जी कला आहे। नैतिक दृष्टिअ जो अगर वीचार न कजे त चोरी करणु बि हिक ज़बरदस्त ड̱ुखी कला आहे। चोरीअ जो अर्थ आहे त "अहिड़ीअ रीत अहिड़ो कुझु कर्म कजे, जो उनजी ख़बर संसार में कड̱हिं बि कंहिं खे बि कंहिं वक्ति बि कीन पवे।" जेकड̱हिं ख़बर पइजी वञे त चोर खे दिमाग़ी न चइबो।

मुंहिंजे घर में को चोरु घुसी थो अचे। ड̱ींहं जी घणीअ रोशनीअ में जेका वस्तु मूंखे गो̱ल्हण में मुश्किलात दरपेश पई आहे, सा वस्तू रात जे अंधेरे में अणजा̱ण घर में बिना कंहिं आवाज़ या खड़के करण जे हू गो̱ल्हे कढे थो ऐं मूंखे उनजी ख़बर बि कीन थी पवे। कदाचित चोर अगर पंहिंजी कुझु बि निशानी छड̱े वञे त पोइ चोर खे अञा कचो चोरु या सेखराट चोर समिझिबो, खेसि पको चोरु चई कीन सघिबो।

इन रीत परमात्मा जे प्रकाश 'ज्ञान' जी हासलात करणु बि हिक क़िस्म जी अलौकिक चोरी ई आहे। अगर कंहिं खे ख़बर पइजी वञे त तव्हीं सच जी खोज में आहियो त इहा ख़बर पइजी वञणु बि सच जी खोज में रुकावट बणजी पवे थी।

यसूमसीह चवे थो त, "तव्हां जो साजो̱ हथु छा करे रहियो आहे, उनजी ख़बर खाबे̱ हथ खे बि पवणु न घुरिजे ऐं तव्हां जी प्रार्थना एतिरी त मौनिक

माठीणी हुअणु घुरिजे जो परमात्मा खां सवाइ केर बि बुधी न सघे।''

असां जूं प्रार्थनाऊं परमात्मा खे बुधण में ईंदियूं आहिनि या न पर आसपास सज़े पाड़े में त पक ई बुधण में ईंदियूं आहिनि। असांजी प्रार्थना परमात्मा खे बुधणु अचे या न, इन ग़ाल्हि जी असां खे कुझु बि परवाह न आहे, पर पाड़ेवारिन खे इहा प्रार्थना ज़रुर बुधण में अचणु खपे इन ग़ाल्हि जी हमेशह असांखे चिंता रहंदी आहे। इनकरे असीं ज़ोर सां वड़े आवाज़ में गलो फाड़े प्रार्थना कंदा आहियूं।

असीं धर्म, पुञु पिण ढोल वज़ाए खुले मैदान कंदा आहियूं, पर अधर्म, पाप कर्म, चोरी लिकी छिपी सभ खां नज़र बचाए माठ मीठ में कंदा आहियूं। संत ऐं शास्त्र चवनि था, ''असीं जीअं पाप कर्म, चोरी लिकी छिपी माठमीठ में कयूं था, तीअं पुञ कर्म पिण चुपचाप चोरीअ लिकी छिपी करणु घुरिजनि।''

संत ऐं शास्त्र शायद हीअ ऊंधी ग़ाल्हि चवंदा हुजनि ईअं असांखे लग़ुंदो हूंदो, पर हीअ का ऊंधी या उल्टी ग़ाल्हि न आहे। इहे सभु बराबर ई चई रहिया आहिनि त, ''पाप खुले मैदान में सभिनी जे साम्हूं कर्यो ऐं पुञ चोरीअ लिकी छिपी ब्रियनि जी नज़र खां बचाए कर्यो।'' छाकाण त असीं जे पाप कर्म खुले मैदान में सभिनी जे साम्हूं करण वेंदासूं त कड़हिं बि पाप करे कीन सघंदासूं।

जेकी कुझु असां खे ज़ाहिर करणु न घुरिजे, सो असीं ज़ाहिर कयूं था। छाकाण त असां खे सिर्फ़ ड़ेखाउ करणो आहे। इनकरे असीं ढोल वज़ाए उनखे जग़ ज़ाहिर कयूं था ऐं जेकी कुझु असां खे सचुपचु ज़ाहिरांज़हूर जग़ प्रसिद्ध करणु घुरिजे, सो असीं चोरीअ लिकी छिपी ब्रियनि जी नज़र खां बचाए यक्दम करे था छड़ियूं। ईअं करण में ई असीं दोखो खाई था वञूं। असां खे सचुपचु जे पापु न करणो हुजे त असीं इहो पापु खोले सभिनी जे साम्हूं करणु शुरु कयूं त पोइ असीं इहो पाप कर्म करे ई कीन सघंदासूं। असां खे सचुपचु पुञ कर्म बि जे न करणो हुजे ऐं सिर्फ़ ड़ेखाउ ऐं दोखेबाज़ी ई करणी हुजे त इहो पिण खुले मैदान में करण घुरिजे। जीअं असीं माण्हुनि खे मूर्ख बणाए सघूं ऐं ढोंग बि करे सघूं। पर उनखे सचीअ माना में पुञ कर्म कोठे न सघिबो। असीं ज़ाणूं था त असां खे पाप कर्म करणो ई आहे, इनकरे इहो लिकी छिपी

चोरी॰ करे था छड़ियूं ऐं वरी जड़हिं असां खे पुञ कर्म करणो ई नाहे, सिर्फ़ प्रचार करणो आहे त असीं इहो बि ढोल वज़ाए ज़ाहिर कयूं था।

(37-2) पाप कर्म या पुञ कर्म ज़ाहिर थियण सां संदनि फल ब़ाफ बणजी ख़लास थी वञे थो ।

असीं जेकी बि पुञ कर्म कयूं था या सख़ावत जा कम कयूं था, तिनि जी ज़ाहिरात करे पंहिंजो फोटो ऐं इश्तहार अख़बार में छपाए पंहिंजे नाले जा बोर्ड लग़ायूं था। असां जे पुञ कर्मनि जी मशहूरी थियण सां यकदम उन्हनि जो फलु नास (Evaporate) थी वञे थो ऐं उन्हनि पुञ कर्मनि जो फलु असांजी साराह, मशहूरीअ सभिनी जे वातां चर्चा जे रुप में असां खे बरवक़्त ई मिले थो। पोइ इहे पुञ कर्म संचित में जमउ थी असां जो प्रारब्ध बणजी ब़ियो भेरो फल ड़ियण वास्ते बाक़ी बचनि ई कीन था।

महाभारत में ययाती महाराज जी हिक ग़ाल्हि अचे थी। हिन राजा अणग़ुण्या यज्ञ, दान, तप, वग़ैरह पुञ कर्म कया हुआ। पंहिंजे पुञ कर्मनि जे प्रभाव करे हू इन्द्रजी गादीअ ते वेहण जो अधिकारी बणियो हो। हू सुर्ग़ लोक में इन्द्र जी राजसभा में वियो। राजा इन्द्र उथी बीही संदसि स्वागत कयो ऐं सिंघासन तां हेठि लही ययाती राजा खे पाण पंहिंजे हथनि सां सिंघासन ते विहार्यो। पोइ इन्द्र भरीअ सभा में उथी बिही ब़ुई हथ जोड़े राजा जे कयल यज्ञ, दान, तप, वग़ैरह जी विचूर सां वड़ाई, साराह करण लग़ो।

इन्द्र चयो, ''राजन! तव्हां अनेक सोन जे मुहिरिनि जो दान कयो आहे, तव्हां अनेक सोननि ग़ुहिणनि, सींगारियल खीरु ड़ींदड़ गांयुनि जो दान कयो आहे। तव्हां अनेक वाह, खूह, तलाव, धर्मशालाऊं, पाठशालाऊं, दवाख़ाना ऐं मंदर ठहराया आहिनि। तव्हां तमाम ग़रीबनि खे वस्त्र, अन ड़िना आहिनि। तव्हां अनेक धर्मखेत्र (क्षेत्र) ऐं अनखेत्र खोलिया, यज्ञ कराया, गौ, ब्रह्मण, ऋषियुनि, मुनियुनि ऐं संतनि, साधुनि खे हर तरह सां ख़ुश ऐं संतुष्ट कयो आहे वग़ैरह वग़ैरह।'' इन रीत इन्द्र राजा ययातीअ जा थियल पुञ कर्म हिकु हिकु करे विचूर सां खांउस ग़ुणाईंदो वियो ऐं राजा ययाती इन्द्र जी गादीअ ते वेठे अहंकार विचां सहानुभुतिअ ड़ेखारींदे सिर्फ़ पंहिंजो सिर हिलाईंदो वियो।

इन रीत राजा जे तमाम पुञ कर्मनि जे वर्णननि जो पूरो थियणु ऐं राजा जो

सांधहि सिर हिलाए पंहिंजे तमाम पुञ कर्मनि जे ज़ाहिर करण जी क़बूलियत डि॒यण जे पूरे थियण शर्त ई इन्द्र राजा ययातीअ खे चयो, "महाराज, हाणे तव्हीं महिरबानी करे इन गादीअ तां हेठि लही अचो, छो त तव्हां जा तमाम पुञ कर्म ज़ाहिर थी पिया आहिनि, इनकरे इन्हनि पुञ कर्मनि जो फलु ख़लास (Evaporate) थी वियो। तव्हीं मुंहिंजी गादीअ ते वेहण जे अधिकार खां ख़ाली थी विया। तव्हां जे पुञ कर्मनि जे फल सरुप मुंहिंजीअ भरीअ सभा में तव्हां जी वाह वाह ब्रो॒लाई वेई, तव्हां जी घणे में घणी वाखाण, साराह कई वेई, जंहिंकरे तव्हां जे पुञ कर्मनि जो फलु तव्हां खे मिली वियो ऐं तव्हां जा पुञ कर्म तव्हां खे तत्काल फलु डे॒ई पूरा थी विया। हाणे इहे संचित कर्म में जमउ थियण वास्ते बाक़ी बचियाई न आहिनि, जो प्रारब्ध बणजी तव्हां खे ब्रे॒हर फलु डि॒यण वास्ते वापस अचनि।

इन रीत पंहिंजे पाप कर्मनि खे जेकड॒हिं असीं ज़ाहिर कंदासूं त उहे पिण ख़लास थी वेंदा। महात्मा गांधीअ नंढपिण में जेकी बि पाप कर्म कया हुआ, जीअं पटेवालनि जूं जूठियूं ब्रीड़ियूं पीअणु, मासु खाइणु, वेश्या जे घर वञणु, पीउ जे खीसे मां चोरी करणु, पीउ जे मरण जी आख़िरी घड़ीअ वक्ति बि विकार जे वसि थी ज़ाल सां भोगु करणु वग़ैरह। मतलब त जेकी बि पाप कर्म हिन कया हुआ से सभु हिन पंहिंजी आत्मकथा में क़बूल करे जगु ज़ाहिर करे छडि॒या। इनकरे संदसि उन्हनि पाप कर्मनि जो फलु ख़लास थी वियो। सागी॒अ तरह ठक्करब्रापा, भिक्षु अखंड आनंद वग़ैरह ब्रि॒यनि संतनि पिण पंहिंजे परइस्त्री गमन करण जे पाप कर्म खे पंहिंजीअ आत्मकथा में हिमथ रखी बिना कंहिं लिक लिकाउ जे ज़ाहिर कयो आहे। इन रीत उहे पंहिंजे पाप कर्मनि जो पश्चाताप करे उनजे ख़राब फल खां मुक्त थिया आहिनि ऐं ब्रि॒यनि माण्हुनि जे वातां पंहिंजी गिला बुधी पंहिंजीअ दिल जो बारु हल्को कयो आहे।

व्यास मुनीअ खुलेआम ज़ाहिर कयो त संदसि माउ हल्कीअ ज़ात जी मछीअ मारणवारे मुहाणे जी धीअ हुई। हिन जेकड॒हिं ईअं ज़ाहिर कयो हुजे हा त संदसि माउ भावनगर जे कंहिं नगर सेठजी धीउ हुई त खेसि केरु बि खोटो कीन समझे हा। नारदमुनीअ भागु॒वत में बुधायो आहे त संदसि माउ जे सन्यासियुनि जे आश्रम में कपड़ा, बरतन, धोअण, किनु कचिरो कढण ऐं सफ़ाई

करण जो कमु कंदी हुई ऐं सन्यासियुनि जो बचियल जूठो अनु खाईंदी हुई।

महापुरषनि ऐं संतनि पंहिंजा ऐब सचीअ दिल सां पाण ख़ुद हिमथ करे ज़ाहिर कया आहिनि। ईअं करण सां उन्हनि लोक निंदा जी कुझु बि परवाह न कई आहे ऐं इनकरे उहे महात्माऊं लेखिजण में आया आहिनि। उन्हनि सचीअ ग़ाल्हि खे सचे नमूने हिमथ रखी पेश कयो आहे। इनकरे संसार में केरु बि संदनि निंदा करण जो हिमथ नथो रखे, जीअं त असीं पाप कर्म लिकी छिपी कयूं था तीअं उन्हनि कयल पाप कर्मनि जो फलु बि असीं रुअंदे लिकी छिपी ई भोग्रियूं था। ''चोर जी माउ रुए कुंड में।''

सतीराणी तोरल जाडेजा खे चए थी त, ''हे जाडेजा, तूं पंहिंजा पाप कर्म ज़ाहिर करि ऐं पंहिंजो धर्म जो पालन करि। तुंहिंजी ब्रेड़ीअ खे मां ब्रुडणु कीन ड्रींदियसि। ''जाडेजा पिण सतीराणी तोरल जो चयो मञी पंहिंजा पाप ज़ाहिर कंदे चयो त,''जेतिरा मथे में वार आहिनि मूं ओतिरा पाप कया आहिन।''

सिर्फ़ जीव ई भुलूं चुकूं करण जे पात्र आहे। अनेक जन्म जन्मांतरनि जूं कामनाऊं अंतःकरण जे पर्दे खे वेढ़े वकोड़े वेठियूं आहिनि। उन्हनि जे असर खां कदाचित जीव घोर पाप कर्म करे बि वेहे त बि जे हीउ सचीअ दिल सां पश्चाताप करे भग्रवान साम्हूं ब्रई हथ जोड़े उथी बीही नंढे ब्रालक जियां सुड्रिका भरींदे ज़ार ज़ार आंसू वहाईंदे, ओछिंगारूं ड्रेई रोई पवे त भग्रवान संदसि जीवन नौका खे संसार सागर में ग़ोता खाईंदे बि यकदम बचाए वठंदो।

भग्रवान हिकु लख रुपयनि जे इस्टैम्प पेपर ते लिखी, गीता में छाती ठोके हिमथ अफ़ज़ाई कंदे चवे थो,

अपिचेत् सुदुराचारो, भजते माम् अनन्यभाक्।
साधुरिव सः मंतव्यः, सम्यक् व्यवसितो हि सः ॥
क्षिप्रं भवति धर्मात्मा, शरवत् शांति निगच्छति।
कौन्तेय प्रतिजानिहि, न में भक्तः प्रणश्यति॥
तेषां अहं समुद्धर्ता, मृत्युसंसारसागरात्।
भवामि न चिरात् पार्थ, मय्यावेशित चेतसाम्

जेकड्रहिं को महापाखंडी, दुराचारी, पापी बि सचीअ दिल सां मुंहिंजो

भगुतु थी मूंखे सदाईं याद कंदो, ध्याईंदो रहे त उहो साधू पिण पूजुण लाइक़ आहे, छाकाण त हिन सही फ़ैसलो कयो आहे। जहिड़ो कि वाल्मीकी। जेको हिकु सख़्त दुराचारी लुटेरो हो।

"मुंहिजो नाम जपण खां पोइ पापी बि जल्द ई धरमात्मा थी पवंदो ऐं परम शांतिअ खे प्राप्त कंदो। हे अर्जन, तूं इहो पक करे ज्राण त मुंहिंजो भगुतु कड़हिं बि नास कीन थींदो आहे।" "हे अर्जन ! उन्हनि मूं में चित वृती लगाइण वारनि प्रेमी भगुतनि जो मां जल्दी ई मृत्यु रुपी संसार सागर मां उद्धार करे खेनि पार पहुचाइण वारो बणिजंदो आहियां।"

महान में महान पापी बि अगर मुंहिंजे अगियां पंहिंजनि पापनि जो पश्चाताप करे रोई पवनि त मां उन वक्ति ई खेनि संसार सागर में बुड़ण खां बचाए वठां थो, उन्हनि खे नास थियणु न थो ड्रियां।" अहिड़ी हिमथ अफ़ज़ाई भगुवान खां सवाइ भला केरु करे सघंदो।

असीं जे सिमरिणियूं न सोर्यूं, रामनामु न जपियूं चंडीपाठु न कर्यूं, गीता जो पाठु न कर्यूं, भागुवत सप्ताह न बुधूं त बि कुझु फ़र्कु कोन्हे। सिर्फ़ असां अजु तांई कयल पंहिंजे अत्याचारनि, तमाम पापनि जी हिक लिस्ट पाण ख़ुद पंहिंजे अखरनि में ठाहे, भगुवान अगियां वेही घड़ी पश्चाताप सां रोअंदे हर रोज़ पढ़ंदा रहूं त बि जेकर असीं पवित्र बणजी पऊं, पर असीं निठर, ठिकर एतिरो बि करण वास्ते तैयार न आहियूं ऐं इनकरे खिलंदे खिलंदे कयल पाप कर्मनि जो फलु दुःख रोअंदे पेटु भरे भोगियूं था।

(38) पुरषार्थ सां प्रारब्ध खे बि फेरे थो सघिजे छा ?

प्रारब्ध कर्म भोगुण वास्ते उन्हनि जे मुताबिक़ देह धारण करणी पवे थी। उन देहकाल दौरानि तमाम प्रारब्ध कर्म भोगे पूरा कजनि त पोइ ई उहा देह छुटे थी। तेसिताईं उन देह खे धारण करे रखिणो पवे थो। शरीर काल दौरानि भोगुण में प्रारब्ध कर्मनि जा चार मुख्य भाङा करे था सघिजनि।

(1) अति तीव्र प्रारब्ध (2) तीव्र प्रारब्ध (3) मंद प्रारब्ध (4) अति मंद प्रारब्ध।

(1) अति तीव्र प्रारब्ध : हिन जे कर्म फल खे खणी केतिरो बि ज़बरदस्त पुरषार्थ कजे त बि बदलाए या अटकाए नथो सघिजे। छाकाण त जीव जो

जुदा जुदा जूणियुंनि में जनम वठण अति तीव्र प्रारब्ध कर्म जो फलु आहे। अति तीव्र प्रारब्ध खे कंहिं बि नमूने खणी केतिरो बि उदम छो न कजे, त बि फेरे नथो सघिजे। जहिड़ोकि गडह मां घोड़ो या घोड़े मां उठु या को बि पखी बणाए न थो सघिजे। मनुष खे पिण संदसि देह अति तीव्र प्रारब्ध करे ई मिली आहे। उन में काबि फेर घेर करे कीन थी सघिजे। जीअं पुरष मां स्त्री या स्त्रीअ मां पुरष अगुले जन्म में कयल महान पुञ कर्मनि या उते कयल घोर पाप कर्मनि मां अति तीव्र प्रारब्ध ठहे थो ऐं उहो कंहिं बि नमूने टारे नथो सघिजे। अति तीव्र प्रारब्ध धनुष मां छुटल तीर जे बराबर आहे। जीअं हिकवार धनुष मां छुटल तीर खे वापस आणे न थो सघिजे, तीअं अगुले जनम में कयल महान पुञ कर्मनि या उते कयल घोर पाप कर्मनि जे फल सरुप पची रास थियल प्रारब्ध जे रुप में पंहिंजा ई कयल कर्म साम्हूं अची छातीअ ते चढ़ी था वेहनि ऐं खिलंदे खिलंदे कयल पाप कर्म, रोअंदे रोअंदे भोगुण खां सवाइ उनमां छुटण जो ब्रियो को बि उपाउ कोन्हें । सतपुरुष, "तेरा भाणा मीठा लागे, नाम पदारथ नानक मांगे।" इन तुक ते अमलु करे, सबुर ऐं शांतीअ सां वेही पंहिंजो प्रारब्ध भागे पूरो कंदा आहिनि।

(2) **तीर्व प्रारब्ध** : तीव्र प्रारब्ध सां, प्रबुल उदम सां उन में थोरी घणी तबदील अची सघे थी। तीव्र प्रारब्ध खे सवलो बणाइण वास्ते कयलु प्रबुल पुरुषार्थ घणे भांङे सफ़ा अजायो वेन्दो कोन्हे। छो त प्रारब्ध जे तीव्र बि हुजे त बि क्रियमाण कर्मनि जी उत्पति त असीं पंहिंजीअ मरज़ीअ मूजिब करे था सघूं न? नेक ऐं आध्यात्मिक उन्नतिअ वास्ते, प्रभु प्रार्थना, नाम स्मरण, सत्संग, शास्त्रनि जे अभ्यास रस्ते पंहिंजे जीवन में उतारियल आचरण सां भयंकर दुःख खे बि असीं हल्को करे था सघूं यानी मथे ज्ञाणायल रस्तनि द्वारां असीं पंहिंजे भयंकर दुःख खे बि सवलाईअ सां भोगे पूरो करे सघंदा आहियूं।

(3-4) **मंद ऐं अति मंद प्रारब्ध** : उन्हनि खे पुरुषार्थ सां निष्काम बणाए सघिजे थो। प्रारब्ध वादियुनि जे चवण मूजिब अगर हरहिक ग़ाल्हि सिर्फ़ प्रारब्ध जे अधीन हुजे त पोइ वेदनि, उपनिषदनि, गीता, भागुवत, रामाइण वग़ैरह धर्म शास्त्रनि में बुधायल मार्ग दर्शन मूजिब पुरुषार्थ जेकर सफ़ा निकमो थी पवे।

मंद ऐं अति मंद प्रारब्ध खे निष्फल बणाइण वास्ते, शास्त्रनि ऐं संतनि जा ज्ञाणायल कर्म ऐं मना कयल कर्म ख़्याल में रखी शुभ कार्य करणु ऐं अशुभ कर्मनि जो त्यागु करण जो पुरुषार्थ सदाईं कंदो ई रहणु घुरिजे। पुरुषार्थ खां सवाइ प्रारब्ध अंधो आहे। प्रारब्ध कर्म अदृष्ट जे नाले सां सड्रिजण में अचनि था। तत्काल में ऐं अगि्रयनि जनमनि में असां जा कयल कर्म कहिड़े क़िस्म जा आहिनि ऐं इहे कहिड़े क़िस्म जा प्रारब्ध बणजी असांजे साम्हूं अची छातीअ ते चढ़ी वेहंदा, उन जी असां खे ज्ञाण कान्हे। मनुष पंहिंजे प्रारब्ध कर्मनि जे फल खां अणज्ञाण हुजण करे, प्रारब्ध खे अदृष्ट जो नालो ड्रियण में आयो आहे।

प्रारब्ध ऐं पुरुषार्थ जीवन जे ताराज़ीअ जा ब्र पुड़ आहिनि। हिक पुड़ में अदृष्ट रूपी कंडा पियल आहिनि त ब्रिए पुड़ में मनुष खे पंहिंजी शक्तिअ आहार विवेक ऐं बुद्धीअ खां कम वठी पुरुषार्थ रूपी सोना गुल भरिणा आहिनि।

(39) जीव ज्ञाणी वाणी पाप कर्म छो थो करे?

मथियों सुवाल घणो ई मुंझाईंदड़ु आहे। अहिड़ो हिकु सुवाल अर्जन गीता में श्री कृष्ण खां पूछियो आहे। हीअ उल्झन सिर्फ़ अकेले अर्जन जी न आहे, व्यास मुनीअ हीउ सुवाल पुछण लाइ अर्जन खे सिर्फ़ निमित बणायो आहे। सचु त हीउ सुवाल मुंहिंजो, तव्हां जो ऐं असां सभिनी जो आहे। अणज्ञाणाईअ में पाप कर्म थी वञे त इहा हिक ब्री गाल्हि आहे, पर जीव ज्ञाणी वाणी पाप कर्म छा जे लाइ थो करे? अर्जन भगवान खां पूछे थोः (1) मनुष कंहिं जे वसि थी पाप कर्म करे थो? (2) हीउ इच्छा न हूंदे बि छा जे करे पाप कर्म करे थो? (3) ज़ोर सां धिको ड्रेई, असांखां पाण मुरादो पाप कर्म केरु थो कराए?

मथियां टे सुवाल मुख्य आहिनि ऐं तमाम घणे सोच वीचार करण जे लाइक़ आहिनि।

माण्हू समझे थो त कूड़ु गाल्हाइणु पाप आहे, अधर्म आहे। तड्रहिं बि ड्रींहं में अनेक बार हीउ कूड़ु गाल्हाए थो। चोरु ज्ञाणे थो त चोरी करणु पापु आहे, तड्रहिं बि हू चोरी करे थो। माण्हू चङीअ तरह ज्ञाणे थो त नीतीअ सां हलणु धर्म आहे, सुठो कर्म आहे, तड्रहिं बि हीउ घणाई भेरा अनीतीअ सां हले थो।

धर्म छा खे थो चइजे? अधर्म कंहिंखे थो कोठिजे? इहो शास्त्रनि ऐं संतनि दुहिलु वज़ाए असांखे पए समझायो आहे, जेको असां चङीअ तरह सां बुधो ऐं ज़ातो आहे। तंहिं हूंदे बि धर्म ते हलण खे छडे असीं अधर्म तरफ़ झुकी पऊं था, समझ सालम हूंदे बि।

दुर्योधन जहिड़े दुष्टात्मा पिण महाभारत में क़बूल कयो आहे त, "जानामि धर्म न य मैं प्रवृतिः।" धर्म छा आहे इहो मां बख़ूबी ज़ाणां थो, तंहिं हूंदे बि उन में मुंहिंजी प्रवृति, मनु लगे ई नथो। अधर्म छा आहे? इहो पिण मां चङीअ रीत जाणां थो, तडहिं बि उन खां मां निवृत थी न थो सघां। उन खे छडे नथो सघां।"

जानामि धर्म न च मे प्रवृतिः।
जानामि अधर्म न च मे निवृत्तिः॥

पूरो पूरो वीचारु करे हीउ पाण पंहिंजो शख़्सी अनुभव बुधाए थो,

केनापि देवेन हृदि स्थिते न,
यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि।

"को हिकु दुष्ट भाव, को हिकु महान बल वारो देव या दानव जेको मुंहिंजे हिरदे अंदर वेठो आहे, सो जीअं मूंखे रस्तो डेखारे थो, तीअं ई मां हलत हलां थो।"

दुर्योधन हिकु नालायक़ शख़्सु हूंदे बि एतिरे क़दुर दिल खोले चयो आहे त को दुष्ट भाव संदसि दिल अंदर वेठो आहे जेको खेसि पाप कर्म कराए रहियो आहे। जडहिं कि असीं त एतिरो बि क़बूल करण वास्ते तैयार न आहियूं। असीं त ज़ाणी वाणी पाप कर्म करण खां पोइ बि इहो साबित करण जी कोशिश कर्यूं था त, "मूं जेकी कुझु बि कयो आहे, सो सभु सही कयो आहे, इनकरे इहो पाप कर्म कोन्हे।" असीं त जेकर दुर्योधन खे बि शहि डियण वारा दुष्ट लेखिजण में अचण घुरिजूं। अर्जन जो पुछियल सुवाल वीचार करण जे लाइक़ आहे।

अथ केन प्रयुकोऽयं पाप चरित पुरुषः।
अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः॥

कंहिं जे दबाव हेठि अची इन्सान पाप जो आचरणु करे थो ऐं इहो पिण

संदसि मर्ज़ी न हूंदे बि केर थो खेसि ज़ोर सां धिको ड॒ेई खांउसि पाप कर्म कराए?''

सभिनी खे मस्तक ते ग॒ाढ़ो तिलिकु लग॒ाइणु वणंदो आहे, केरु बि कारो तिलिकु लग॒ाइणु न थो चाहे। तंहिं हूंदे बि छा जे करे इन्सान ग॒ाढ़े तिलिक बदिरां वते थो पंहिंजे मुंह ते कारहिं जा दाग़ लग॒ाईंदो? हर हिकु जीव चाहे थो त सत्यवादी ऐं नेक इन्सान तोर दुनिया में नालो कमाए, तड़हिं बि छा जे करे हू ज॒ाणी वाणी कपट ऐं अधर्म जो आचरण करे पापनि में जकिड़जे थो? भग॒वान श्री कृष्ण अर्जन ते कृपा करे खेसि हिन सुवाल जो साफ़ जवाब गीता में हेठींअ रीत ड॒िनो आहे :

काम एषः क्रोध एषः रजोगुण समूद्भवः।

''रजो गुण मां पैदा थियलु काम, क्रोध जीव खे पाप कर्मनि में केरीनि था।''

इन्सान जे अंतःकरण में रहियल अनेक जन्म जन्मांतरनि जूं कामनाऊं ऐं वासनाऊं खेसिं पाप कर्म करण में प्रवृत कनि थियूं।

हिक नंढड़ी सुन्दर सफ़ेद रंग ऐं सफ़ेद वारनि वारीअ ब॒िलीअ खे अतुर फुलेल में स्नान कराए, सोने आसण ते बख़मल कीमख़ाब जे गदीअ ते गुलनि जा हार पहिराए वेहारिजे त इहा सदोरी बणजी शांतीअ सां शायद उन आसण ते वेहे बि पर जे खेसि हिकु नंढिड़ो कूओ कंहिं कुंड मां ब॒ाहिर निकिरंदो ड॒िसण में अचे त हिकदम हीअ पंहिंजे अग॒लनि जन्मनि जे वासनाउनि जे दब॒ाव करे गदीअ तां टपो ड॒ेई, कुए खे पकड़ण लाइ वठी डोड़ंदी। साग॒िए नमूने जीव केतिरो बि ज्ञानी या पंडित ड॒िसण में छो न ईंदो हुजे, पर संदसि अंतःकरण में अग॒लनि जन्मनि जूं जमउ थियल कामनाऊं ऐं वासनाऊं, उत्साह ड॒ींदड़, संजोग॒, पदार्थ कंहिं माण्हूअ जे मिलण शर्त ई पाप कर्म करण वास्ते वठी डोड़ पाईंदियूं ऐं जीव पंहिंजे कामनाऊनि जे पूरे थियण जे आड॒ो ईंदड़ जे मथां क्रोध बि कंदो ई। उन वक्ति हिन वटि अगर सत्संग, संतनि जे संग मां प्राप्त थियल विवेक ऐं वैराग॒ जो ब॒लु न हूंदो त हिन जे तिरिकण में देर ई कीन लग॒ंदी ऐं उन पाप कर्म जे फल सरूप पैदा थियल दुःख खेसि अवस भोग॒िणा ई पवंदा।

सत्संग जो माना आहे शील, स्नेह, समता ऐं सात्विक वर्तन। सच जी पेरवी करणु, संग्रह न करणु ऐं सदाईं नाम सिमरणु कंदो रहणु। नकी सिर्फ़ साधू संतनि जा व्याख्यान (प्रवचन) बुधंदो रहणु, हा, इहे बि वक़्त ते ज़रूर बुधणु घुरिजनि, बल्कि शांतीअ सां, मन जी एकाग्रता सां, जेकी बि संदनि अखर मन खे छुहनि उन्हनि ते घर में अची एकांत में वेही वीचार करणु ऐं उन्हनि खे धीरे धीरे पंहिंजे जीवन में उतारण जी कोशिश करे, उन्हनि ते अमलु करण जी महिनत करण ऐं इन रीत सत्संग करण सां ई असां जे विवेक में वैरागु जी ताक़त वधंदी ऐं वक़्त ते असीं ग़लत राह ते हलण खां पाण खे बचाए सघंदासीं।

(40) हर हिकु कर्म क्रिया आहे, पर हरहिक क्रिया कर्म कान्हे।

क्रिया ऐं कर्म हिननि बिन शब्दनि जो तफ़ावत ख़ास तोर समझण लाइक़ आहे। शारीरिक क्रिया खे डिसी सघिजे थो पर मानसिक क्रिया डिसण में कीन थी अचे, उहा लिकल रहे थी। क्रिया टिनि क़िस्मनि जी आहे। (1) शीरीरिक क्रिया (2) मानसिक क्रिया (3) मन सां गुंढियल शारीरिक क्रिया।

(1) **शारीरिक क्रियाः-** इहे बिनि क़िस्मन जूं आहिनि :

इच्छा रहित क्रिया, इच्छासहित क्रिया।

शरीर जूं केतिरयूं ई क्रियाऊं, असांजी इच्छा न हूंदे बि पंहिंजो पाण थींदियूं ई रहंदियूं आहिनि। उन्हनि खे इच्छा रहित क्रिया चइजे थो। जीअं त असांजी नस में ख़ून जे वहिकिरे जो सांदहि वहणु, असां जे पेट में हाज़िमे जी क्रिया जो पंहिंजो पाण थींदो रहणु वग़ैरह। हिन क़िस्म जूं सभु क्रियाऊं असांजी मर्ज़ी न बि हुजे, त बि पाण मुरादो थींदियूं ई रहंदियूं। उन्हनि खे असीं रोके न था सघूं ऐं अगर रोकण जी कोशिश कयूं त हथु वठी पंहिंजे मौत खे नींढ डियूं।

सरीर जूं ब्रियूं केतिर्यूं ई क्रियाऊं असांजी मर्ज़ीअ मुताबिक़ थियनि थियूं। जीअं त हथ हेठ मथे करणु, पेर डिघा करणु, पेरनि ते बीहणु, डुक पाइणु, रांदि करणु वग़ैरह। हिननि सभिनी इच्छा सहित (ऐच्छिक) क्रियाउनि में असां जो मन शामिल न हूंदो आहे। ऐं मनखे उन्हनि सां वणणु या न वणणु, रागु या द्वेषु बि न हूंदो आहे। इनकरे उन्हनि खे गीता जे भाषा में ज्ञान कोठे

न थो सघिजे।

(2) **मानसिक क्रिया** : केतिर्यूं ई क्रियाऊं असीं मन सां कर्यूं था, पर सरीर सां इहे क्रियाऊं न था कर्यूं, मिसाल तोर- मन में वीचार करणु, पह पचाइणु, मन सां कंहिं जो बुरो या भलो सोचणु, मन ई मन में कंहिं खे घटि वधि ग॒ाल्हाइणु हीउ सभु मानसिक क्रियाऊं आहिनि। जेसिताईं शारीरिक क्रियाऊं उन में तबदील न थियनि तेसिताईं इहे सिर्फ़ मानसिक क्रियाउनि तोर ई रहनि थियूं ऐं इहे बि कम जे दाइरे अंदर अची नथ्यूं सघनि। क्रिया में जड॒हिं स्वार्थ या अहंकार पैदा थिए थो तड॒हिं इहा क्रिया कर्म बणजे थी।

असीं मन सां को गुनाहु करण जो वीचार कर्यूं, कंहिंखे चमाट हणण जो ख़्याल कर्यूं, पर जेसिताईं असीं सरीर सां (Physically) पंहिंजे हथ सां उन माण्हूअ खे मुंहं ते चमाट न हणूं, तेसिताईं इहो ख़्याली कर्म गुनाह न थो बणजे। इनकरे फ़ौजदारी क़ाइदे में सरकार हिकु ख़ास क़लम विधो आहे -

"Intention to commit an offence is not an offence"

गुनाह करण जो सिर्फ इरादो मानसिक क्रिया आहे। उनखे गुनाह 'कर्म' चई नथो सघिजे। फ़ौजदारी क़ाइदो कलजुग॒ में ठहियल आहे। इनकरे कलजुग॒ जी साराह कंदे गोस्वामी तुलसीदास रामाइण में लिखियो आहे त -

कलियुग कर यह पुनित प्रतापा।
मानस पूण्य होई नहीं पापा॥

कलजुग॒ में मानसिक पुञ्ञु कर्यो त पुञ्ञु मिले थो। पर मानसिक पापु कर्यो त पापु पलइ न थो पवे। इन जो मतलब को इहो कोन्हे त असां खे मानसिक पाप करण जी छूट मिल्यिल आहे ऐं असीं मानसिक पाप कंदा ई रहूं। सचो भावार्थ हीउ आहे त कलजुग॒ में शायद असीं भुल विचां को खोटो वीचारु या मन सां ग़लत ख़्यालु करे वेहूं ऐं उन खोटे ख़्याल खे सरीर सां अमल में आणण खां पहिर्याईं असीं जेकड॒हिं अहिड़े खोटे ख़्याल "पाप कर्म" लाइ दिल सां पछताउ करे परमात्मा खां सचीअ दिल सां माफ़ी घुरं त इहो कयलु पापु माफ़ थी सघे थो। हिन क़िस्म जी व्यवस्था सिर्फ़ कलजुग॒ में कयल आहे, पर सतिजुग॒ में इन क़िस्म जी काबि व्यवस्था कयल कान हुई।

जेको इन्सान ज॒ाणीवाणी मानसिक पाप करे ऐं उन वास्ते पछताउ करण

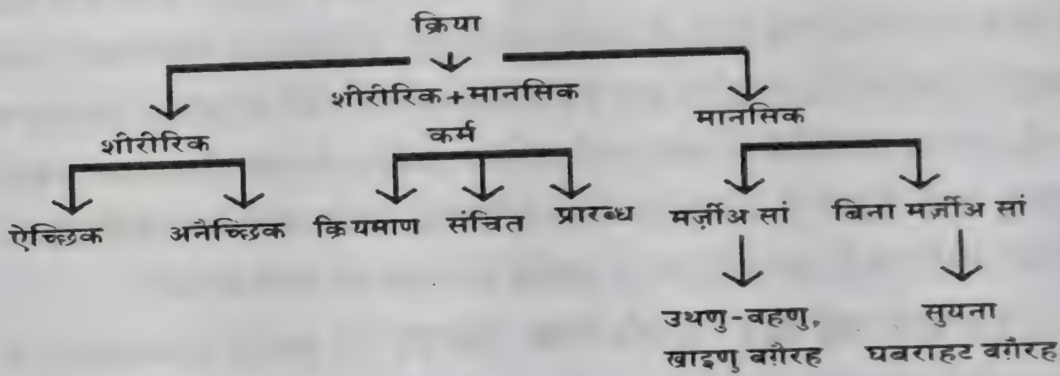
बदरां सदाईं मानसिक पाप कंदो ई रहे त हिकु वक़्त अहिड़ो अची वेंदो जो संदसि मानसिक पाप हिन जे सरीर खे धिको ड॒ेई खाउंस ज़बरदस्ती पाप कराए ई छड॒ींदो ऐं उन वक्ति इहा क्रिया कर्म बणिजी वेंदी ऐं अहिड़ो क्रियमाण कर्म तत्काल या संचित में जमउ रही अग्रियां हली पची रास थी प्रारब्ध बणजी साम्हूं अची वेहंदो ऐं उन वक्ति खिलंदे खिलंदे कयल पाप कर्म खेसि रोअंदे रोअंदे भोग॒िणा ई पवंदा ऐं उन में काबि रिआयत थी कान सघंदी।

(3) **मन सां गडु शारीरिक क्रिया** : मन जे कामनाउनि ऐं वासनाउनि खे संतोष ड॒ियण वास्ते ऐं मन जे कर्तापिणे जे अभिमान खां मन राग॒द्वेष जे असर हेठि, पंहिंजो स्वार्थ सिद्ध करण वास्ते कयल तमाम शारीरिक क्रियाऊं कर्म कोठिजनि थियूं ऐं अहिड़नि क्रियमाण कर्मनिजे फल सरुप दुःख या सुख भोग॒ुण सां ई उन्हनि कर्मनि मां छुटकारो मिली सघे थो।

अहिड़ा क्रियमाण कर्म शायद बरवक्ति फलु न बि ड॒ेई सघनि, त बि जीअं असां अगु में ड॒िठो आहे, तीअं थोरे या त घणे वक़्त तांईं संचित कर्म जियां जमउ रही अग्रियां हली पची रास थी प्रारब्ध बणजी पंहिंजो फलु भोग॒ाए पोइ ई जानि छड॒ीनि था।

कंहिं बि क़िस्म जी क्रिया खे सुठी या ख़राब चई नथो सघिजे। क्रिया सुठी बि कान्हे त ख़राब बि कान्हे। बसि क्रिया त सिर्फ़ क्रिया ई आहे। पर जंहिं वक्ति उन में मन जो अहंकार, राग॒द्वेष, कामना ऐं वासना जो अंशु अची थो शामिल थिए त उन वक्ति इहा क्रिया कर्म में तबदील थी वञे थी ऐं कर्म खे सुठो या ख़राब चई थो सघिजे। इन हिसाब सां पाप या पुञ लगे॒ थो। जंहिंजे फल सरुप सुख या दुःख भोग॒ुण वास्ते जीव खे देह धारण करणी पवे थी ऐं जनम मरण जे चकर में ब॒धिजी वञणो पवे थो।

"सारे संसार में कर्म जो क़ाइदो हले थो न कि क्रिया जो। थोरे में - क्रिया माना ख़्याल करणु, पह पचाइणु, जेसितांईं इहे अमल में न आणिजनि, तेसितांइ इहे सिर्फ़ क्रिया ई आहिनि ऐं अमल में आणिजनि त पोइ हिकदम कर्म में तबदील थी वञनि था ।



नंढिड़ो अज्ञानी ॿालकु अणॼाणाईअ में अगर पंहिंजो जूतो बि हणी विझे त बि इहा संदसि सिर्फ़ क्रिया ई बणजी थी रहे। खेसि कर्म जो क़ाइदो लाॻू न थो पवे। माण्हू अणॼाणाईअ में असंख्य जीव जंतुनि जी हिंसा कंदो थो रहे। पाणी, खीर, साॻ भाॼीअ, अनाज, बाहि, स्वास में अणॻुण्यनि जीव जंतुनि जी हिंसा कंदे बि जेसिताईं उन्हनि जे पोयां मन जी राॻद्वेष वारी, अहंकार भरी 'मां कर्या थो' बुद्धी हूंदी कान्हे, तेसिताईं इहे सिर्फ़ क्रिया रही कर्म में तबदील न था थियनि। इनकरे उन्हनि खे हिंसा बि कोठे न थो सघिजे।

(41-1) कर्म - विकर्म ऐं अकर्म

कर्म जूं टे निशानियूं आहिनि, यानी कर्म टिनि क़िस्मनि जो थींदो आहे। कर्म जी गति ॾाढी गूढ़ी आहे, इहो क़बूल कंदे भॻवान चवे थो त, "कर्म जी गति, विकर्म जी गति ऐं अकर्म जी गति समझण जी कोशिश करणु घुरिजे। छो त कर्म जी गति ॾाढी गहिरी ऐं गूढ़ी आहे।" हिन बारे में भॻवान जो सचुपचु कहिड़ो रायो आहे, सो ॼाणणु ॾाढो कठिन आहे। इनकरे जुदा जुदा भाषावादियुनि हिन्हनि टिन अखरनि जो अर्थ पंहिंजे पंहिंजे वीचार शक्तिअ मूजिब अलॻ अलॻ नमूने कयो आहे।

आम तौर सां विद्वाननि कर्म, विकर्म ऐं अकर्म जो जेको अर्थ कयो आहे उहो ॾिसण सां मइलूमु थिए थो त :

(1) हिन लोक ऐं परलोक में जंहिं जो फलु सुखदाई थिए अहिड़ीअ उत्तम क्रिया खे 'कर्म' (Prescribed action) कोठीन था।

(2) जंहिं जो फलु हिन लोक चाहे परलोक में दु:खदाई थिए, उन

'विकर्म' (Prohibited action) चयो वञे थो ।

(3) जेको कर्म या कर्मत्यागु कंहिं बि फल जे पैदा थियण जो कारणु न थो बणजे, उनखे 'अकर्म' (Inaction) चइजे थो ।

आम तरह असीं मन, वाणी ऐं शरीर सां थींदड़ सभिनी क्रियाउनि खे कर्म चवंदा आहियूं, इनकरे ई कर्म, विकर्म ऐं अकर्म जे अर्थ समझण में डुख्याई थिए थी । इनकरे भगुवान गीता में चवे थो :-

किं कर्म किम् अकर्मेम्

कवयो ड्प्यत्र मोहिताः । (3-16)

कर्म छा आहे ? अकर्म कंहिंखे थो चइजे ? इनखे समझण में वडा वडा विद्वान पुरुष बि ग़ोता था खाईनि। छो त उन्हनि जी गति डाढी गहिरी ऐं गूढ़ी आहे।'' मन मां ईअं थो लगे त सिर्फ मन वाणीअ ऐं सरीर जूं स्थूल क्रियाऊं या अक्रियाऊं, कर्म, विकर्म या अकर्म कीन आहिनि। पर कर्ता जी भावना अनुसार का बि क्रिया कर्म, अकर्म या विकर्म जे रुप में ज़ाहिर थिए थी। हीअ गाल्हि हेठियनि दृष्टांतनि मां समझी सघिजे थी।

(1) कर्म (Prescribed Action)

आम तरह वाणीअ या सरीर सां थींदड़ उत्तम क्रिया खे ई शास्त्रनि जे मत मूजिब कर्म चई सघिजे थो पर शास्त्रनि अनुसार विधीअ सां कयल क्रिया पिण कर्ता जे जुदा जुदा क़िस्मनि जे भावना ते आधार रखे थी ऐं इनकरे क्रिया कंदड़ जे कंहिं बि भावना जे असर हेठि केतिरनि ई मौक़नि ते कर्म बदिरां विकर्म या अकर्म बणजी पवे थो । मिसाल तोर :-

(1) फल जी इच्छा सां, शुद्ध भावना सां जेको शास्त्रनि जे अनुसार विधीअ सां कर्म कजे थो, उन खे कर्म चइजे थो।

(2) पर सागियो ई कर्म फल जी इच्छा सां यज्ञ, तप, दान, सेवा जे रुप में विधीअ मूजिब कर्म हूंदे बि ख़राब भावना सां प्रजा खे कष्ट पहुचाइण जे ख्याल खां कयो वञे त इहो कर्म तमोगुण प्रधान हुजण करे विकर्म बणजी वञे थो ।

(3) जडहिं सागियो ई कर्म कर्तापणे जे अभिमान खां सवाइ रागुद्वेष पीड़ा रहित, सृष्टिअ जे कल्याण खे ख़्याल खां भगुवत प्रीतार्थ करण में अचे त अकर्म बणजी थो वञे।

(2) विकर्म

रवाजी तरह मन, वाणी ऐं शरीर सां कयल हिंसा चोरी, कूड़ वग़ैरह न करण वारा 'विकर्म' करे कोठिजनि था। पर अहिड़ा विकर्म पिण कर्ता जी भावना जे करे कर्म या अकर्म में बदिलजी वञनि था। मिसाल तोरः-

(1) हिन लोक या परलोक में फल मिलण जी इच्छा सां, सचीअ दिल सां ऐं शुद्ध भावना सां ग़ाल्हायलु कूड़ हिंसा, चोरी वग़ैरह जी क्रिया (जेका ब़ाहिरींअ रीत दुनिया जे नज़र में विकर्म ई चइजे) गीता जी भाषा में कर्म ई चइजे थी। श्रीकृष्ण युधिष्ठिर खे कूड़ ग़ाल्हाइण लाइ हिमथायो। अर्जन पंहिंजे गुरु द्रोणाचार्य ऐं डाडे भीष्म पितामह जी हिंसा कई। श्रीकृष्ण पिण सेतकमणिअ ऐं गोकुल में मखण जी चोरी कई। उन हूंदे बि ही क्रियाऊं विकर्म में न ग़ुणजी, कर्म में ई लिखिजण में अचनि थियूं।

(2) कर्तापणे जे अभिमान खां सवाइ राग़द्वेष जे पीड़ा रहित, सभ जे भले लाइ कयलु विकर्म पिण अकर्म बणजी थो वञे। प्रतिज्ञा जो भंग करणु पाप विकर्म चइजे थो। त बि श्रीकृष्ण पंहिंजी प्रतिज्ञा टोड़े युद्ध में हथियारु 'रथ जो फीथो' खणी भीष्म जहिड़े सच जे पूज़ारीअ खे मारण वास्ते डोड़ियो। इहो विकर्म न पर अकर्म करे मञियो थो वञे भग़वान प्रतिज्ञा कई हुई त हू युद्ध में कंहिं बि क़िस्म जो हथियारु कम न आणींदो।

(3) अकर्म (Inaction) :-

मन, वाणीअ ऐं सरीर सां तमाम क्रियाऊं बंदि करे छड्डिजनि ऐं उनखे अकर्म चइजे, ईअं न आहे। सचु त वाणीअ ऐं शरीर जूं तमाम क्रियाऊं पूरीअ रीत बंदि थी न सघंदियूं आहिनि। "न हि कश्चित् क्षणमयि जातु तिष्ठति अकर्म कृत" (3.5) को बि माण्हू हिकु पल बि क्रिया करण खां सवाइ रही न थो सघे ।

"न हि देहभृता शक्यं त्यक्तुं कर्माण अशेषतः ।" (18-22)

देह धारण करण वारे कंहिं बि मनुष या प्राणीअ लाइ पूरीअ तरह क्रियाउनि जो त्यागु करण मुमकिन न आहे, इनकरे हेठि ज़ाणायल कर्मनि खे अकर्म चई सघिजे थो।

(1) कर्तापणे जे अभिमान बिना कयल कर्म

(2) राग॒द्वेष, वेरभाव जे ख़्याल खां सवाइ कयल कर्म

(3) शुद्ध बुद्धीअ सां पंहिंजो पवित्र फ़र्ज़ु समझी कयल नितकर्म

(4) मुंहिंजो साईं प्रसन्न थिए, अहिड़ी भावना सां भग॒वान प्रीतार्थ कयल कर्म

(5) सभ जी भलाईअ लाइ कयम कर्म

(6) श्री कृष्ण खे अर्पण कयल कर्म

(7) निष्काम कर्म

मथे ज॒णायल अकर्म पिण कर्ता जे मन जी भावना जे फ़र्क़ करे, घणनि ई मोक़नि ते कर्म या विकर्म बणजी था पवनि। यानी कर्म करण वारे जी भावना मुताबिक़ ''जहिड़ी नियत तहिड़ी मुराद''।

मन, वाणी ऐं शरीर जे तमाम क्रियाउनि जो त्याग॒ करे एकान्त में वेठल क्रियारहित जो साधकु ''संपूर्ण क्रियाउनि जो मां त्याग॒ी आहियां'' इन क़िस्म जो अहंकार दिल में धारण करे, ड॒िसण में त ही पुरुष का बि क्रिया न थो करे, पर कर्म जे त्याग॒ जो अहंकार संदसि दिल में हुजण करे, संदसि त्याग॒ रुपी अकर्म पिण कर्म बणजी थो वञे। छाकाण त हिन कर्म त्याग॒ जी क्रिया जो कर्म कयो समझण घुरिजे।

पंहिंजे फ़र्ज़ खे समझण खां पोइ बि डप या पंहिंजे स्वार्थ जे करे या त पंहिंजनि जवाबदारियुनि खां भज॒ण जे ख़्याल खां पंहिंजे लाज़मी कर्म खां मुंहु मोड़े पंहिंजा नितकर्म बि न करे, या त ख़राब भावना सां माण्हुनि खे ठग॒ण जे ख़्याल खां पंहिंजे कर्मनि जो त्यागु करे चुपचाप हिक हंधि पियो हुजे त पोइ ड॒िसण में त कोबि कर्म कंदो कीन ईंदो पर संदसि इहो अकर्म दुःख रुपी फलु पेदा कंदड़ु बणजी पवंदो ऐं इहो अकर्म विकर्म में तबदील थी वञे थो।

मथींअ रीत कयल स्पष्टता मां समझंदा त कर्म, विकर्म ऐं अकर्म जो निर्णय सिर्फ़ क्रियाशीलता या निष्क्रियता सां थी कीन सघंदो। कर्म कंदड़ु क्रिया जे इरादे हित खे ध्यान में रखे, इन नमूने संदसि क्रिया खे कर्म, अकर्म या विकर्म जो दर्जो ड॒ेई सघिबो। कहिड़े मतलब सां, भावना सां, कहिड़े मक़सद सां क्रिया कई थी वञे, उहो समझी पोइ ई इहा कयल क्रिया कर्म, विकर्म या अकर्म आहे, इन ग॒ाल्हि जो फ़ैसलो करे थो सघिजे।

थोरे में चइजे त गीता जे चोथें अध्याउ जे 12 श्लोक में कर्म, विकर्म या अकर्म शब्द जेकी भगुवान कम आंदा आहिनि, उन्हनि जो थोरे में अर्थ हेठीअ रीत थिए थो :

कर्म माना सत कर्म, सुठा कर्म, पुञ कर्म,
विकर्म माना ख़राब कर्म, खोटा कर्म, पाप कर्म,
अकर्म माना निरअहंकार, निराभिमान, निष्काम कर्म।

कर्म या पुण्य कर्म जे वण खे सुख रुपी फल ऐं विकर्म, खोटे कर्म, पाप कर्म जे वण खे दुःख रुपी फल लगुनि था। सुख या दुःख भोगुण वास्ते देह त धारण करणी ई पवे थी। देह जे बुंधन में बुधिजणो पवे थो। फ़र्कु सिर्फ़ एतिरो आहे जो कर्म, सतकर्म सोन जी ज़ंजीर बराबर आहे ऐं विकर्म, खोटा कर्म लोह जी जंजीर मिसल आहे। आख़िर में कर्म या विकर्म बुई देह जे जेल में जीव आत्मा वास्ते ज़ंजीरुनि समान ई आहिनि। उन्हनि खां मुक्ति यानी बुंधननि खां देह छुटी कीन सघंदी। जडहिं अकर्म हिक अलौकिक चीज़ आहे, क्रिया कंदे बि अकर्तापणे जे अभिमान, रागुद्वेष वग़ैरह जे न हुजण करे ऐं ईश्वर प्रीतार्थ, सृष्टिअ जे कल्याण ख़ातिर संचित कर्म में जमउ न थो थिए, इनमां प्रारब्ध रुपी सुख या दुःख जो फलु पिण पैदा न थो थिए इनकरे अकर्म मोक्ष जो साधन बणजी पवे थो। भगुवान अगुते हली, हिक बी बि तमाम लाभदायक गाल्हि बुधाए थो :

कर्मणि अकर्म यः पश्चेत् अकर्मणि च कर्म यः
सः बुद्धिमान् मनुष्यषु स युक्तः कृत्सनकर्म कृत् (4-18)
देखे कर्म अकर्म मे, कर्मन मांहि अकर्म,
पंडित योगी श्रेष्ठतम, करत सर्व ही कर्मः

करत सर्व ही कर्म कर्म से लिप्त न होवे,
जानत कर्म अकर्म शांत मन सुख से सोवे,
करे देह से कर्म आपको निष्क्रिय देखे,
भोला शांति सोय, आप में सबको देखे ।

''कर्म में जेको अकर्म खे ऐं अकर्म में जेको कर्म खे डिसे थो, सोई सचुपचु बुद्धीमान ऐं योगी, संपूर्ण कर्मनि खे बराबर नमूने करण वारो आहे। कर्म में

अकर्म ड॒िसणु हिक उल्टी ग॒ाल्हि ड॒िसण में अचे थी।''

कर्म में अकर्म खे ड॒िसण जो अर्थ आहे, ''पाण ख़ुद कर्म कंदड़ हूंदे बि पाण खे समझे त मां कर्म जो कंदडु कीन आहियां, इन क़िस्म जो भाव मन में पैदा थियणु घुरिजे। अहिड़ो भाव पंहिंजे मन में कीअं पैदा कजे ?''

''कर्म करण वक्ति कर्म करण वारो पाण ख़ुद साक्षी भाव सां दृष्टा थी रहे शाहिद बि पाण त असोलु बि पाण'' तड॒हिं ई अहिड़ो भाव पैदा थींदो।

मिसाल तोर : असीं खाधो खाऊं था, खाधो खाइण वक्ति असीं ईअं महिसूस कयूं, ''मां खाधो न खाई रहियो आहियां, सिर्फ़ शाहिदु थी ड॒िसी रहियो आहियां। सरीर खे बुख लग॒ी आहे ऐं सरीर भोज॒न करे रहियो आहे। मां सिर्फ़ साक्षी रूप में दृष्टा जियां खाधो खाइण जी क्रिया ड॒िसी रहियो आहियां।''

हीअ स्थिति पैदा करणु का वड॒ी ग॒ाल्हि न आहे। सिर्फ़ थोरो सुजाग॒ (सावधान) रहण जी ज़रूरत आहे।

स्वामी रामतीर्थ हिक वक्त अमरीका में हिक रस्ते तां लंघे रहियो हो। उन वक्ति केतिरनि ई माण्हुनि खेसि गार्यूं ड॒िनियूं ऐं संदसि मज़ाक़ पिण कई। जंहिं शख़्स जे घर हू लथो हो, घुमी फिरी वापस उते पहुची हीउ ख़ूब आनंद में अची खिलण लग॒ो। उन वक्ति घर जा भाती हिन खां पुछण लग॒ा, '' छा मिल्यो अथव जो एतिरो ख़ुश थी रहिया आहियो ?'' स्वामी रामतीर्थ ब॒ुधायुनि, ''मां बिना कारण खिली न रहियो आहियां, अज॒ु मां जंहिं रस्ते ते घुमी रहियो होस. उते हिक अजीब घटना घटी। किन माण्हुनि राम खे गार्यूं ड॒िनियूं। के माण्हू त संदसि मज़ाक़ बि करण लग॒ा।

घर जे भातियुनि खे हीअ ग॒ाल्हि ब॒ुधी कुझु अजब लग॒ो, छाकाण त हू स्वामीजिनि जी ब॒ोली समझी न सघिया। ख़ुद रामतीर्थ जिनि पाण ई खेनि ब॒ुधाए रहिया हुआ त, ''केतिराई माण्हू राम खे गड॒िया, राम खे गार्यूं ड॒िनाऊं ऐं राम जी मज़ाक़ पिण कयाऊं।'' स्वामी रामतीर्थ जिनि अग॒िते हली चवण लग॒ा, '' राम इहो सभु ब॒ुधी ऐं ड॒िसी थोरो उल्झनि में पइजी वियो। मां संदसि उल्झनि ड॒िसी रहियो होस ऐं खेसि गार्यूं ड॒ींदड़ माण्हुनि खे बि ड॒िसी रहियो होस।'' घर जे भातियुनि स्वामी रामतीर्थ खां पूछियो, ''हीउ तव्हां छा चई रहिया आहियो ? तव्हां आपे में त आहियो ? नशो त न करे आया

आहियो?''

स्वामी रामतीर्थ जिनि चयो, ''मां बराबर पंहिंजे आपे में आहियां ऐं समझ बि सालिम अथम। पर तव्हीं सभु नशे में ग़ल्तान आहियो, मां नशे में हुजां हां त ईअं समझां हां त माण्हुनि 'मूंखे गार्यूं पए डि॒नियूं। जीअं त मां पूरीअ तरह होश में होस, इनकरे महिसूस करे रहियो होस त माण्हुनि मूंखे न पर राम खे गार्यूं पए डि॒नियूं। मां त सिर्फ़ साक्षी रुप में, दृष्टा रुप में गार्यूं डीं॒दड़ माण्हुनि खे साम्हूं निरविकार भाव सां डि॒सी रहियो होस'' राम यानी देह ऐं मां यानी आत्मा।''

हीउ ब॒ई 'देह ऐं आत्मा' जुदा जुदा वस्तू आहिनि। इन क़िस्म जो साक्षी भाव, दृष्टा पद अपिनाइजे त कर्म बि जेकर अकर्म बणजी वञे ऐं जनम मरण जे चकर खां छुटी वञिजे। असीं भोजु॒न करे रहिया हुजूं उन वक्ति ''राम'' भोजु॒न करे रहियो आहे, हिन रीत जे असीं सिर्फ़ शाहिद तरीक़े डि॒संदा रहूं त ''राम खे बुख लगी॒ आहे, राम खे निंड अची रही आहे''। असीं शाहिद तरीके पाण खे पाण खां अलग॒ करे डि॒सूं, ईअं अलग॒ थी शाहिद बणजी डि॒सण जी कला ई कर्म खे अकर्म बणाए थी छडे॒। उन वक्ति असांजो कर्म असीं पाण ख़ुद कंदे बि अकर्म बणजी थो वञे ऐं असीं कर्म जा कर्ता हूंदे बि अकर्ता बणजी था वञूं। उनखां बि अञा वधीक औखी ग॒ाल्हि ब॒ी थो भग॒वान बु॒धाए।

''अकर्म खे कर्म में डि॒से सोई सचो ज्ञानी आहे।'' कुझु न कंदे बि कर्ता थी वञे।

पहिरीं ग॒ाल्हि समझणु सवली आहे त साक्षी भाव पैदा करे, पोइ कर्म कंदे पिण ईअं महिसूस थींदो त ''मां कर्म न करे रहियो आहियां, सिर्फ़ शाहिद तरीके डि॒सी रहियो आहियां। पर हीअ ब॒ी ग॒ाल्हि थोरी वधीक डु॒खी आहे त, ''जेको कर्म न कंदो हुजे, तड॒हिं बि खेसि कर्म कंदो ई महिसूस कजे।'' बराबर समझण खां पोइ ईअं महिसूस थींदो त पहिरीं ग॒ाल्हि ''साक्षी रुप में ऐं दृष्टां तरीक़े ''वारी स्थिति जेकड॒हिं हासिल थी वञे, उन मंज़िल ते पहुचं वञजे त पोइ ब॒ीअ ग॒ाल्हि में चयल स्थिति ''अकर्म में कर्म'त सुभावीक तरह सां अज़ ख़ुद हासिल थी वञे थी। छाकाण त उन पहिरीअं स्थितिअ ''कर्म में अकर्म'' में हिन सारे संसार जे चकर हलाइण वारे परमात्मां सां लीन थियण

जो अनुभव थिए थो ऐं उन परमात्मा जूं तमाम शक्तियूं पंहिंज्यूं ई आहिनि। इहो भाव जाग्रत थिए थो ऐं सृष्टिअ में जेकी कुझु थी रह्यो आहे सो सभु मां पाण ई करे रहियो आहियां, अहिड़ो कर्तापिणे जो भाव पुख़्तो थिए थो।

स्वामी रामतीर्थ हिक ड्रींहुं ड्राढी मौज में अची वियो। चवण लगो त, "डि्सो हीउ सूर्य, धरती, चंड, तारा, ग्रह, नक्षत्र वग़ैरह। इन्हनि सभिनि खे पहिर्याईं मूं ई शक्ति डि्नी ऐं संदनि चकर में हलणु चालू कयो। मां ई सदाईं खेनि तेज़ रफ़्तार में परवाज़ कंदो रखां थो, मूं ई चंड ऐं तारनि खे इशारो करे खेनि तेज़ परवाज़ कंदड़ करे छडियो आहे।" माण्हुनि पूछियुसि, 'तव्हां'? एतिबार त कीन थो अचे। रामतीर्थ चयुनि, " हा मां यानी रामतीर्थ न, पर हिन सरीर धारी रामतीर्थ खां अलगु जेको 'मां' आहियां उन।"

इन नमूने हिरदे में जेको साक्षी रुप में वेठलु आहे, उहो जेकडहिं दृष्टा थी जागी पवे त पोइ खेसि सर्व शक्तिमान परमात्मा सां मिली हिकु थी वञण में जेकर देरि ई न लगे ऐं इहो कुझु बि न कंदे पिण महिसूस कंदो त सभु कुझु मां ई करे रहियो आहियां। उनजो ई नालो आहे अकर्म में कर्म।

हिन मंज़िल ते पहुचण खां पोइ इहो "अकर्म में कर्म खे डि्सण वारो" सिर्फ़ ख़ाली निखिमिणो वेठो हुजे त बि हीउ सभु कुझु कंदो रहे थो। हवा पिण हीउ हलाए थो, वणनि-टिणनि खे पिण हीउ उभारे थो, गुलनि खे बि हीउ खिलाए थो। हीउ वण हेठां अखियूं बंदि करे वेठे पिण सूर्य ऐं चंड खे रोशनी बख़्शे खेनि हलाए थो।" इहोई पुरष सर्व मनुषनि में बुद्धीमान आहे ऐं इहो ई योगी सर्वसंपूर्ण खे करणवारो आहे हिनजो कर्म समझी करे अकर्म बणजी थो वञे। सहज सुभावीक थींदड़ संदसि कर्म खे अकर्म चइजे थो।"

सूर्य नारायण उभरे थो त हिकदम घोर अंधकार पिण झटि ग़ाइब थी वञे थो। इनकरे असीं जे सूर्यनारायण खे चऊँ "तव्हां अची अंधकार खे दूर कयो, इनकरे असीं तव्हां जा शुकराना था मञ्यूं।" सूर्यनारायण ईअं जवाब डींदो त, "मां अंधकार खे दूर न कयो आहे, पर इहो सिर्फ़ मुंहिंजे अचण शर्त पंहिंजे लेखे पाणई भजी वियो आहे। जेकडहिं ईअं न थिए त पोइ मुंहिंजे हाज़िर थियण जो अर्थ ई कहिड़ो। मुंहिंजो नालो सूर्यनारायण बि जेकर मिटिजी वञे। हीउ कर्म ऐं अकर्म में डि्सण जो बहितरीन मिसालु आहे। घोर अंधकार

खे दूर कंदे बि सूर्य नारायण कुझु बि न करे रहियो आहे ऐं कुझु न कंदे पिण हू अधँकार खे उभिरण शर्त ई दूर करे थो छडे।

लाटूं जंहिं वक्ति पंहिंजीअ पूरीअ ताक़ात सां फिरंदो आहे (Highest Velocity) उन वक्ति असीं समझंदा आहियूं त हू निंड करे रहियो आहे त हू बीठलु आहे, हले ई कोन पियो। हीउ कर्म में अकर्म डिसण जो मिसालु आहे।

सोझिरो करणु ऐं अंधकार खे दूर करणु सूर्यनारायण जो सहज सुभाव 'स्वधर्म' आहे। कुकुडु सुबह जो सवेल ब्रांग डिए थो, इहो उनजो सहज सुभाव 'स्वधर्म' आहे। इन वास्ते उन्हनि खे को बि मानपत्र मिलण वारो कीन आहे। कलि कलि करणु पखीअ जो सहज धर्म आहे। ब्रोली पाणई सिखणु ब्रारनि जो सहज धर्म आहे। ईश्वर स्मरण करणु संतनि जो सहज धर्म आहे।

सभ जे भले ख़ातिर, लोक कल्याण ख़ातिर भगुवत प्रीतार्थ, रागुद्वेष जी पीड़ा रहित सुभावीक तरह सां तमाम कर्म कंदो रहणु, साधू पुरुष जो स्व धर्म आहे। संदसि कयल अहिड़ा तमाम कर्म अकर्म तरफ़ ई झुकियल रहनि था सेवा करणु ज्ञानीअ जो सहज कर्म आहे, उपकार करणु संदसि सुभाव थी वञे थो, ''मां उपकार न कंदुसि' ईअं बिं जे खणी हीउ चवे त बि ईअं करणु संदसि वास्ते मुमकिन न आहे।

सन्यास खां बि वधीक उत्तम दर्जो अकर्म जी स्थितिअ जो आहे। वेही रहो तडहिं बि इहा हिक क्रिया ई चइबी। वेहणु बि हिक क्रिया आहे। सिर्फ़ ग्रामर जे ख़्याल खां हीअ हिक क्रिया आहे, ईअं न आहे पर सृष्टिअ जे शास्त्र में पिण 'वेहणु' हिक क्रिया करे लेखी वेई आहे। कर्म न करणु पिण क्रिया जो हिक क़िस्म आहे। चोवीह ई कलाक कर्म में रुधल हूंदे पिण सूर्य ज़रे मात्र बि कर्म कीन थो करे।

सूर्य कर्म कंदे बि कर्म न थो करे। इन स्थितिअ जो वर्णन कयोसीं। सागेई नमूने हिकु ब्रियो रुप पिण आहे। हीउ पाण ख़ुद को बि कर्म न कंदे पिण सारे संसार खां कर्म कराए थो। इहो हिन जो ब्रियो रुप आहे। हिन में अपार प्रेरक शक्ति आहे। अकर्म जी इहा ई त ख़ूबी आहे। अनंत कार्य करण जी घुरिज आहिर जरुरी शक्ति अकर्म में समायल आहे। ब्राफ खे बंदि करे दब्राए रखो त उहा तमाम वडा कम करे थी, हिन दब्रियल ब्राफ में अणगुणी शक्ति पैदा थिए

थी। उहा दब्रियल ब्राफ वड्रियूं रेलगाड्रियूं सहज सुभाउ रांदीकनि जियां गिहले वञे थी।

इन रीत कर्म में अकर्म ब्रुई असामान्य आहिनि हिक तरफ़ कर्म ज़ाहिर आहे त अकर्म जी अवस्था गुप्त। ब्रिए तरफ़ अकर्म जी अवस्था ज़ाहिर आहे त कर्म गुप्त रहे थो। इनकरे अनंत कर्मनि जो वहिंवारु हले थो। हिन अवस्था में अकर्म में कर्म हिकदम दब्रे भर्यलु हुजण करे वड्रा वड्रा कार्य पूरा करे सघिजनि था। जिन जी अहिड़ी अवस्था सिद्ध थियल आहे, उन्हनि जे ऐं आलसी इन्साननि जे विच में वड्रो फ़र्क़ु रहे थो।

सूर्य नारायणजी पाण ख़ुद होका कीन ड्रींदो आहे पर खेसि ड्रिसण शर्त ई रखी उड्रामण लग्रुनि था। रिढ़ूं, ब्रकिर्यूं नचण लग्रुनि थियूं। वापारी दुकान खोलिनि था, हारी खेती करण वञनि था ऐं संसार में ज़ात ज़ात जा वहिंवार चालू थी वञनि था। सूर्य सिर्फ़ ''हुजे'' थो इहो सिर्फ़ 'हुजणु' ई काफ़ी आहे। हिन अकर्म अवस्था में अनंत कर्मनि करण जी प्रेरणा भर्यल आहे।

(41-2) कर्म ऐं अकर्म में ज्ञानी पिण भुलजी था पवनि

''किं कर्म किं अकर्म इति कवयः अपिअत्र मोहिताः ॥''

भग्रुवान गीता में क़ूबूल करे थो त : ''कर्म छा आहे ऐं अकर्म छा आहे'' हिन गंभीर मामले में बुद्धीमान पुरुष पिण भुल्जी था पवनि। कर्म छा आहे ऐं अकर्म छा आहे, इन ग्राल्हि जो फ़ैसलो बुद्धीमान माण्हू पिण ठीक तरह सां न था करे सघनि।

हीअ ग्राल्हि समझण सां तमामु विचित्र पेई लग्रे। ईअं त कर्म छा आहे ऐं अकर्म छा आहे, इहो त साधारण बुद्धीअ वारो अण पढ़ियलु इन्सान बि समझे थो।

कर्म कंहिंखे थो चइजे ऐं अकर्म छाखे थो चइजे? इहो न असीं साधारण जीव बि ज्राणूं था, त पोइ भग्रुवान ईअं कीअं थो चवे त बुद्धीमान माण्हू या ज्ञानी पुरुष पिण कर्म ऐं अकर्म जो भेद समझी न था सघनि। इनकरे भग्रुवान जी वाणीअ में कुझु त गूढ़ो मतलब समायल आहे, जंहिं खे समझण जी असां खे कोशिश करणु घुरिजे। शायद असीं जंहिंखे कर्म चऊं था, असीं जंहिंखे अकर्म करे मञूं था, सो शायद अकर्म न हुजे।

गीता मुंझियल न आहे पर असांजो जीवन ई मुंझियिलु आहे। इनकरे असां खे ईअं लगे थो। असीं जंहिंखे कर्म करे कोठियूं था, सो सचुपचु कर्म Action न पर घणे भांङे प्रतिकर्म Reaction हूंदो आहे। कोई असां खे गार्यूं डिए ऐं असीं खेसि साम्हूं गार्यूं डियूं त पोइ असां जेकी गार्यूं डिनियूं, से असां जो कर्म न लेखिबियूं पर प्रतिकर्म 'मोट' करे कोठिबियूं। को असां जो घणो मानु इज़त करे, गुलनि जा हार पहिराए ऐं असीं संदसि शुकिर गुज़ारी ज़ाहिर कर्यूं ऐं खुश थियूं। ख़ुश थियणु ऐं शुकिरगुज़ारी करणु असां जो कर्म न पर प्रतिकर्म ई आहे यानी कर्म साम्हूं असां जी मोट।

सचु त असीं जीवन में घणे भांङे कर्म न पर प्रतिकर्म ई कंदा आहियूं। आम तोर सभु कर्म असां जे अंदिरां सहज सुभाव अज़ख़ुद (Spontaneous) उमंग खां कीन था थियनि। पर ब्राहिरिएं वातावारण जे असर हेठि ई थींदा था रहनि।

को असां खे धिको डिए ऐं असां खे क्रोध अची वञे, को असांजी घणी इज़त करे ऐं असीं अहंकार में भरजी वञूं, को असांखे गारि डिए ऐं असीं खेसि मोट में गारि डियूं, को असां सां प्रेम सां गाल्हाए ऐं असीं ख़ुश थी वञूं। इहे सभु कर्म न पर प्रतिकर्म ई आहिनि यानी मोट।

सूक्ष्म दृष्टिअ सां डिसूं त को असां खे गारि डिए त उन वक्ति असीं खेसि गारि डींदा न आहियूं, पर मजबूरनि डियणी पवंदी आहे। असीं जे गारि डियूं त इहो थियो कर्म, पर जे गारि डियणी पवे त इहो थियो प्रतिकर्म। पर जे असीं उन डांहं ध्यान न डेई खेसि साम्हू गारि न डियूं कावड़ि न कर्यूं त पोइ असां गारि न डियण या क्रोध न करण जो कर्म कयो समझणु घुरिजे। इन तरह असांजी को इज़त न करे, मानु न डिए त बि असीं संदसि साराह कर्यूं, त पोइ असांजी साराह करण खे बि कर्म करे गुणजे। असां सां को मिठा अखर न गाल्हाए त बि असीं साणस प्रेम सां पेश अचूं त पोइ असां जे सुठे नमूने पेश अचण खे कर्म करे लेखिजे। कर्म यानी सहज सुभाव (Spontaneous) स्व इच्छा, स्वधर्म समझी,नीती ऐं शास्त्र अनुसार कयल कर्म (Prescriberd action)।

जेको शुद्ध बुद्धीअ, व्यवसायात्मिक बुद्धीअ खां उत्साहित थियलु हुजे सो थियो कर्म, जडहिं कि प्रतिकर्म आहे मोट में कयुलु कर्म। ''जवाबी क़दम''

मजबूरीअ खां कयल क्रिया। भगुवान बुद्ध जे बारे में हिक कहाणी वीचार करण जोगु आहे।

हिक माण्हूअ भगुवान बुद्ध खे थुक हंई। बुद्ध चयुसि "मूं समझियो त तूं कुझु चवण थो चाहीं, छो त थुकणु बि चवण जी हिक रीत आहे। शायद तुंहिंजे मन में एतिरो त क्रोधु भरजी वियो आहे, जो तूं उन खे अखरनि में चई कीन सघिएं ऐं थुकी करे ज़ाहिर कयुई। मूंखे पिण पाण केतिरनि ई मौक़नि ते केतिर्यूं ई गाल्हियूं चवण जो वीचार हुजे ऐं उहे वाणीअ रस्ते ज़ाहिर न करे सघण करे इशारनि रस्ते ज़ाहिर करिणयूं पवंदियूं आहिनि। तूं पिण पंहिंजो क्रोधु वाणीअ रस्ते ज़ाहिर न करे सघिएं इन करे थुकी करे इशारे सां ज़ाहिर कयल इहा गाल्हि मां समझी वियुसि।"

उन माण्हूअ चयो, "तव्हां कुझु बि समिझियो न आहे। मूं त सिर्फ़ कावड़ि कई आहे।" भगुवान बुद्ध चयुसि, "मां बराबर समिझियो आहियां, त तो सिर्फ़ कावड़ि कई आहे।" उन माण्हूअ पुछियुसि त, "तव्हीं पिण मोट में छा जे करे कावड़ि ग़ुस्सो न था कर्यो ?"

भगुवान बुद्ध चयो, "तूं मुंहिंजो को मालिक कोन आहीं, जो तो क्रोधु कयो त मोट में मूंखे पिण क्रोधु करणु घुरिजे ऐं तुंहिंजी पुठि वठण घुरिजे। मां जे ईअं कर्यां त पोइ तुंहिंजो ग़ुलाम कोठिजां। मां को तुंहिंजे पोयां पोयां हलण वारो तुंहिंजो पाछो न आहियां। तो क्रोधु कयो, बसि गाल्हि उते पूरी थी वेई। हाणे मूंखे छा करणो आहे सो मां पाणई कंदुसि।" बुद्ध न क्रोधु कयो ऐं न कुझु चयो। सिर्फ़ थुकूं उघी साफ़ करे छडियूं।

ब्रिए डींहुं साग्रियो माण्हूं भगुवान बुद्ध खां माफ़ी वठण आयो। पेरनि ते सिरु रखी आंसू वहाइण लग़ो। संदसि मथो मथे करे बुद्ध उन जे साम्हूं डिठो, पुछियाईंस त, "हाणे कुझु चवणो अथई?" उन माण्हूअ चयो, "तव्हीं ही छा चई रहिया आहियो?" बुद्ध चयुसि, "मां समझी वियुसि। तुंहिंजे मन जो ब्रोजु एतिरो त भारी बणजी वियो आहे, जो तूं अखरनि रस्ते चई न थो सघीं। गोढ़ा ग़ाड़े, सिरु झुकाए पंहिंजो भाव ज़ाहिर करे रहियो आहीं, काल्ह पिण तो कुझु चवण चाहियो थे, जेको वाणीअ रस्ते चई न सघिएं। अजु पिण कुझु चवण चाहीं थो पर वाणीअ रस्ते चई नथो सघीं। इनकरे आंसू वहाए सिरु

झुकाए इशारनि सां चई रहियो आहीं। इहो मां समझी सघां थो।''

माण्हूअ चयो, '' मां माफ़ी वठण आयो आहियां, मूंखे माफ़ कर्यो।''
भगुवान बुद्ध चयो, ''मां छा माफ़ कर्यां, मूं काल्ह तो मथां क्रोधु कयो ई कोन्हे। पोइ माफ़ करण जो सुवाल रहे ई किथे थो, जंहिं नमूने तो काल्ह थुकूं हंयूं अजु बि सागिए ई नमूने तूं पेरे पएं। बसि ग़ाल्हि पूरी थी। इन खां वधीक ब्रिए कंहिं बि कर्म में पवण जी मूंखे कहिड़ी ज़रूरत ? मां को तुंहिंजो ग़ुलाम त न आहियां, जो जंहिं वक्ति तूं चवीं त क्रोधु कर्या ऐं जंहिं वक्ति तूं चवीं त माफ़ कर्यां।''

''प्रतिकर्म (मोट) हिक क़िस्म जी ग़ुलामी आहे। जे को ब्रियो कोई तव्हां खां कराए थो। जेको ग़ुलाम नाहे, स्वतंत्र आहे, सोई कर्म करे थो, प्रतिकर्म न थो करे। इनकरे भग़ुवान कृष्ण चवे थो, ''कर्म ऐं अकर्म जो भेदु बुद्धीमान माण्हू बि बराबर समझी न था सघनि। अकर्म (Inaction) जो अर्थ पिण असां खे सुठे नमूने समझणु घुरिजे। ''कुझु न करणु'' सिर्फ़ वेही रहणु (Non action) इनखे असीं घणो करे अकर्म समिझंदा आहियूं, पर इहो बराबर कोन्हे। बिल्कुल कुझु करणो ई कीन, इनखे अकर्म चई कीन सघिबो। भगुवान गीता में चवे थो,

न कर्मणां अनारंभातं नैष्कर्म्य पुरुषो ड रनुते।

न च संन्यसनादेव सिद्धि समधि गच्छति।। (3-4)

कंहिं बि कर्म जी शुरूआत ई न करणु ऐं चवणो त कर्म नाले जो ई त्यागु कयो अथम, यानी त ''मां'' निष्कर्म सिद्धि प्राप्त कई आहे त इहा ग़ाल्हि सफ़ा खोटी आहे।

असीं कर्म हीनता (Non Action) ई अकर्म (Inaction) समझूं था, इहो सरासर ग़लत आहे। कुझु बि न करणु, अकर्म थी कीन सघंदो। छाकाण त असीं कुझु बि न करे रहिया आहियूं। हथ पेर जोड़े, अखियूं, कन, वातु बंदि करे वेही रहूं, तड॒हिं पिण असीं घणाई कम कंदा रहंदा आहियूं। सभिनी इन्द्रियुनि जो वहिंवारु बंदि करे, मन सां अनेक क़िस्मनि जा संकल्प विकल्प कर्यूं, कामनाउनि ऐं वासनाउनि जा वीचार कर्यूं त इहे पिण कर्म ई चइजनि था। खेनि अकर्म चई कीन सघिबो। ईअं करण सां त असां उल्टो मिखिरु

कयो, छल कयो समिझिजे ऐं अहिड़ो जीवात्मा मूर्ख ई लेखिजण में अचे थो, भगुवान इहा गाल्हि साफ़ खोले बुधाए थो।

कर्मेन्द्रियाणि संयम्य यआस्ते मनसा स्मरन्
इन्द्रियार्थन् विमूढात्मा मिथ्याचारः स उच्चते॥ (3.6)

जड॒हिं असीं बा॒हिरियुनि इन्द्रियुनि जो वहिंवार बंदि कयूं था, तड॒हिं असीं मन ई मन में घणाई वहिंवार कर्म कंदा रहूं था। असीं डे॒खाउ कयूं था "कर्महीण" जो। पर अंदर ख़ाने असीं डा॒ढा मशग़ूल रहूं था। पलंग ते हथ पेर डिघा करे सुम्ही पऊं त इन खे अकर्म चई कीन सघिबो। छाकाण जो उन वक्ति असां जो मन बा॒हिर ई भिटिकंदो रहे थो। कंहिं खे गार्यूं डीं॒दो त कंहिंखे शाबासि डीं॒दो रहे थो, न ज़ाण अलाए केतिरा कर्म कंदो रहे थो।

जेतिरो कर्म असीं भाड़ो ख़र्चे डुक डोड़ करे वक़्तु विञाए करे कीन सघूं, उन खां घणो वधीक कर्म असीं पलंग ते पइजी रहण सां बिना कंहिं भाड़े ख़र्चण वक़्त विञाइण, डुक डोड़ करण खां सवाइ करे सघूं था। इन करे इनखे अकर्म चई कीन सघिबो।

अकर्म माना आहे बा॒हिरियुनि इन्द्रियुनि सां पंहिंजो नित कर्म कंदे पिण अंदर मन में कर्म कला जी का बि कामना, वासना, आसक्ति या रागु॒द्वेष न रखंदे सिर्फ़ सभ जे भले ख़ातिर ईश्वर प्रीतार्थ, स्वधर्म जी भावना सां जेकी बि कर्म असां खे सहज सुभाउ थींदा रहनि, उन्हनि खे ई सिर्फ़ अकर्म कोठे थो सघिजे। इन रीत कर्म ऐं अकर्म जे विच में नाज़ुक ऐं सूक्ष्म रिश्ते खे जेको बराबार समझे थो, उहो ई पुरुष बुद्धीमान ऐं सियाणो कोठाए थो, ईअं भगुवान चवे थो।

अकर्म यानी आंतरिक मौन (अंदरीं माठि) अंदर में कर्म जो करणो बि न हुजे, कर्म फल में आसक्ति, रागु॒ द्वेष वासना या कामना पैदा न थिए, पर बा॒हिरींअ रीत कर्म जो अभाउ पिण डि॒सण में अचे, इन जो नालो आहे अकर्म। जड॒हिं अंदर में कर्म फल जी वासना उथे थी तड॒हिं कर्ता बणजी पइजे थो। पर जे कर्म फल जी वासना आसक्ति ऐं रागु॒ द्वेष अंदर में न रहे त पोइ कर्म जो कर्ता पिण कीन बचे थो ऐं शून्य (Zero) बणजी वञे थो। पोइ सिर्फ़ निष्काम कर्म ई बचे थो, जंहिंखे चइजे थो अकर्म।

• • •

करने अथवा दुःख पहुँचाने के लिये किये जाते हैं, तो वे भी विकर्म हैं।

संचित कर्म - वर्तमान से पहले इसी जन्म में किये हुये अथवा पिछले अनेक मनुष्य जन्मों में किये हुये जो कर्म संगृहीत हैं, वे संचित कर्म कहलाते हैं ।

प्रारब्ध कर्म - संचित कर्मों में से जो कर्म फल देने के लिये अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थिति के रूप में सामने प्रस्तुत हो गये हैं, वे प्रारब्ध कर्म हैं ।

प्रश्न - प्रारब्ध बड़ा है या पुरुषार्थ अथवा कर्मों में मनुष्य के प्रारब्ध की प्रधानता है यो पुरुषार्थ की ?

उत्तर - इस विषय में बहुत सी शंकाएँ हुआ करती हैं । अतः उनके समाधान के लिये यह समझना जरूरी है -

'मनुष्य में चार तरह की चाहना हुआ करती है'– एक धन की, दूसरी धर्म की, तीसरी भोग की और चौथी मुक्ति की । प्रचलित भाषा में इन्हीं चारों को 'अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष' कहते हैं ।

(१) अर्थ – धनको 'अर्थ' कहते हैं । वह दो प्रकार का होता है – स्थावर और जंगम । सोना, चाँजी, रुपये, पैसे, जमीन-जायदाद, मकान आदि स्थावर धन है और गाय, भैंस, घोड़ा, हाथी आदि जंगम धन है ।

(२) धर्म – सकाम अथवा निष्काम भाव से जो यज्ञ, तप, दान, व्रत और तीर्थ आदि किये जाते हैं; उनको 'धर्म' कहते हैं ।

(३) काम – सांसारिक सुख भोग को 'काम' कहते हैं । वह सुख-भोग आठ तरह का होता हैं – शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, मान, बड़ाई और आराम। (अर्थात् इन आठ चीजों के द्वारा जो आनन्द का अनुभव होता है, उसे सुख-भोग कहते हैं ।)

(४) मौक्ष – आत्मसाक्षात्कार, तत्त्वज्ञान, कल्याण, उद्धार, मुक्ति, भगवद्दर्शन और भगवत्प्रेम आदि का नाम 'मोक्ष' हैं । इन चारों (अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष) - में अर्थ (अर्थात् धन) और काम (अर्थात् भोग) - की प्राप्ति में प्रारब्ध की मुख्यता और पुरुषार्थ की न्यूनता है तथा धर्म और मोक्ष में पुरुषार्थ की मुख्यता और प्रारब्ध की न्यूनता है ।

इसलिये स्त्री, पुत्र, परिवार, भोजन और धन आदि में तो सन्तोष करना चाहिये; परंतु स्वाध्याय, पाठ, पूजा, नाम-जप और कीर्तन आदि में कभी भी सन्तोष नहीं करना चाहिये।

तात्पर्य यह हुआ कि, प्रारब्ध के फल–धन और भोग में सन्तोष करना चाहिये, क्योंकि प्रारब्ध के अनुसार वे जितने मिलनेवाले हैं, उतने ही मिलेंगे, उससे अधिक नहीं, परंतु धर्मका अनुष्ठान और अपना कल्याण करने में कभी सन्तोष नहीं करना चाहिये,

क्योंकि यह नया पुरुषार्थ हैं और इसी पुरुषार्थ के लिए मनुष्य शरीर मिला है ।

प्रश्न – प्रारब्ध से होने वाले रोग में और कुपथ्य से होनेवाले रोग में क्या अन्तर है?

उत्तर – प्रारब्ध से होनेवाले रोग दवाई से नहीं मिटता और कुपथ्य से होनेवाले रोग दवाई से मिट जाता है ।

मनुष्य की जो आकस्मिक मृत्यु होती है, जैसे – 'सर्प काटने से, पानी में डूबने से, एक्सीडेन्ट आदि होने से, हार्टफेल होने से और किसी दूसरे के द्वारा मारा देने से' – तो यह मृत्यु स्वाभाविक मृत्यु की तरह ही प्रारब्ध के अनुसार आयु पुरी होने पर होती है ।

कोई व्यक्ति जानबूझकर आत्महत्या कर ले, फाँसी लगा ले, कुएँ में कूदकर मर जाय, जहर खा ले, स्वयंको गोली मार ले और आग आदि लगाकर मर जाय - तो यह उसकी अकालमृत्यु है। यह मृत्यु आयु के रहते हुई ही होती है। ऐसी मृत्यु में उसे बहुत बड़ा पाप लगता है; क्योंकि यह प्रारब्ध नहीं हैं, एक नया पापकर्म है ।

जीवको सुख या दुःख देनेवाला कोई दूसरा नहीं है, उसे तो अपने ही कर्मो का फल भोगना पड़ता है । (श्रीमभ्दा० १०/६४/३८)

प्राणी अपने कर्म के अनुसार ही उत्तम और अधम शरीरों को ग्रहण करता है तथा छोड़ता है। उसे उसके कर्म के अनुसार ही सुख-दुःख और भय आदि की प्राप्ति होती है। 'यह शत्रु है, यह मित्र है' – यह व्यवहार भी कर्मो के अनुसार ही बनता है। सच पूछा जाय तो मनुष्य का कर्म ही गुरु हैं और कर्म ही ईश्वर है – 'कर्मैव गुरुरीश्वर' (श्रीमभ्दा० १०/२४/१७)

जो कर्म भगवान् को समर्पित कर दिया जाता है, उसका कभी नाश नहीं होता - - वह अक्षय हो जाता है। तथा उससे जीव को उत्तम गति की प्राप्ति होती है ।

बोलचाल एवं पहनावे से नहीं 'कर्म से होती है, व्यक्ति की परख' ।

सतयुग में किसी एक के द्वारा किये गये पापकर्म से सारे देश पर असर पड़ता है, त्रेतायुग में गाँव पर, द्वापर – युग में वंशपर और कलियुग में जो पाप करता है, उसका फल वही भोगताहै । (गर्गसंहिता, अश्वमेघखण्ड, ६१वाँ अध्याय)

महापुरुषों को चाहिये के कर्म करने में अपना कोई प्रयोजन न रहने पर भी वे समस्त कर्तव्य-कर्मो को सुचारु रूप से करते रहें, क्योंकि उनके आचरणों का प्रभाव समाज पर ज्यादा पड़ता है ।

मनुष्य जब दुःख आता है, तब घबराता है। लेकिन उसे घबराना तो उस समय चाहिये, जिस समय वह दुःख-जनक कर्म करता है। इसलिये दुःख से बचने का उपाय यही है कि वह दुःखजनक कर्मों का ही परित्याग कर दे ।

स्वर्गलोक तो पुण्यकर्मोंका फल भोगने के लिये हैं और चौरासी लाख योनियों के

समेत नरक पापकर्मों के फल भोगने के लिये हैं; परंतु मनुष्य-योनि पुण्य और पाप-दोनोंसे ऊँचे उठकर अपना कल्याण करने के लिये हैं ।

'शरीर, वाणी और मन' – इन तीनों के द्वारा ही सारे कर्म होते हैं । इनको ही कायिक, वाचिक और मानसिक कर्म कहते हैं । अतः अन तीनों में अशुद्धि आने से ही पाप और शुद्धि आने से पुण्य बनते हैं ।

मनुष्य जितने भी सांसारिक कर्म करता है – 'चाहे वह व्यापार करे, चाहे खेती करे और चाहे नौकरी आदि अन्य काम करे'– उनमें उसे फल की इच्छा रहती हैं, और इस प्रकार उसका फलेच्छा का स्वभाव ही बन जाता है। अब, जब वह भगवान् का भजन-पूजन आदि भी करता है, तब वह उसमें भी फलेच्छा की भावना रखता है, क्योंकि उसका पहले से ही वैसा स्वभाव बना हुआ है। चूँकि यह फलेच्छा ही मुख्यरूप से जन्म-मृत्युका कारण है, इसलिये मनुष्य को सभी कर्म निष्काम भाव से अर्थात् फलकी इच्छा न रखकर ही करने चाहिये ।

प्रश्न – जाति जन्म से मानी जाय या कर्म से ?

उत्तर – ऊँच-नीच योनियों में जितने भी शरीर मिलते हैं, वे सब गुण और कर्म के अनुसार ही मिलते हैं । गुण और कर्म के अनुसार ही मनुष्य का जन्म होता है, इसलिये जाति जन्म से ही मानी जाती है, कर्म से नहीं । इसलिये विवाह, भोजन आदि कर्म जन्म की प्रधानता से ही करने चाहिये अर्थात् अपनी जाति या वर्ण के अनुसार ही भोजन, विवाह आदि कार्य होने चाहिये ।

जो गृहस्थ होकर कर्म न करे (अर्थात् आलसी बना रहे), जो ब्रह्मचारी होकर व्रत का पालन न करें, जो वानप्रस्थी होकर गाँव में रहे अथवा जंगल में रहकर तप न करे एवं जो सन्यासी होकर विषय-वासनाओं में फँसा रहे अर्थात् परमात्म-चिन्तन न करे - तो ऐसे लोग अपने अपने आश्रमों के कलंक हैं ।

भगवान् कहते हैं कि जो कर्मो का एवं कर्म फलों का आश्रय न रखकर सर्वथा मेरे ही आश्रित रहता हैं, ऐसे भक्त को अपने अद्धार के लिये कुछ नहीं करना पड़ता – उसका उद्धार मैं स्वयं कर देता हूँ । उसके अपने जीवन-निर्वाह या साधन-सम्बन्धी किसी बात की कमी नहीं रहती – उस सबको पूर्ति भी मैं कर देता हूँ । (गीता ९/२२)

कामनाएँ

पृथ्वी जितना भी अन्न हैं, स्वर्ण है, पशु है और स्त्रियाँ हैं – वे सबके सब मिलकर भी उस व्यक्ति को सन्तुष्ट नहीं कर सकते, जो कामनाओं को जंजीर से जकड़ा हुआ है।

मोटर की चार अवस्थाएँ होती हैं –

१. मोटर जब एक स्थापन पर गैरेज में खड़ी रहती है, तब न तो उसका इंजन चलता

है और न पहिये चलते हैं ।

२. केवल मोटर चालू करने पर इंजन चलने लगता है, परन्तु पहिये नहीं चलते ।

३. मोटर को इस गैरेज से रवाना करना पर इंजन भी चलता है और पहिये भी चलते हैं ।

४. ढलवाँ मार्ग आने पर इंजन को बन्द कर देते हैं और पहिये चलते रहते हैं ।

ठीक इस प्रकार व्यक्ति भी चार अवस्थाएँ होती हैं –

१. न कामना होती है और न कर्म होता है ।

२. कामना होती है, पर कर्म नहीं होता है ।

३. कामना भी होती है और कर्म भी होता है ।

४. कामना नहीं होती और कर्म होता है ।

अतः जिस प्रकार मोटर की सबसे उत्तम चौथी अवस्था है कि इंजन न चले और पहिये चलते रहें अर्थात् तैल भी खर्च न हो और रास्ता भी तय हो जाय । ठीक इसी प्रकार मनुष्य की भी सबसे उत्तम अवस्था यह है कि – 'कामना न हो और कर्म होते रहे' । तात्पर्य यह है कि साधक को सम्पूर्ण कामनाओं का त्याग करके ही कर्म करना चाहिये ।

मनुष्य यदि कामनाओं के वशीभूत न हो तो उसके द्वारा स्वाभाविक ही अच्छे कर्म होंगे । वास्तव में कामनाएँ ही मनुष्य से बुरे काम करवाती है ।

मनुष्य के मन में जब तक कामनाएँ रहेंगी, तब तक उसकी बुद्धि स्थिर नहीं रह सकती ।

किसी कामना को लेकर जो भी पुण्य, यज्ञ आदि किया जाता है, तो फलभोग के बाद वह पुण्य समाप्त हो जाता है । इसलिये कोई भी साधना या भजन आदि निष्काम-भाव से करना चाहिये । इससे भगवान् की प्राप्ति होती है ।

वैसे तो किसी वस्तु की कामना करना दुःखदायी है ही; क्योंकि कामना ही बन्धन को प्राप्त कराती है, लेकिन यह ध्यान दें कि अपने स्वरूप का बोध प्राप्त करने या परमात्मा को प्राप्त करने की कामना किसी प्रकार से बन्धनयुक्त कामना नहीं हैं; क्योंकि परमात्मा नित्यप्राप्त हैं और अपना स्वरूप हैं । इसलिये अपने की इच्छा करना कोई 'कामना' नहीं कहलाती । जैसे – शरीर की भूख मिटने के लिये भोजन की इच्छा करना कामना नहीं हैं । वैसे ही स्वयं की भूख मिटाने के लिये परमात्मा की इच्छा करना कामना नहीं है । लेकिन कोई इसे यदि कामना भी मान ले तो यह बन्धनकारी नहीं हैं, बल्कि मोक्ष देनेवाली है ।

कर्म जे सिद्धांत बाबत अवधूत बाबा शिवानंदजी जे कैसेट मां चूंडियल के अनमोल मोती

- तन्हां गुरूअ सां रहंदा त तन्हां जी ज़िन्दगी बदलजी वेंदी। तन्हां जे ज़िन्दगीअ जी शैली अहिड़ी बदलजी वेंदी जो तन्हां पंहिंजो पाण खे ई सुञाणे कोन सघंदा। जेको तन्हां केतरन जनमन खां ग़ोल्हे रहिया आहियो उहो तन्हां खे समझ में अची वेंदो। सतचितआनंद जो अनुभव थींदो। इहो अनुभव तन्हां जे अंदर वेठल आत्मा ई कराए सघंदी पर इहो अनुभव तन्हां में रहियलु अहम तन्हां खे नथो करणु ड्रिए। गुरू इन्हीअ अहम खे नास करे आत्मा जो अनुभव कराए थो।
- कर्म जो सिद्धांत छा आहे उहो असांखे नितानंद बाबा फ़क़त चइन लफ़्ज़न में ई बुधायो आहे शुद्ध भावना, निर्मल मन, निश्चल मन ऐं विशाल मन। बाबा चवे थो "सब मिटी है" सभु मिटीअ बराबर आहे। जेकड्रहिं माण्हू इहो समझी जीवन जीए त खेसि दुखु थिए ई न। आख़िर त सभु मिटी ई आहे। जेकड्रहिं इहो समझंदा त तरी वेंदा न त माया में फासी वेंदा।

हिकु मशहूर गीत आहे "दुनिया बनाने वाले काहे को दुनिया बनाई, कैसी ये दुनिया बनाई?" हीअ दुनिया कहिड़ी आहे? किथे कोई रोए थो, त किथे वरी कोई खिले थो को राजा आहे त को रंकु आहे, कोई रोटी खाई वधियलु खाधो फिटो करे थो त कोई वरी उहो वधियलु खाधो खाई जीए थो। इनमें दुनिया बणाइण वारे जो ड्रोहु आहे ? उनखे असीं चवंदासीं त तो अहिड़ी दुनिया छो बणाई ? पर इहा सचुपचु समझण जहिड़ी ग़ाल्हि आहे त कोई हिक हालतमें हिकु माण्हू ख़ूब सुखी आहे त उन ई हालत में ब्रियो माण्हू दुखी आहे। मिसाल तोर हिक कुटुंब में पंज भाती हुजन। चार भाती बराबर हुजन पर हिकु भाती झग़ड़ालू हुजे सभिनी सां ख़ूब लड़ाई झग़ड़ो कंदो हुजे। इएं छो हालत त सभनी जी साग्री आहे। अक्सर हिक ई हालत में रहियल ब्र माण्हू कमु धन्धो करण वञन त हिकु हथु विझे त उतां सोन निकरे, ब्रियो महिनत करे पर कुझु करे कीन। कंहिं खे

शरीर जो सुखु कोन्हे। छह छह आपरेशन करायल अथसि। कंहिं जे घर गाड्डियूं बंलगा आहिन, हिकु ई छोकरो अथसि पर उहो चरियो आहे। केतरन खे गाड्डियुन बंगलन में पिण आनंद कोन थो अचे जड्डहिं केतरन खे थोरे में घणो आनंद अचे थो। मुंहिंजे जीवन में दुखु छो आहे ऐं सुखु छो आहे। इहा ग्गाल्हि समझणी आहे।

हरको माण्हू पंहिंजे अग्गिएं जनम जे संचित कर्मन अनुसार पंहिंजे आसपास जी घटना खे जीवन में खणे थो ऐं उन मूजब महसूस करे थो। हिक ई घटना महसूस कराइण लाइ ड्डहन जुदा जुदा माण्हुन खे बीहारियो। हिक खे उन में आनंद ईंदो, ब्बिए खे उन में ख़ास कुझु न लग्गुंदो ऐं टिएं खे उहा घटना दुखदाई लग्गुंदी। इन रीत घटना हिक ई आहे पर सभिनी खे अलग्ग अलग्ग लग्गुंदी।

- जड्डहिं अमृत मंथन थींदो आहे तड्डहिं पहिरियाईं तमो गुणु, पोइ रजो गुणु ऐं पछाड़ीअ में सतो गुणु ब्बाहिर ईंदो आहे। तव्हां पंहिंजे जीवन में को बि कमु कंदा त अवल ज़हिरु ई ब्बाहिर ईंदो। जेकड्डहिं तव्हां शिवत्व खे पातो हूंदो, सुञातो हूंदो त उहो ज़हिरु पी वेंदा ऐं जेकड्डहिं शिवत्व तरफ़ नथा वञो त उहो ज़हिर तव्हां ब्बाहिर उछलाईंदा जेको ब्बियन ते पवंदो ऐं अनेक माण्हुन खे तकलीफ़ थींदी ऐं जेकड्डहिं पाण ग्रहण कंदा त नीलकंठ महादेव थींदा। अमृत मां जीअं अवल ज़हिरु ब्बाहिर आयो। इहो रजो गुणु आहे। तव्हां अक्सर ड्डिठो हूंदो त साधना कंदे घुमरा थी पवंदा आहिन, मथो भ्गारी थियो पवे, शक्ति ज़ायइ थींदे बुख़ार अचियो वञे। इहे सभु अंदर जा ज़हिर रूपी कर्म ब्बाहिर अचन था। जेकड्डहिं इहो सभु हज़म करे वेंदा त ऐश अशरत ईंदी, जंहिं में हथु विझंदा, लक्ष्मी ईंदी। लक्ष्मी तव्हां जे पुठियां ई आहे पर ड्डिसिजो जे मुड़ी तव्हां खेसि पकड़ियो त ज़वालियत यक़ीनन आहे।
- हिकड़ा ब्बु माण्हू वरिहयन तांई कोर्ट कचहरीअ जे चकर में पइजी लड़न्दा हुआ। इन लड़ाईअ में हिक माण्हूअ खे पंहिंजियूं ब्बनियूं ज़मीनूं विकणणियूं पेयूं। पोइ कंहिंजे चवण सां हू हिक सिद्ध पुरुष वटि वियो। उन महात्मा खेसि पंहिंजे हथ मां भभूति कढी खेसि ड्डिनी ऐं चयो तूं हींअर जड्डहिं कोर्ट

में वञी तड॒हिं हिन भभूतीअ जो तिल्कु लग॒ाए वञिजि। हुन उन मूजिब कयो त तुर्तु नतीजो मिल्यो। साम्हूंअ वारो खेसि भाकुर पाए चवण लग॒ो त असीं नाहक़ हिकब॒िए सां लड़ूं था। हींअर कोन लड़ंदासीं। ही माण्हू ड॒ाढो ख़ुश थी वियो। हू डोड़ंदो उन सिद्ध पुरुष वटि आयो ऐं अची पेरे पई चवण लग॒ो त तव्हां मूंते ड॒ाढी कृपा कई, साम्हूंअ वारे सुलुहु करे छड॒ियो। हाणे संदसि वञण बैंदि उन महात्मा जा शिष खेसि चवण लग॒ा त बाबा तव्हां त कमाल करे छड॒ियो, तव्हां हुन खे मुक्त करे छड॒ियो। तंहिंते महात्मा चयो हू मुक्त कोन थियो आहे। वरी उहे ब॒ई पाण में मिलंदा, बिढ़ंदा ऐं कोर्ट में वेंदा।

हींअर अहिड़ी ई हिक ब॒ी सची घटना तव्हां खे बुधायां। जंहिं मां तव्हां कर्म जे सिद्धांत खे चङीअ तरह समझी वेंदा।

हिक माण्हूअ खे रोज़ सपनो ईंदो हो त हू ट्रेन में वञे थो ऐं हुन सां हादिसो थिए थो। अहिड़ो खेसि रोज़ सपनो ईंदो हो। गंगा जे किनारे ते केतिरा महापुरुष रहंदा आहिन। कंहिं चयुसि त वञी उन्हन खां इन्हीअ सपने जो राज़ु पुछु। हुन अची हिक महापुरुष खां इन्हीअ सपने जो राज़ु पुछियो। तंहिं ते उन महात्मा चयुसि त तूं हिते मुंहिंजे आश्रम में अची रहु ऐं शेवा करि त तोखे इन सपने जो राज़ु मइलूम थींदो। ही माण्हू अची आश्रम में रहियो। महात्मा खाउंस बुहारी पाराइण ऐं साफ़ सफ़ाईअ जो कमु कराईंदो हो। पाण ध्यान में वेठो हूंदो हो। उन माण्हूअ सोचियो त हिन बाबा खे त ज॒णु मुफ्त जो नौकरु मिली वियो आहे। मूखां सज॒ो कमु कराए थो पर मुंहिंजे सपने बाबत त कुझु बुधाए ई कोन थो। इएं १०-१५ ड॒ींहं गुज़री विया। हिन माण्हूअ ड॒िठो त हिन महात्मा मूंखे न कोई तावीज़ ड॒िनो आहे नको यज्ञ वग़ैरह कयो अथाईं। मुंहिंजे सपने जो छा? हुन महात्मा खे चयो त हाणे मूंखे इजाज़त ड॒ियो मूंखे वञिणो आहे। तंहिंते महात्मा चयुसि ब॒ ड॒ींहं रही पउ। ब॒ ड॒ींहं जीअं तीअं गुज़ारे वरी चयाईंस त अजु त मां वेंदुस ई। महात्मा चयुसि भलु वञु, पर मुंहिंजो हिकु कमु कंदो वञु। हुन हिक काग़ज़ ते दवा जो नालो लिखी चयुसि त ग॒ोठ मां हीअ दवा वठी अचु पोइ बिलाशक हल्यो वञिज। हिन माण्हूअ खे

लगो त हेतिरा ड्रींहं रहियो आहियां त बाक़ी ही कमु बि वेंदे वेंदे कंदो थो वञां। हू दवा वठण गोठ वियो। वापस वरियो त देरि थी वेई हुई ऐं ट्रेन जो टाईम गुज़री चुको हो। बिए ड्रींहं वञण जो फ़ैसलो कयाईं। बिए ड्रींहं अख़बार में पढ़ियाईं त जंहिं ट्रेन रस्ते हू वञणो हो तंहिं सां ज़बरदस्त हादिसो थियो हो तड़हिं खेसि ख़बर पेई त ही महात्मा खाउंस निष्काम शेवा कराईंदो हो ऐं सुबह शाम माल्हा फेराइण लाइ चवंदो हो। इन रीत हुन मूंखे मौत खां बचाए वरितो। संदसि कर्म सबब हू मौत खे वेझो पवंदो थे वियो। हुन साधक ज़रीए, निष्काम शेवा ज़रीए दूर कयो। इन मां साबित थिए थो त **तप जी अग्नि कर्म खे ब़ारे थी। निष्काम शेवा द्वारा कर्म कटिजन था। मंत्र जाप सां संचित कर्मन जो नास थिए थो।** पोइ त उहो माण्हू स्वामीअ वटि सदाईं रहण लाइ अची वियो पर स्वामीजीअ खेसि लकड़ी हणी कढी छड्रियो। महात्मा संदसि कर्म सां शामिल थियणु न थे चाहियो। खेसि अहिड़ो अहंकार पैदा न करणो हो त मूं ई संदसि जान बचाई आहे। हू जेकड्रहिं आश्रम में रहंदो ऐं साम्हूं ईंदो त मूंखे हरघड़ीअ याद ईंदो त मूं संदसि जान बचाई आहे तंहिंकरे हुन उन माण्हूअ खे वधीक वक्तु आश्रम में रहणु न ड्रिनो।

- हिक भेरे हिकु सेठ आयो। चवण लगो त मूंखे शक्ति कान्हे। मां तव्हां जे शरन आयो आहियां। मूंखे स्वीकारियो। गुरूअ चयुसि त पहिरियाईं घर वञी पंहिंजी समूरी संपति दान करि। इनकरे हू घर वापसि आयो ऐं वटिस जेको कुझु हो सो समूरो मालु मिल्कियत दान में ड्रेई छड्रियाईं पोइ गुरूअ वटि अची चयाईं त साईं तव्हां जे चवण मूजिब मूं सभु कुझु दान करे छड्रियो आहे। हाणे मूंखे अंगीकार करियो तंहिंते गुरूजी ड्रंडो ओलारे चयुस निकुर हितां बिखारी बणिजी हल्यो आयो आहीं। तंहिंते सेठ खे चिड़ लगी त गुरूअ मूंखे ही फलु ड्रिनो? सिद्धिअ जे मार्ग में इएं ई थींदो आहे। गुरूअ खे कोई समझी न सघंदो आहे। सेठ झंगल में हल्यो वियो। कुझु करणो त हुउस कीन सो वेही मंत्र जपण लगो। इन्हीअ मंत्र जाप सां मंझिस शक्ति आई ऐं ज्ञान जी मथिस वरखा थी। गुरूअ वटि डोड़ियो। गुरूअ खेसि भाकुर पातो ऐं खेसि आश्रम में रखियो। खेसि अजबु लगो त

ड॒ह ड॒ींहं अगु गुरूअ मूंखे लोधे कढियो ऐं अजु वापस रखियो अथाईं इएं छो? तंहिंते गुरूअं समझायुस त पहिरियाईं तोखे धन जो मोहु हो। जेको कुझु तो कमायो जेको कुझु तो गड॒ कयो हो उहो ई तुंहिंजे दुख जो कारणु हो ऐं तोखे मन में शान्ति कान हुई। पोइ अमृत मंथन थियो-सभु कुझु दान करे छड॒ियुइ त उन मां ज़हिरु निकितो, अहंकार रूपी ज़हिरु। आश्रम में आएं त तोमें अहंकार हो त गुरुजीअ जे चवण ते मूं सभु कुझु लुटाए छड॒ियो आहे त मां केड॒ो न वड॒ो शिषु आहियां। गुरूजीअ संदसि अहम ड॒िसी वरितो इनकरे खेसि भज॒ाए कढियाईं हू झंगल में वियो। उते हू कंहिं जे अग॒ियां पंहिंजो अभिमान ड॒ेखारे ? गुरूअ जी हिक ई भावना हुई त हू रूहानी उन्नति करे।

<u>**गुरूअ वटि वञो त हिक ई चीज़ आत्मिक उन्नति घुरो। मुंहिंजे अन्दर अहंकार-मां न रहे अहिड़ी आशीर्वाद घुरो। अहंकार में अची असीं केतिरा ई खोटा कर्म करियूं था।**</u>

- तपु, साधना, ध्यान, निष्काम शेवा इहे सभु तव्हां जे कर्मन खे साड़े छड॒ीन था। जड॒हिं तव्हां इहे कर्यो था तड॒हिं गुरूअ जी कृपा पूरन तरह तव्हां जे जीवन में वर्से थी। संसार में छा लाइ ब॒ियन खे ड॒िसो था? फ़लाणो हीअं थो करे हूअं थो करे जेकड॒हिं ईअं कंदा, ब॒ियन खे ड॒िसंदा त संदन कर्म तव्हां में घुसी वेंदा, ऐं उहे शक्तिशाली संचित कर्म थी वेंदा। उन्हन खे कढण लाइ प्रारब्ध भोगु भोग॒णो पवंदो, उहे प्रारब्ध थी ई निकरंदा, यानी ब॒ियन जा कर्म तव्हां खे भोग॒णा पवंदा, त पोइ ब॒ियन खे ड॒िसण जी तव्हां खे कहिड़ी ज़रूरत आहे? लखें जनमन खां तव्हां इहो ई कयो आहे। तव्हीं ई पंहिंजा दुश्मन आहियो।

तव्हां खे ख़बर आहे त बांदर खे कहिड़े नमूने पकड़ियो वेंदो आहे? उन खे फासाइण लाइ हिक मट में गुड़ ऐं भुग॒ड़ा विझंदा आहिन। मट जो मुंहुं सोढ़ो हूंदो आहे। बांदरु अंदर हथु विझी गुड़ ऐं भुग॒ड़न जी मुठि भरींदो आहे ऐं दिल में ख़ुश थींदो आहे त मुंहिंजीअ मुठि में गुड़ भुग़ड़ा अची विया ऐं हू उन मुठि सांई हथु ब॒ाहिर कढण जी कोशिश कंदो आहे। अड़े मूर्ख! मुठि ख़ाली करि त हथु ब॒ाहिर निकरे। पर न हू मुठि खोलण लाइ

तैयार कोन्हे। अहिड़ीअ ई रीत गुरू चवे थो त हे अज्ञानी! अहंकार छडि॒, लड़ाई छडि॒, मां मां छडि॒, मोहु छडि॒, लालच छडि॒ त हू चवे थो न, कीन छड॒ींदुस।

हिक वार्ता आहे। हिक दफ़े नसुरुदीन मियां बज़ार में वियो। उते ग॒ाढ़न मिर्चन जूं ढिगु॒ल्यूं पिए विकाम्यूं। माण्हुन उहे ख़रीद पिए कयूं। हुन उन खां अगु॒ कड॒हिं ग॒ाढ़ा मिर्च कोन डि॒ठा हुआ। ग॒ाढ़ा मिर्च डि॒सी हुन खे लग॒ो त हीअ त का सुठी चीज़ थी लगे॒। सभेई पिया ख़रीद कनि, मां बि थो ख़रीद करियां। हुन हिक ढिगु॒ली वर्ती। पोइ हिक वण हेठां आराम सां पंहिंजी शाल विछाए वेठो। पहिरियों मिर्चु वात में विधाईं त ड॒ाढो तिखो लगु॒स। अखियुन मां पाणी वहण लगु॒स, पोइ ब॒ियों, टियों इएं खाईंदो वञे ऐं रोअंदो वञे। आसपास जे माण्हुन इहो डि॒सी चयुस मिर्च इएं थोरोई खाइबा आहिन, ड॒ाढा तिखा लग॒ंदा आहिन। तंहिं ते मियां चयो त इहा त मूंखे पहिरियों मिर्चु खाइण सां ई ख़बर पइजी वेई हुई। माण्हुन चयुस त ब॒िया छो पियो खाईं? त चवण लग॒ो त मिर्चन जा पैसा कीन भरिया अथम छा ? खाइणा ई पवंदा न ? अहिड़ो ई हालु असांजो संसार में थिए थो। मिर्च खाईंदा रहूं था, रोअंदा रहूं था।

- कोई चवे थो त लेखु मिटी नथो सघे त ब॒ियो चवे थो त लिखिया लेख पिण बदलजी सघन था। उहो कीअं ? हिकु ब॒ियो मिसालु अर्सीं डि॒सूं।

  हिकु हारी मंदिर में वञे थो। उते कथा हले थी। पंडित सभनी खे समझाए थो त जेको थियणो आहे, उहो अवस थी रहे थो। हिक हिक पल जो लेखो लिखियलु हूंदो आहे। उहो हारी पंडित वटि वञी चवे थो इएं थोरो ई थींदो आहे ? जेका मुंहिंजी मर्ज़ी हूंदी उहो ई थींदो। पंडित चयुस लिखियलु न हूंदो त न ई थींदो। तुंहिंजे लेख में लिखियलु आहे त तोखे हींअर घर वञिणो आहे ऐं रोटी खाइणी आहे, उन में केरु बि तोखे रोके कोन सघंदो। हारीअ सोचियो त चङो भला अजु इन ग॒ाल्हि जी परख पइजी वेंदी। रोटी खाइणु न खाइणु त मुंहिंजे हथ में आहे। घर वेंदुस त पत्नी ज़रूर रोटी खाराईंदी तंहिंकरे मुरग॒ो घर ई नथो वञा। इहो सोचे थोरो परियां वणन बूटन विच में वञी लिकी वेठो। एतिरे में ५-६ मुसाफ़ि

आया। वण हेठां चादर बिछाए रोटी पाइण वेठा। अञा रोटी पाताऊं मस त शीहं जी गजकार बुधाऊं त घब्राइजी रोटी उते ही छड़े वठी भगा। रोटी उते ई पेई हुई। हारीअ खे उन जी सुगंध अचण लगी। हुन खे लगो त ज़रूर इन में उन पंडितजी चाल हूंदी त जीअं मां उहो खाधो खावां पर मां इहो खाधो मूर न खावां। थोरे वक्त खां पोइ उन ई जगह ते चोर आया। खाधो पातलु डिसी ख़ुश थी विया त वाह ही त असां जे लाइ रोटी तैयार ई पेई आहे, अचो त रोटी खाई ढउ करियूं। एतिरे में हिक चोर खे वीचार आयो त लगो थो त असां खे पकड़ण लाइ कंहिं खाधे में ज़हिर मिलायो हुजे ऐं पाण वणन में लिकी वेठो हुजे। गोल्हा कंदे खेन वणन जे विच में वेठलु इहो हारी नज़र आयो। खेसि गिहिले ब्राहिर आंदाऊं ऐं मार डेई उहा रोटी ख़ारायूंस त पहिरियाईं तूं खाउ। हारीअ खे रोटी खाइण सां कुझु न थींदे सभेई चोर पोइ रोटी खाइण लगा। हाणे हारीअ जे प्रारब्ध में रोटी खाइणु लिखियलु हो त मार खाई बि खेसि रोटी खाइणी पेई।

- यादि रखो त जडहिं तव्हां भोगयो तडहिं तव्हां जे चित जी स्थिति कहिड़ी हुअणु घुरिजे। तव्हीं सुखी थी भोगे रहिया आहियो या दुखी थी ? तव्हां जेकडहिं सात्विक स्थितिअ में हूंदा त तव्हीं शान्तिअ सां का बि हालत प्रारब्ध मूजिब भोगींदा।
- जेकडहिं जीवन में रोशिनी डिसो त उन खे पकड़ियो, जेकडहिं ऊंदहि डिसो त साधना वधायो, निष्काम शेवा करियो। जेको चवे थो त डाढी परेशानी अथम त उन परेशानीअ खे सत्संग जे अग्निअ सां जलाए छडियो। सत्संग जो अर्थु आहे त सत पुरुषन वटि वञी मन खे ठपियो।

तव्हां जेको कुझु कमायो तंहिंजो हिकु हिसो दान करण सां धन में वाधारो थींदो। बदिनी पोरिहये ज़रीए निष्काम शेवा करण सां तव्हां जा जिस्मानी दुख दूर थींदा। दुखी माण्हुन खे आथतु डियण सां तव्हां जे सुखन में इज़ाफ़ो थींदो, जेको तव्हां खे खपे थो - जेको तव्हां चाहियो था सो बियन खे डियणु शुरू करियो। हीअ हिक वडी बनी आहे। उन में तव्हां जहिड़ो बिज़ु पोखींदा तहिड़ो ई फलु मिलंदो।

- हिक गाल्हि यादि थी अचेम। हिकु मिनिस्टर हो। वटिस सुठा सुठा कुर्ता

हुआ पर हेठि पाइण जो को सुठो पायजामो कोन हुउस तंहिंकरे हुन पंहिंजन किनि ब॒ोलड़ियन मां हिक खां संदसि पायजामो पाइण लाइ वरितो। हाणे जड॒हिं हू सभा में लेक्चर ड॒ियण वियो तड॒हिं उन ब॒ोलड़िए संदसि वाक़िफ़ियत ड॒िनी। ही ड॒ाढो सुठो नेता आहे। हू हर तरह सुठो आहे वग़ैरह... वग़ैरह पर हुन जेको पायजामो पातो आहे, उहो मुंहिंजो आहे। तंहिंते नेता खे इहो ड॒ाढो ख़राब लग॒ो। हुन खेसि पाण वटि सड॒े चयुस इएं न चइबो आहे। पंहिंजी मां मां न कबी आहे। उन माण्हूअ चयो साईं ग़ल्ती थी वेई अग॒िते ध्यान ड॒ींदुस। पोइ ब॒ीअ सभा में विया त उन कार्यकर्ता अगु वांगुर संदसि ख़ूब साराह कई ऐं पछाड़ीअ में चयो त हुन जेको पायजामो पातो आहे, उहो मुंहिंजो कोन्हे। इन ते नेता वरी मथिस गुसे थी वियो त तुंहिंजी इहा मां मां अञां छो नथी वञे? हिन खां पोइ ध्यान रखिज। पोइ टीअं सभा में विया। उते बि हुन संदसि ख़ूब ख़ुशामद कई ऐं पछाड़ीअ में चयाईं त नेता जेको पायजामो पातो आहे तंहिं बाबत मूंखे काई ख़बर कान्हे।

त जेस्ताईं पायजामो आहे तेस्ताईं मां मां आहे ई। उहा फ़क़त रूप बदलाए थी। इएं ई असां जा माण्हू कनि था। चङो भाई बाबा चयो आहे मां मां न कजे। ठीक आहे हींअर मां सत्संगु ई कंदुस। त इहा मां सत्संग में बि ईंदी त मां त ड॒ाढो झूनो सत्संगी आहियां, मां ख़ूब साधना करियां थो।

- नन्ढपिण में हिक आखाणी बुधी हुअम। हिक दफ़े सिज ऐं हवा जे विच में तकरार थियो त ब॒िन्ही मां केरु वधीक शक्तिशाली आहे? सिजु चवे त मां शान्त आह्यां तंहिंकरे वधीक शक्तिशाली आहियां। त हवा चवे मूं में वधीक ज़ोरु आहे तंहिंकरे मां शक्तिशाली आहियां। हेठि हिकु माण्हू कोटु पाए वञी रहियो हो त ब॒िन्हीं इहा शर्त लग॒ाई जेको हिन माण्हूअ जो कोटु लहिराए छड॒े सो वधीक शक्तिशाली साबित थींदो। पहिरियाईं हवा जो वारो आयो। उहा ज़ोर सां लग॒ण लग॒ी त उन माण्हूअ जे कोट में हवा भरिजी वेई ऐं कोटु फड़कण लग॒ो। माण्हूअ कोट खे ज़ोर सां पकड़ियो। हवा वधीक ज़ोर सा लग॒ी त उन माण्हूअ मथे वारी पग॒ लाहे चेल्हि वटि ब॒धी छड॒ी। हवा केड॒ो बि ज़ोर सां लग॒े, ही माण्हू वधीक ज़ोर सां कोट खे

पकड़े पर लाहे मूर न । आख़िर हवा थकिजी पेई। हुन सिज खे चयो हाणे तुंहिंजो वारो। सिज शान्तिअ सां तपणु शुरू कयो। माण्हूअ चेल्हि ते ब॒धल पगु॒ छोडी। सिजु निष्चलता सां वधीक तपण लगो॒ त माण्हूअ कोट जा बटण खोले छडि॒या। सिजु अञा हेठि आयो त माण्हूअ कोटु लाहे छडि॒यो।

जेको निष्चल हूंदो आहे जीत तंहिंजी ई थींदी आहे। जेको चंचल हूंदो आहे तंहिंखे हमेशह डपु लगु॒लु हूंदो आहे। साम्हूअ वारो उन जे साम्हू झुकी त वञे थो पर केसताईं ? हुन में शक्ति आई त हू उन जो ज़ोरदार मुक़ाबलो कंदो पर निष्चल मन हूंदो त साम्हूअ वारे में वधीक शक्ति ईंदी त बि हू तव्हां जे साम्हूं झुकियल ई रहंदो। त अहिड़े ई भाव खे, अहिड़े ई प्रेम खे पंहिंजे जीवन में आणण जी कोशिश करियों जडु॒हिं जडु॒हिं 'मां' ईंदी त प्रेम घटिजी वेंदो। तव्हां खे हमेशह ब॒ियन खे प्रेम डि॒यणो आहे इहो यादि रखजो। निष्चल मन, निर्मल मन, शुद्ध भावना।

- गुरूअ वटि घुरो त एतिरो घुरो त मूं लाइ जेको वाजिब हुजे उहो ई डि॒यो। समर्पण भाव सां प्रार्थना करियो त हे गुरुदेव मूं लाइ जेको सुठो हुजे उहो ई डि॒यो ऐं ठीक न हुजे उहो वठी छडि॒यो। इहो तव्हां तडु॒हिं ई घुरी सघंदा जडु॒हिं तव्हां में अहंकार न हूंदो।
- जेको तव्हां खे पेरे पवे थो उन खे बि इहा ख़बर न हूंदी त हू पंहिंजा संचित कर्म तव्हां जे पेरन में छडे॒ वञे थो। अगर तव्हां में एतिरी शक्ति हुजे जो तव्हां उन्हन खे पचाए सघो, उन जा कर्म जलाए सघो त भले तव्हां खेसि पेरे पवणु डि॒यो न त त तव्हां जां पंहिंजा ई कर्म ऐडा॒ त भारी आहिन जो तव्हीं ब॒ियन जे कर्मन जो बोजु कीअं खणी सघंदा ? माण्हू जेतिरो झुके थो ओतिरो ई ऊंचो अचे थो जेतिरो सीट रखे थो ओतिरो ई हेठि किरे थो। अल्बत भाव जो फ़रकु आहे। जडु॒हिं नंढो छोकरो कंहिं वडे॒ अगि॒यां झुके थो, पेरे पवे थो तडु॒हिं वडो॒ ख़ेसि आशीर्वाद डीं॒दो आहे, उहो भाव अलगु॒ आहे। जडु॒हिं कंहिं अध्यात्मक माण्हूअ अगि॒यां माण्हू पंहिंजो सीसु निवाए थो तडु॒हिं उहो भाव अलगु॒ आहे। हू चवे थो त मुंहिंजी पीड़ा दूर करियो, मुंहिंजा कर्म काटियो, मुंहिंजा दुख दफ़ा करियो। इहो भाव

अलगु आहे, प्रक्रिया बदिल्जी वेई।

- कर्म संचित न करियो ऐं शेवा करियो त निष्काम शेवा करियो इएं न त ही मूंखां सवाइ कोई न करे सघंदो। शेवा त हरको करे सघंदो आहे। इहा त शिव जी मर्ज़ी आहे जो तव्हां खे निमित बणायो अथाईं, तव्हां जे हथां शेवा कराए थो। जेकड॒हिं तव्हां जे हथां शेवा कराए थो त पाण खे ख़ुशनसीब समझो। उन जो कमु कड॒हिं रुकबो कीन। तव्हां जा त भागु खुल्या जो शिव तव्हां खे निमित बणायो आहे, तव्हां जे हथां शेवा कराए थो ऐं तव्हीं जंहिंजी शेवा करियो था, तंहिंजा अहिसान मञो त तव्हां जा शुकराना जो तव्हां मूंखे शेवा करण जो मोक़ो डि॒नो ऐं मुंहिंजा संचित कर्म कटिया। जड॒हिं कंहिं फ़क़ीर खे रोटी डि॒यो तड॒हिं संदसि पेरन डां॒हुं निहारे मन ई मन में उन जो अहिसान मञो त अदा, तुंहिंजा लख थोरा जो तो मूंखे ही शेवा जो मोक़ो डि॒नो न त मां कंहिंजी शेवा करियां हा ऐं पंहिंजन कर्मन खे साड़ियां हा ? मां तुंहिंजो थोराइतो आहियां जो तो मूंखे मोक़ो डि॒नो । तूं मुंहिंजी महरबानी न मञिजांइ। मतलब त कड॒हिं बि शेवा ते अहंकार न करियो। निष्काम भाव सां कयल शेवा तव्हां जे कर्मन खे काटे थी।
- क़ुदिरत जो क़ाइदो आहे त तव्हीं बि॒ए खे जेको कुझु डि॒यो था सो हज़ारूणो थी वापस अचे थो। कड॒हिं बि कंहिंजा पैसा न फबा॒यो। कंहिं जा क़र्जदार न बणिजो। कंहिं खां तव्हां कुझु वरितो हुजे ते खेसि सडे॒, हथ जोड़े वापस करियो छाकाण त जेकड॒हिं न मोटाईंदा त उहो प्रारब्ध भोगु बणिजी हज़ारुणो थी वेंदो। अमृतमंथन में ज़हिर खां पोइ धन दौलत निकरे थी जंहिंकरे तव्हां खे लालसा थिए थी। पर खोटन पैसन खे हथु न लगा॒इजो न त हज़ारूणो भरणो पवंदुव। कंहिं खां नफ़रत कंदा, कंहिंखे गारियूं डीं॒दा त हज़ारूणो प्रारब्ध भोगु भोगीं॒दा। प्रेम डीं॒दा त हज़ारूणो प्रेम पाईंदा।
- हिकु वडो॒ महल आहे। उन में १०० कमरा आहिन। उन महल में घिड़ण सां हरकंहिं कमरे जे ख़ूबियुन खे डि॒सी तव्हां ख़ुश थियो था। पर जेकड॒हिं उन महल जे मालिक खे अहिड़ी आदत पइजी वञे त जड॒हिं बा॒हिरां अचे

त कचिरे जी थेल्ही भरे अचे ऐं अची रुम में ओते। वरी ब्राहिर वञे, कचिरो ग्रोल्हे (जेको सवलाईअ सां मिली वेंदो आहे) खणी अची कमरे में विझे। इएं कंदे ९६ कमरा अहिड़े कचिरे सां भरे छड्डे। ३-४ कमरा ई ख़ाली बचन त उहो पंहिंजे ई महल खे सुञाणे कोन सघंदो। तव्हां जो सरीरु बि अहिड़े महल वांगुर आहे जंहिं में १०० कमरन जी ताक़त आहे? पर तव्हां खोटन कर्मन रूपी कचिरो भरे पाण खे सुञाणण जहिड़ो बि न बणायो आहे। ज्ञाणी वाणी अंदर में गंदु भरे मनुष देहीअ खे ग़लीज़ पिया बणायो। गंद खां किनारो करियो त आत्मिक आनंद जी अनुभूति थींदव।

•••

- आज के युग में दो ही विकल्प है - या तो एडजस्ट होना सीख लो या फिर आत्महत्या के लिए तैयार रहो। तीसरा कोई विकल्प नहीं है । सामने वाला डिसएडजस्ट होता रहे और हमें एडजस्ट होना आता है तो हमें कोई दुःखी नहीं कर सकता। दुनिया तुम्हारे हिसाब से नहीं चलेगी। तुम्हें ही दुनिया के साथ कदम से कमद मिलाकर चलना होगा। अगर यह कला तुमने सीख ली तो समझो दुनिया तुम्हारी मुठ्ठी में।
- जीना एक कला है। हँसते हुए जीना इससे भी बड़ी कला है। हँसाते हुए जीना और भी बड़ी कला है। पर हँसते हुए मरना सबसे बड़ी कला है। जब तुम पैदा हुए तो दुनिया हँस रही थी और तुम रो रहे थे। अब कुछ ऐसा करो कि जब तुम मरो तब दुनिया रोए और तुम हँसो।

WISDOM OF LIFE

"D" (डी)

DANCE (नृत्य)

(i) Dance is the poetry of the foot. (John Dryden)

नृत्य पाँव की कविता है ।

(ii) Dance is the child of music and love. (Sir John David)

नृत्य, संगीत एवं प्रेम का बालक है ।

DANGER (खतरा)

(i) Never was anything great achieved without danger. (Niccolo Mechiaveli

खतरा उठाए बिना कोई उबलब्धि कभी प्राप्त नहीं हुई ।

(ii) A timid person is frightened before a danger, a coward durin the time and a courageous person afterwards. (Jean Paul Richter

डरपोक व्यक्ति खतरे के पहले, कायर खतरे के मध्य और साहसी खतरे के बा भयभीत होता है ।

DAY (दिन)-

(i) Every day is a little life and our whole life is but a day. (Joseph Hal

प्रत्येक दिन एक छोटा सा जीवन है और हमारा सम्पूर्ण जीवन मात्र एक दि है ।

(ii) Every day should be passed as if it were to be the our last. (Publilius Syru

प्रत्येक दिन इस प्रकार व्यतीत किया जाना चाहिए, मानो यह हमारे जीवन अन्तिम दिन है ।

DARE (खतरे का सामना करना, हिम्मत करना)

(i) No one reaching a high position without daring. (Publilius Syru

बिना खतरे का सामना किए कोई भी उच्च पद को प्राप्त नहीं कर सका है

DARKNESS (अंधकार)

Nights darkness is bag that bursts with the gold of the dawn. (Rabindra Nath Tago

रात्रि के अंधकार का थैला प्रातः के स्वर्ण के साथ फटता है ।

DEAD (मृत)

(i) Of the dead speak nothing but good. (Poverb-Nil Lisibonum)

मृत के विषय में अच्छाई के अलावा कुछ मत कहो ।

(ii) One owes respect to the living, to the dead one owes only the birth. (F. M. Valtaire)

जीवित के प्रति हमारे ऊपर सम्मान का ऋण रहता है और मृत के प्रति शुद्ध सत्य का ।

DEATH (मृत्यु)

(i) The goal of life is death. (Sigmund Freud)

जीवन का लक्ष्य मृत्यु है ।

(ii) First our pleasures die and then
Our hopes and then our tears and when
These are dead, the debt is due,
Dust claims dust and we die too. (P. B. Shelley)

सर्वप्रथम हमारे आमोद-प्रमोद मरते हैं - और तब
हमारी आशाएं और तब हमारे भय - और जब
ये मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं, तव वाजिब ऋण,
मिट्टी मिट्टी मांग लेती है - और हम भी मृत्यु को प्राप्त हो जाते है ।

(iii) The door of death are always open. (Jeremy Taylor)

मृत्यु के द्वार सदैव खुले रहते हैं ।

(iv) Men fear death as children fear to go in the dark. (Francis Bacon)

मनुष्य उसी प्रकार मृत्यु से डरते हैं जिस प्रकार बच्चे अंधकार में जाते हुए डरते हैं ।

(v) Whom the gods love die young. (Menander)

जिनको देवता प्यार करते हैं, वे युवावस्था में मृत्य को प्राप्त हो जाते हैं ।

(vi) Death is the crown of life were death denied, poor man would live in vain, to live would not be life, even fools would be wise to die. (Edward Young)

मृत्यु जीवन का मुकुट है, यदि मृत्यु न होती, तो निर्धन व्यक्ति व्यर्थ ही जीवित रहता, मूर्ख भी मृत्यु को प्राप्त होने की बुद्धिमानी करना पसंद करेंगे ।

(vii) By medicine life may be prolonged, yet death will seize the doctor too. (Anonynous)

दवा द्वारा जिन्दगी को भले ही कुछ अधिक समय तक बढ़ा लिया जाए, परन्तु मृत्यु चिकित्सक को भी अपने पाश में बाँध लेती है ।

पूछा लुकमां से जिया तू कितने दिन ?
दस्ते हसरत मल के बोला चन्दरोज़ ।। (अकबर इलाहाबादी)

(viii) Death is a undiscovered country whose bourn no traveller returns. (Anonymous)

मृत्य वह अज्ञात प्रदेश है, जहाँ गया हुआ कोई यात्री वापस नहीं आता है ।

DEBT (ऋण)

(i) Debt is the slavery of the free. (Publilius Syrus)

कर्ज आजाद व्यक्ति की गुलामी का हेतु है ।

(ii) The second vice is by lying, the first is running into debt. (Benjamin Franklin)

झूठ बोलने की बुराई का स्थान दूसरा है, नम्बर एक बुराई है ऋण-ग्रस्त (कर्जदार) होना ।

(iii) Debt is the worst poverty. (M. G. Lichtwer)

ऋण सबसे अधिक प्रकार की गरीबी है ।

(iv) There can be no freedom or beauty about a home life that depends on borrowing and debt. (Henrik Ibsen)

उस पारिवारिक जीवन में स्वतन्त्रता और सुन्दरता हो ही नहीं सकती, जो उधार और कर्ज पर निर्भर रहता है ।

(v) Do not accustom yourself to consider debt only as an inconvenience, you will find it a calamity. (Samuel Johnson)

ऋण के अभ्यस्त यह सोचकर मत बनो कि यह केवल एक असुविधा है, तुम इसको विपत्ति स्यरुप पाओगे ।

(vi) Debts shorten life.

कर्ज जिन्दगी को कम कर देते है ।

DECEIVING / DECEPTION (धोखा, छल)

(i) The easiest thing of all is to deceive one's self's for what a man wishes he generally believes to be true. (Demosthenes)

सबसे आसान चीज है अपने को धोखा देना, क्योंकि मनुष्य जो चाहता है, उसको सत्य समझता है ।

(ii) You can fool some of the people all the time, and all of the

people some of the time, but you can not fool all of the people all the time. (Abraham Lincoln)

तुम कुछ लोगों को सदैव मूर्ख बना सकते हो, सब लोगों को कुछ समय मूर्ख बना सकते हो, परन्तु सब लोगों सो सब समय मूर्ख नहीं बना सकते हो ।

(iii) There are three persons you should never deceive, your physician, your confessor and your lawyer. (Hugh Walpole)

तीन ऐसे व्यक्ति जिनको तुम्हें कभी धोखा नहीं देना चाहिए - (i) अपने चिकित्सक (ii) जो तुमको अपना स्वीकार करे और (iii) अपना वकील.

DECISION (निर्णय)

When possible make the decision now, even if action is in the future, A reviewed decision is better than one reached at the last moment. (William B. Given J. R.)

यदि सम्भव हो, तो निर्णय अभी कर लो, भले ही कार्य भविष्य में करना हो। अन्तिम क्षण पर किए गए निर्णय की अपेक्षा पुनर्विचारित निर्णय अधिक अच्छा होता है ।

DEED (S) (कर्म, गतिविधि)

(i) Noble deeds that are concealed are most esteemed.
(Niccolo Machiavelli)

जिन श्रेष्ठ कार्यो को छिपाने का प्रयत्न किया जाता है, वे सर्वाधिक सम्मान के पात्र होते है ।

(ii) How far that little candle throws its beams so shines a good deed in a naughty world. (W. Shokespeare)

छोटी सी मोमबती अपनी किरणें कितनी दूर तक फेंकती है, इसी प्रकार शरारत भरी इस दुनिया में एक अच्छा कार्य चमकता रहता है ।

DEFEAT (पराजय)

There are some defeats more triumphant than victories.
(Michel De Montaigne)

कुछ पराजय ऐसी होती है जो विजय से अधिक शानदार विजय होती है ।

DEFECTS (दोष)

There are people whose defects become them and are all served by their good qualities. (Rochefoucauld)

कुछ व्यक्ति ऐसे होतो है जिनके दोष उन्हें शोभा देते हैं, उनके दोष गुण बन

जाते हैं ।

DEFENCE (सुरक्षा, बचाव)

The only defence against the world is a thorough knowledge of i
(John Lock

दुनिया से सुरक्षा का एक ही उपाय है - उसके बारे में पूरी जानकारी होना

DELAY (विलम्ब)

(i) Delay of justice is injustice. (W. S. Lando

न्याय में विलम्ब अन्याय है ।

(ii) In delay we waste our lights in vain like lamps by day.
(W. Shakespear

विलम्ब करके दिन में जलने वाले दीपकों की भांति हम अपना प्रकाश व्य
व्यय करते है ।

(iii) A good thing perpetually postponed is only a negative.
(John Russe

किसी अच्छी बात को सदा टालते रहना उसको अस्वीकार करना है ।

DELIGHT (हर्ष)

Violent delights have violent ends. (W. Shakespea

हिंसात्मक सुखों का अन्त हिंसात्मक होता है ।

DELUSION (भ्रांति, बहकावा)

No man is happy without a delusion of some kind, delusions are necessary to our happiness as realities. (Bon

किसी न किसी प्रकार की भ्राँति के बिना कोई भी व्यक्ति प्रसन्न नहीं रहता हमारी प्रसन्नता में भ्राँतियाँ उतनी ही आवश्यक है जितनी वास्विकताएं ।

DEMOCRACY (लोकतंत्र)

(i) The governmet of the poeple, by the people, for the people.
(Abraham Linco

लोकतंत्र जनता का, जनता द्वारा, जनता के लिए शासन है ।

(ii) Democracy demands discipline, tolerance and mutual rega
(Jawahar LaL Neh

लोकतंत्र की माँग है - अनुशासन, सहिष्णुता और पारस्परिक आदरभाव

(iii) Democracy means not I am as good as you are, but "you are good as I am." (Theodore Par

लोकतंत्र का अर्थ यह नहीं है कि "मैं उतना ही अच्छा हूँ जितने तुम" बल्कि यह अर्थ होता है, "तुम उतने ही अच्छे हो जितना में।"

(iv) Democracy without education is hypocrisy without limitation. (Ibid)

शिक्षा रहित लोकतन्त्र सीमाहीन धूर्तता है।

(v) Democracy is based upon the conviction that there are extra ordinary possibilities in ordinary people. (H. E. Fosdick)

लोकतंत्र इस दृढ़ विश्वास पर आधारित होता है कि सामान्यजन में असामान्य सम्भवनाएं निहित हैं।

(vi) In democracy governments are strong, when public opinion is definite and decided. (Walter Begehot)

लोकतंत्र में सरकार तब मजबूत होती है जब जनता का मत निश्चित एवं निर्णयात्मक होता है।

DEPENDENCE (निर्भरता)

He who imagines that he can do without the world deceives himself much; but he who fancies the world cannot do without him is still more mistaken. (Rochefoucauld)

जो यह कल्पना करता है कि मैं दुनिया के बिना अपना काम चला सकता हूँ, वह अपने को बहुत बड़ा धोखा देता है, परन्तु जो यह सोचता है कि दुनिया उसके बिना नहीं चल सकती है, वह इससे भी बड़ी भूल करता है।

DESIGN (रूपरेखा, योजना)

Many things difficult to design prove easy to performance. (Somuel Johnson)

अनेक काम जिनकी रूपरेखा बनाना कठिन होता है, कार्य आसानी से कार्यन्वित हो जाते हैं।

DESIRE (S) (वासना (ऐं)

(i) In moderating, not in satisfying desires, lies, peace. (Heber)

वासनाओं की संतुष्टि में नहीं, बल्कि उनको मर्यादा में रखने से शान्ति मिलती है।

(ii) There are two tragedies in life - one is not to get your hearth's desire. The other is to get it. (Barnard Shaw)

जीवन की दो दुखांत घटनाएं है - एक तो मन की वासना की पूर्ति न होना,

दूसरी इसकी पूर्ति हो जाना ।

DESPAIR (निराशा)

(i) Never despair, But, it you do, work, and despair. (Edmund Burke)

कभी निराश मत हो, परन्तु यदि हो ही जाओ, तो इसी के बारे में काम करो

(ii) Despair is the conclusion of fools. (Benjamin Disraeli)

निराशा मूर्खों का निष्कर्ष है ।

DESTINY (नियति, भाग्य)

(i) A consistent man believes in destiny, a capricious man in chance.

(Benjamin Disraeli)

एक नियमित व्यक्ति भाग्य में विश्वास करता है और अनियमित या सनकी व्यक्ति संयोग में ।

(ii) Thoughts lead on to purposes; go faith to action, actions from habits, habits decide purpose, character; and character fixes our destiny.

(lead Beater

विचार उद्देश्यों की ओर ले जाते हैं और अगे बढ़ कर कार्य बनते हैं, कार्य (कर्म) आदतों का निर्माण करते हैं, आदतें जीवन के लक्ष्य अथवा चरित्र का निर्माण करती है और चरित्र हमारे भाग्य को स्थापित कर देता है ।

DESTRUCTION (विनाश)

Where there is love, there is life; hatred leads to destruction.

(M. K. Gandhi - Mahatma

जहाँ प्रेम है वहाँ जीवन है, घृणा विनाश का हेतु बनती है ।

DETERMINATION (दृढ़ निश्चय)

Do or Die is determination. (George Compbell

करो या मरो (यह दृढ़ निश्चय है)

DEVIL (शैतान)

The devil is a roaring lion, who walketh about seeking whom he may be devour. (I. Peter

पिशाच एक ऐसा गरजता हुआ शेर होता है जो यह खोजता हुआ घूमता है कि किसे खा जाऊँ, चट कर जाऊँ ।

(ii) Talk of the devil and he ill appear. (Desiderius Erasmes

शैतान के बारे में बात करो और वह प्रकट हो जाएगा ।

DEVOTION (प्रगाढ़ प्रेम, भक्ति)

All is holy where devotion kneels. (O. W. Holmes)

जहाँ भक्त या प्रेमी घुटनों के बल झुकता है, वहाँ सब कुछ पवित्र होता है ।

DICTATOR (SHIP) (तानाशाह, तानाशाही)

(i) Every dictator is an enemy of freedom, an opponent of law. (Demosthenes)

प्रत्येक तानाशाह स्वतन्त्रता का शत्रु एवं कानून का विरोधी होता है ।

(ii) Dictatorship is power, based directly upon force, and unrestricted by laws. (V. R. Lenin)

तानाशाही वह शक्ति है जो शक्ति पर आधारित होती है और कानूनों द्वारा प्रतिबन्धित नहीं होती है ।

DICTIONARY (शब्दकोश)

The responsibility of a dictionary is to record the language not set its style. (Philip Gove)

शब्दकोश का उत्तरदायित्व भाषा का लेखा रखना है, न कि उसके प्रयोग की पद्धति का निर्धारण ।

DIET (आहार, खुराक)

The most effective diet consists of four words - "No more, thank you." (Kate Smith)

विश्व में सर्वाधिक गुणकारी आहार केवल चार शब्दों द्वारा बनता है, "अब नहीं, आपको धन्यवाद।"

DIFFICULT (कठिन)

Do what is easy if it were difficulty and what is difficult as if it were easy. (Baltasar Gracian)

जिसको आसान समझते हो, उसको कठिन समझकर करो, जिसको कठिन समझते हो, उसको आसान समझकर करो ।

DIFFICULTY (कठिनाई)

I sometimes suspect that half our difficulties are imaginary and if we kept about them they would disappear. (Robert Lynd)

मैं कभी-कभी यह संदेह करने लगता हूँ कि आधी कठिनाइयाँ काल्पनिक होती हैं, और यदि हम उनके बारे में चुप रहें, तो वे विलीन हो जाएंगी ।

DIGESTION (पाचनक्रिया, हाजमा)

(i) Digestion is the great secret of life. (Sydney Smith)

पाचनक्रिया जीवन का महत्वपूर्ण रहस्य है ।

(ii) Happiness for me is largely a matter of digestion. (Lin Yutang)

पाचन शक्ति मेरे लिए अधिकांशतः प्रसन्नता का एक मामला (हेतु) है।

DIGNITY (प्रतिष्ठा)

Dignity consists not in possessing honours, but in the consciousness that we deserve them. (Aristotle)

प्रतिष्ठा सम्मानों को प्राप्त करने में नहीं है, बल्कि इस चेतना में हैं कि हम उसके योग्य हैं ।

DILIGENCE (परिश्रम, उधम)

A close mouth catches no flies. (Italian Proverb)

बन्द मुँह मक्खियाँ नहीं पकड़ता है ।

DINNER (रात का भोजन, दावत)

A dinner lubricates business. (Stowell)

रात के भोजन की दावत काम को सरल बनाने में चिकनाई का काम करता है।

DIPLOMACY (कूटनीति)

(i) A diplomat is a person who can tell you to go to hell in such a way that you actually look forward to the tip. (Caskie Stinnett)

ए कूटनीतिज्ञ वह व्यक्ति है जो आपसे नरक में जाने के लिए इस प्रकार कह सके कि आप सचमुच उसके संकेत के अनुसार तैयार होने लगें ।

(ii) Diplomacy is the art of fishing tranquility in troubled waters. (J.C. Herold)

अशान्त पानी में शान्तिरूपी मछली को खोजने की कला का काम कूटनीति है अथवा गड़बड़ी का लाभ उठाना कूटनीति है ।

DISADVANTAGE

We fight to great disadvantage when we fight with those, who have nothing to lose. (Francesco Guicciardini)

जिनके पास खोने के लिए कुछ नहीं है, उनसे लड़कर हम अपनी हानि करते हैं ।

DISAPPOINTMENT (निराशा)

Blessed is he who expects nothing for he shall never be disappointed. (Alexander Pope)

वे लोग भाग्यशाली हैं जो किसी वस्तु की आशा नहींकरते हैं, क्योंकि वे निराश नहीं होगें ।

DISBELIEF (अविश्वास)

(i) In th affairs of the world, men are saved not by faith, but by the want of it. (Benjamin Franklin)

दुनिया के झगड़ों में आदमी की रक्षा विश्वास के कारण नहीं, बल्कि उसकी कमी के कारण होती है ।

DISCIPLINE (अनुशासन)

(i) Discipline is learnt in the school of adversity.

(M.K. Gandhi....Mahatme)

दुर्भाग्य/दुर्दिन के विद्यालय में अनुशासन की शिक्षा प्राप्त की जाती है ।

(ii) Ther's not to make reply
Ther's not to reason why
Ther's but to do and die. (Lord Tennyson)

उनका कर्तव्य उत्तर देना नहीं, उनका कर्तव्य तर्क करके 'क्यों' पूछना नहीं, उनका कर्तव्य केवल (आज्ञानुसार) कार्य करना और मर जाना है।

(iii) Disregard of the law of discipline and restraint is suicide.

(M.K. Gandhi....Mahatma)

अनुशासन एवं संयम के नियम की उपेक्षा करना आत्महत्या करना है ।

(iv) Discipline is the refining fire by which talent becomes ability.

(Roy L. Smith)

अनुसासन शुद्धिकरण की वह अग्नि है, जिसमें निपुणता योग्यता बन जाती है ।

(v) Ignorance and absence of discipline is the cause of man's troubles. (Kautilya)

अनुशासन का ज्ञानभाव तथा उसका अभाव मनुष्य की मुसीबतों का कारण होता है ।

DISCONTENT (असंतोष)

(i) Discontent is the result of distnist in yourself. It is weak will manifest. (Emerson)

असंतोष अपने ऊपर अविश्वास का फ़ल है, यह दुर्बल इच्छा का अभिव्यक्त रूप है।

(ii) Happy thou art not, for what thou
Hast not, still thou strivest to get,
And what thou hast forgetest. **(Anonymous)**

तुम सुखी नहीं हो, क्योंकि जो अप्राप्त है, उसके पीछे भागते हो, जो प्राप्त है उसको भुलते हो, अस्वीकार करते हो ।

DISCRETION (बुद्धिमानी, स्वविवेक)

(i) Think what you like, say what you ought. **(French Proverb)**

जो अच्छा लगे, वह सोचो, कहो वह जो कहना चाहिए ।

(ii) The better part of valour is discretion. **(W. Shakespeare)**

बुद्धिमता वीरता की अपेक्षा अधिक श्रेष्ठ है ।

(iii) No discretion is so rare as to know when to be indiscreet.
(Jacino de Harrera)

कब बुद्धिमता से काम न लिया जाए इससे अधिक कठिन कोई बुद्धिमता नहीं है।

DISEASE (रोग)

(i) Meet the disease as its first appearance. **(Edward Perronet)**

प्रथम लक्षण प्रकट होने पर रोग का उपचार कीजिए ।

(ii) Disease is an experience of so-called martal mind, it is fear manifest on the body. **(Ibid)**

रोग तथाकथित मरणशील मस्तिक का अनुभव है, यह शरीर पर भय का अभिव्यक्त रूप है ।

DISGRACE (अपमान, बदनामी)

(i) We should prefer death to disgrace. **(M.T. Cicero)**

हमको अपमान की अपेक्षा मृत्यु का वरण करना चाहिए ।

(ii) No one can disgrace us but ourselves. **(J.G. Holland)**

हमको हमारे अलावा कोई अपमानित नहीं कर सकता है ।

DISOBEDIENCE (अवज्ञा, आज्ञा का उलंघन)

Disobedience is the silver lining in the cloud of servitude.
(Ambrose Bierce)

अवज्ञा अथवा आज्ञा का उल्लंघन दासता के बादम में प्रकाश की एक रेखा है।

DI (ES) PATCH (शीघ्रता से संदेश भेजना)

Dispatch is the soul of business. (Lord Chesterfield)

शीघ्रता से संदेश भेजना व्यापार की आत्मा (कुंजी) है ।

DISPENSABILITY (अनावश्यकता)

You never know what you can do without until you try. (Franklin Pierce Adams)

जब तक परीक्षण न करो, तब तक तुम कभी नहीं जान सकते हो कि किसके बिना काम चल सकता है ।

DISPUTE (विवाद)

A long dispute means that both parties are wrong. (Valtaire)

लम्बे विवाद का अर्थ है कि दोनों पक्ष गलती पर हैं ।

DISTANCE (दूरी)

Distance sometimes endears friendship and absence sweeten it from separation from those we love shows us, by the loss, their real value and dearness to us. (James Howell)

दूरी कभी-कभी मित्रता को प्रियता प्रदान कर देती है और अनुपस्थिति उसको मधुरता प्रदान कर देती है, क्योंकि अनुपस्थिति द्वारा हमको अपने प्रति उनके मूल्य एवं अपने प्रति प्यार का ज्ञान होता है ।

DISTRUST (अविश्वास)

(i) Doubt the man who swears his devotion. (Mme Louise Cola)

उस व्यक्ति का विश्वास मत करो जो तुम्हारे प्रति भक्ति की सौगंध खाए ।

(ii) Distrust the man who tells you to distrust. (Ella W. Wilcox)

उस व्यक्ति का विश्वास मत करो जो तुमसे किसी के प्रति अविश्वास करने को कहे ।

DIVERSIFICATION (विविधता प्रदान करना)

We ought never to fasten our ships to one small anchor, nor our life to a single hope. (Epictetus)

हमको एक छोटे लंगर में अपने जहाज कभी नहीं बाँधने चाहिए और न अपने जीवन को किसी एक आशा पर आश्रित करना चाहिए ।

DIVORCE (तलाक)

Love at first sight usually ends with divorce at first sight.

(Rab Premitt)

प्रथम दृष्टि में प्रेम का अन्त प्रायः प्रथम अवसर पर तलाक में होता है ।

DOCTOR (चिकित्सक)

(i) A doctor is nothing more than a mental conselation. (Petromius Arbiter)

मानसिक सान्त्वना अधिचिकित्सक का मूल्य नहीं होता है ।

(ii) Nature is the best doctor and laughter is the best medicine. (A proverb)

प्रकृति सर्वोत्तम चिकित्सक है और हास (हँसना) सर्वोत्तम औषधि।

(iii) Honour a physician with the honour due to him for the uses which ye may of him, for the Lord has created him. (The Bible)

चिकित्सक को उसके उन उपयोगों के प्रति उपर्युक्त आदर दो, जो तुमने प्राप्त किए हैं, क्योंकि उसका सृजन परमपिता ने किया है ।

DOG (कुत्त)

(i) A dog is the only thing on earth that loves you more than him-self. (Juah Billings)

पृथ्वी पर कुत्ता ही एक ऐसी सृष्टि है जो अपनी अपेक्षा तुमको अधिक प्यार करता है ।

(ii) The more one comes to know men, the more one comes to admire the dog. (Joussenel)

कोई व्यक्ति मनुष्यों को जितना अधिक जानता है, उतना ही अधिक वह कुत्ते की प्रशंसा करने लगता है ।

DOING (कार्यरत होना)

(i) The more we do, the more we can do, more busy we are, the more leisure we have. (William Hazlitt)

हम जितना अधिक कार्य करते हैं, उतना ही अधिक कार्य कर सकते हैं, हम जितने भी अधिक व्यस्त रहते हैं, उतना ही अधिक अवकाश हमारे पास होता है।

DOMESTIC (पारिवारिक)

Domestic happiness is the end of almost all our pursuits and the common reward of all our pains. (Henry Fielding)

पारिवारिक सुख प्रायः हमारे समस्त प्रयासों का अंत एवं हमारे समस्त कष्टों का पुरस्कार है ।

DOUBT (द्विविधा, शंका)

(i) The world's shortest sermon. "when in doubt, do n't." (M.J.)

विश्व का सबसे संक्षिप्त धार्मिक उपदेश है- "जब द्विविधा हो-मत करो।"

(ii) Doubt is the beginning, not the end of wisdom. (George Hen)

शंका ज्ञान का आरम्भ है, अंत नहीं ।

(iii) He that knows nothing, doubts nothing. (George Herbert)

जो कुछ जानता नहीं है, वह किसी के प्रति शंका/संदेह नहीं करता है।

DREAM (स्वप्न)

(i) Dreams are the children of idle brain. (Anonymous)

स्वप्न निष्क्रिय (खाली) दिमाग के बालक (उपज) हैं ।

(ii) Dreams are the true interpreters of our inclinations, but there is art required to sort and understand them. (Michel De Montaigne)

स्वप्न हमारी प्रवृत्तियों के सच्चे व्याख्याता हैं (प्रवृत्तियों का अर्थ बताने वाले हैं), परन्तु उनको छाँट कर अलग करना और उनको समझना एक कला है ।

(iii) Wise men dream at night, fools both day and night. (Melchior de santacruz)

बुद्धिमान मनुष्य रात में स्वप्न देखते हैं और मूर्ख दिन और रात दोनों में ।

(iv) Dream is the wife, who must talk, sleep is husband who silently suffers. (R.N.Tagore)

स्वप्न पत्नी है जिसको बोलना चाहिए, पति निद्रा है जिसको चुपचाप भुगतना चाहिए।

DRESS (वस्त्र/वस्त्र धारण करना)

Eat to please thyself, but dress to please others. (Benjamin Franklin)

अपनो को प्रसन्न करने के लिए भोजन करो, दूसरों को प्रसन्न करने के लिए वस्त्र धारण करो ।

DRINK (पीना, शराब पीना)

(i) There are two reasons for drinking, one is, when you are thirsty, to cure it, the other, when you are not thirsty, to prevent it. (Thomas Lone Peacock)

पानी पीने के दो कारण होते हैं, जब प्यास लगे तब उसको बुझाने के लिए, जब प्यास न लगी हो, तब उसको रोकने के लिए ।

(ii) Water is the only drink for a wise man. (Henry Thoreau)

बुद्धिमान के लिए जल एकमात्र पेय है।

(iii) Some of the most deadful mischiefs that effict mankind proceed from wine, it is the cause of diseases, quarrels, sedition, idleness, aversion to labour and every species of domestic dis order.

(Francols de Salignac de la Mothe Fenelon)

मानव जाति को हानि पहुँचाने वाली सर्वाधिक शरारतें मदिरा-पान से जन्म लेती है, यह रोगों, झगड़ों, विप्लवों, आलसी (कामचोरों,) श्रम के प्रति अरुचि तथा प्रत्येक प्रकार के पारिवारिक झंझट का हेतु है ।

(iv) When the wine is in, the wit is out. (Thomas Bacon)

जब शराब भीतर जाती है, तो बुद्धि बाहर भाग जाती है ।

(v) I wish courtesy could invent some custom of entertainment other than wise. (William Shakespeare)

मैं चाहत हूँ कि सौजन्द मदिरा के अतिरिक्त मनोरंजन एवं अतिथ्य का अन्य किसी रीति-रिवाज का आविष्कार कर सकती ।

DRUGS (दवाइयाँ)

Doctors pour drugs of which they know little, to cure diseases of which they know less, into human beings of whom they nothing.

(Valtaire)

डॉ. जो दवाइयाँ उड़लते हैं, उनके बारे में वे बहुत कम जानते हैं, जिन रोगों का इलाज करने के लिए वे ऐसा करते हैं, उनके बारे में अपेक्षाकृत कम जानकारी रखते हैं और जिन मानव शरीरों में उड़लते हैं, उनके विषय में कुछ भी नहीं जानते हैं ।

DRUNKENNES(पियक्कड़पन)

(i) Drunkenness is the ruin of reason. it is premature oldage, it is temporary death. (St. Basil)

पियक्कड़पन (शराब खोरी) बुद्धि की बर्बादी है, यह समय के पूर्व बुढापा है, यह अस्थायी मृत्यु है ।

(ii) Drunkenness is nothing but voluntary madness. (L. A. Seneca)

पियक्कड़पन स्वैच्छिक विक्षिप्तता (पागलपन) के अतिरिक्त कुछ नहीं है ।

DULLNESS (अस्पष्टता, मंद बुद्धि)

Dullness is the coming of age of seriousness. (La Rochefoucauld)

मंद बुद्धि गम्भीरता की अवस्था के आगमन की घौतिका है ।

DUST (धूल)

(i) We are dust and shadow. (Horace)

हम धूल और छाया है ।

(ii) His enemies shall lick dust. (Proverb)

उसके शत्रु धूल चाटेंगे ।

DUTY (कर्तव्य)

(i) A sense of duty is useful in work, but offensive in relations. (Bertrand Russell)

कर्तव्य भावना कर्म में उपयोगी है, परन्तु सम्बन्धों के संदर्भ में अप्रिय का हेतु होती है ।

(ii) Doing a thing from mere sense of duty is like eating when you are not hungry. (Theodore Parker)

कर्तव्य भावना मात्र के वश होकर कार्य करना बिना भूख भोजन के समान है।

(iii) I slept and dreamt, life was beauty,
I woke up and found life was duty. (Anonymous)

मैं सो गया, मैंने स्वप्न देखा कि जीवन सुन्दरता है, मैं जाग गया, मुझे पता चला कि जीवन कर्तव्य है ।

- अपने होश-हवास में कुछ ऐसे सत्कर्म जरूर कर लेना कि मृत्यु के बाद तुम्हारी आत्मा की शांति के लिए किसी और को भगवान से प्रार्थना ना करनी पड़े क्योंकि औरों के द्वारा की गई प्रार्थनाएं तुम्हारे बिल्कुल भी काम आने वाली नहीं हैं। क्या तुम्हें पता नहीं कि अपना किया हुआ और अपना दिया हुआ ही काम आता है? आज मन की भूमि पर ऐसे बीज मत बोना कि कल उनकी फसल काटते वक्त आँसू बहाने पड़ें।

- कोई अच्छा कार्य करो तो उसका श्रेय अपने पास नहीं रखना। उसका श्रेय अपने माँ-बाप को दे देना, अपने प्रभु, अपने गुरु को दे देना। श्रेय अपने पास रखोगे तो इससे अहंकार पैदा होगा। और कभी कोई काम बिगड़ जाये तो उसकी जिम्मेदारी खुद अपने ऊपर ले लेना। इससे भूल सुधार तो हो ही जायेगी, एक बड़े पाप से भी बच जाओगे। लेकिन तुम इतने बेईमान हो कुछ भी अच्छा हो तो कहते हो मेरी वजह से हुआ है। और कभी कुछ बुरा हो तो उसके लिए कभी पत्नी को, कभी बच्चों को तो कभी किसी और को जिम्मेदार ठहराते हो। यह कैसी नाइंसाफी है?
- तुम्हारे लिए कुछ भी असंभव नहीं है। तुम ऐसा क्यों सोचते हो कि मैं यह नहीं कर पाऊंगा। यह काम मेरे लिए नामुमनिक है। मैं कहता हूँ तुम्हारे लिए कुछ भी नामुमकिन नहीं है। मेरा कहना मानों तो इन नकारात्मक विचारों के ऊपर आज ही 'फुल-स्टॉप' लगा दीजिए। आज, अभी और इसी वक्त, और हर रात सोने से पहले और हर सुबह काम शुरु करने से पहले कहिये मैं कर सकता हूँ, मुझे करना चाहिए, मैं करूंगा (I can, I must, I will)। इस वाक्य को अपना आदर्श बनाइए और इस विश्वास के साथ आगे बढिए कि कुछ भी आपकी पहुँच के बाहर नहीं है।

सत्तगुरु की महिमा

पांच तत को तन रचियो,
जानहु चतुर सुजान,
जिह ते अुपजियो नानका,
लीन ताह ते मान ।

परम श्रद्धेय संत श्री बाबा जयरामदासजी यह मानते थे कि पाँच तत की (शरीर रुपी) मशीन इस संसार में कर्म करने के लिए मिली है।

वे समदरसी, शीतल हृदय, दयावंत, प्रतपाल, सदा एक रस, परोपकारी, ब्रह्मवेद, ब्रह्मरुप, परमानंद स्वरुप, सत, विद्याभंडार, निर्मल चित, दुःखहरण और त्यागवान थे । वे भूत भविष्य और वर्तमान के ज्ञाता थे। वे उठते बैठते अपने सरुप सूर्य के ध्यान में मगन रहते थे। वे सादगी की सूरत थे।

उनको किसी के आने का हरख शोक न था, ऐसे वे योगी थे। उनको शुद्ध आत्मा का ज्ञान हुआ था और संसार सृष्टि को सपना जानते थे। उनके नेत्रों में भगवान का नूर था। उनकी महिमा का कोई अंत नहीं।

वे ईश्वर से निवेदन करते थे कि हम आपके है और आप हमारे हैं। जल तरंग का रंचक मात्र भेद नहीं। सदा आपकी दया दृष्टि और कृपा को चाहतें हैं। अपने आशीर्वाद करें।

"मेरा मुझ को कुछ नहि जो कुछ तेरा
तेरा तुझको अरपीये क्या लागे मेरा । '



।।। ओम शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।।

॥ सोरठ महला ५ ॥

गुर का सबदु रख वारे । चउकी चउगिरद हमारे । राम नामि मनु लागा, जमु लजाइ करि भागा ॥१॥ प्रभुजी तू मेरो सुख दाता । बंधन काटि करे मनु निरमलु पूरन पुरखु विधाता ॥ रहाउ ॥ नानक प्रभु अबिनासी ताकी सेव न बिरथी जासी । अनन्द करिह तेरे दासा । जपि पूरन होई आसा ॥

गुरु का ज्ञान ही हम जीवों का रक्षक है, वही हमारे चारों ओर का संरक्षक है (गुरु की शरण लेनेवाले) जिस मनुष्य का मन परमात्मा में प्रवृत्त होता है, उससे यमराज भी आतंकित होकर दूर हट जाता है ॥१॥

हे प्रभु ! मेरे लिए तो तुम ही सुखों के दाता हो । (आस्थावान प्राणी को) सर्वव्यापक प्रभु बन्धनमुक्त कर उसके मन को पवित्र कर देता है ॥ रहाउ ॥ नानक का कथन है कि अविनाशी प्रभु की की गई सेवा व्यर्थ नहीं जाती ।

हे प्रभु ! तुम्हारे सेवक आत्मिक आनन्द महसूस करते है, तुम्हारा नाम स्मरण करके उनकी प्रत्येक मनोकामना पूर्ण हो जाती है ।

Year - 2010
3000 Copies
printed by : scan computers
Ph. : 2283 6776, 3024 6776, 6607 6776
9327 007 002 (deepak) 9374 417 002 (dilip)